www.deshbandhu.co.in खबरें लगातार...

राष्ट्रीय संस्करण

पत्र नहीं मित्र

देशबन्धु

नई दिल्ली, गुरुवार,17 अगस्त, 2023 | वर्ष-16 | अंक -131 | पृष्ठ - 10 | मूल्य - 3.00 रुपए

बहुसंख्यकवाद के आधार पर नहीं चलाया जा सकता... 02

- अधिकारियों ने दिल्ली जल बोर्ड का धन रोकाः भारद्वाज
- आजादी के अमृत काल में देश विकास के पथ पर अग्रसर... 03

- तोशाखाना मामले में इमरान की अपील पर 22 अगस्त... 07
- पाकिस्तान के फैसलाबाद में कई चर्चों में तोड़फोड़

53 वर्ष की हुई मनीषा कोइराला 10

सार संक्षेप

कृष्ण जन्मभूमि के पास तोड़फोड़ अभियान पर रोक

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने उत्तर प्रदेश के मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि के पास अतिक्रमण हटाने के लिए चलाए जा रहे तोड़फोड़ अभियान पर बुधवार को 10 दिनों तक यथास्थिति बनाए रखने का निर्देश के साथ ही केंद्र सरकार और रेलवे को नोटिस भी जारी किया। न्यायमूर्ति अनिरुद्ध बोस, न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति एस वी एन भट्टी की पीठ ने यह आदेश पारित किया।

नूंह हिंसा आरोपी बिट्टू बजरंगी पुलिस रिमांड पर

गुरुग्राम। हरियाणा के नूंह जिले में 31 जुलाई को सांप्रदायिक झड़पों को भड़काने के आरोप में गिरफ्तार राजकुमार उर्फ बिट्टू बजरंगी को बुधवार को एक दिन की पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया। उसे मंगलवार को गिरफ्तार किया गया था और बुधवार को नूंह में अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट (एसीजेएम) अंजलि जैन की अदालत में पेश किया गया।

मानहानि मामले में राहुल को हाईकोर्ट से राहत

रांची। मोदी सरनेम टिप्पणी से जुड़े केस में कांग्रेस नेता राहुल गांधी को झारखंड हाईकोर्ट से बड़ी राहत मिली है। जस्टिस एसके द्विवेदी की कोर्ट ने इस मामले में रांची की स्पेशल एमपी-एमएलए कोर्ट में होने वाली सुनवाई के दौरान उन्हें सशरीर उपस्थित होने से छूट दे दी है। रांची की स्पेशल एमपी-एमएलए कोर्ट ने केस में संज्ञान लेते हुए राहुल गांधी को हाजिर होने का आदेश दिया था।

जेयू रैगिंग मौत मामले में दो और पूर्व छात्र गिरफ्तार

कोलकाता। कोलकाता पुलिस ने 10 अगस्त को छात्रावास में एक नए छात्र की रहस्यमयी मौत के मामले में बुधवार को जादवपुर विश्वविद्यालय (जेयू) के दो पूर्व छात्रों को गिरफ्तार किया। इस मामले में हिरासत में लिए गए छात्रों की कुल संख्या नौ हो गई है। दोनों पूर्व छात्रों की पहचान सप्तक कामिल्या और सुमन नश्कर के रूप में की हुई है।

कोटा में फिर एक छात्र ने की आत्महत्या

जयपुर। कोटा में एक और कोचिंग छात्र ने आत्महत्या कर ली। पिछले आठ महीने में कोटा में मरने वालों की संख्या 21 हो गई है। सिर्फ अगस्त में 4 छात्रों ने जान दे दी है। करीब 10 घंटे तक वाल्मिकी प्रसाद जांगिड़ का शव नहीं मिला। 18 वर्षीय छात्र आईआईटी परीक्षा की तैयारी कर रही थी।

सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं के लिए शब्दावली की जारी

अदालतों में प्रॉस्टिट्यूट, अफेयर जैसे शब्द नहीं होंगे इस्तेमाल

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) डीवाई चंद्रचूड़ ने बुधवार को कानूनी कार्यवाही में महिलाओं के बारे में लैंगिक रूढ़िवादिता को पहचानने, समझने और उसका मुकाबला करने में न्यायाधीशों और वकीलों की सहायता के लिए एक हैंडबुक जारी की। न्यायाधीशों और वकीलों दोनों के लिए उपलब्ध कराई गई हैंडबुक में लैंगिक अनुचित शब्दों की एक शब्दावली है और वैकल्पिक शब्द या वाक्यांश सुझाए गए हैं जिनका उपयोग दलीलों, आदेशों और निर्णयों में किया जा सकता है।

वकीलों के साथ-साथ जजों के लिए भी हैंडबुक

8 मार्च को महिला दिवस पर सुप्रीम कोर्ट में हुए कार्यक्रम में चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ ने कहा था कि कानूनी मामलों में महिलाओं के लिए आपत्तिजनक शब्दों का इस्तेमाल रुकेगा, जल्द डिक्शनरी भी आएगी। हैंडबुक

- 3 महिला जजों ने बनाई शब्दावली, हैंडबुक लांच
- 8 मार्च को महिला दिवस पर की गई थी घोषणा

जारी करते हुए सीजेआई चंद्रचूड़ ने कहा कि इससे जजों और वकीलों को ये समझने में आसानी होगी कि कौन से शब्द रूढ़िवादी हैं और उनसे कैसे बचा जा सकता है। अब अदालतों में अफेयर, हाउसवाइफ, प्रॉस्टिट्यूट, ईव टीजिंग जैसे शब्दों को इस्तेमाल नहीं होगा। सीजेआई चंद्रचूड़ ने बताया कि इस हैंडबुक में आपत्तिजनक शब्दों की लिस्ट है और उसकी जगह इस्तेमाल किए जाने वाले शब्द और वाक्य बताए गए हैं। इन्हें कोर्ट में दलीलें देने, आदेश देने और उसकी कॉपी तैयार करने में प्रयोग किया जा सकता है। यह हैंडबुक वकीलों के साथ-साथ जजों के लिए भी है।

सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड किया जाएगा

इसे जल्द ही सुप्रीम कोर्ट की वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा। कानूनी शब्दावली को कलकत्ता हाईकोर्ट की जस्टिस मौसमी भट्टाचार्य की अध्यक्षता वाली समिति ने तैयार की है। इस समिति में रिटायर्ड जस्टिस प्रभा श्रीदेवन और जस्टिस गीता मित्तल और प्रोफेसर झूमा सेन शामिल थीं।

इन शब्दों को बदला गया

इस हैंडबुक में अफेयर की जगह पर शादी के इतर रिश्ता, प्रॉस्टिट्यूट/हुकर की जगह सेक्स वर्कर, अनवेड मदर (बिनब्याही मां) की जगह केवल मां, चाइल्ड प्रॉस्टिट्यूड की जगह पर तस्करी करके लाया बच्चा, बास्टर्ड की जगह ऐसा बच्चा जिसके माता-पिता ने शादी न की हो, ईव टीजिंग की जगह स्ट्रीट सेक्शुअल हैरेसमेंट, हाउसवाइफ की जगह होममेकर, मिस्ट्रेस की जगह वह महिला जिसके साथ किसी पुरुष ने विवाहेतर रोमांटिक या यौन संबंध बनाए हों, का इस्तेमाल करने को कहा गया। इसके अलावा प्रोवोकेटिव क्लोदिंग/ड्रेस (भड़काऊ कपड़े) की जगह क्लोदिंग/ड्रेस, एफेमिनेट (जनाना) की जगह जेंडर न्यूट्रल शब्दों का प्रयोग, वफादार पत्नी/अच्छी पत्नी/आज्ञाकारी पत्नी की जगह वाइफ (पत्नी), भारतीय महिला/पश्चिमी महिला की जगह महिला, कॉन्क्युबाइन/कीप की जगह ऐसी महिला जिसका शादी के इतर किसी पुरुष से शारीरिक संबंध हो, जैसे वाक्य या शब्दों का इस्तेमाल करना चाहिए।

मोदी मंत्रिमंडल ने किया फैसला

सौ शहरों में चलेंगी एक हजार इलेक्ट्रिक बसें

नई दिल्ली, 16 अगस्त (देशबन्धु)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में बुधवार को देश के सौ चुनिंदा शहरों में पीएम ई-बस योजना के तहत 1000 इलेक्ट्रिक बसों को चलाने की मंजूरी मिल गई। इसके अलावा मंत्रिमंडल ने विश्वकर्मा योजना को हरी झंडी दे दी, जिसका जिक्र प्रधानमंत्री ने 15 अगस्त को लालकिले से किया था। केंद्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री अनुराग ठाकुर ने ई-बस योजना की जानकारी देते हुए बताया कि इसके तहत 57,613 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। इसमें से 20000 करोड़ केंद्र सरकार देगी बाकी की रकम राज्यों को खर्च करनी पड़ेगी। इस योजना के तहत उन शहरों को प्राथमिकता दी जाएगी, जिनकी जनसंख्या 3 लाख या उससे ज्यादा होगी। उन्होंने कहाकि 10 हजार इलेक्ट्रिक बसें पीपीपी मॉडल के अंतर्गत चलाई जाएंगी। अनुराग ठाकुर ने कहाकि सभी पुरानी बसें स्क्रैप नीति के तहत हटाई जा रही हैं। उनकी जगह पर अतिरिक्त बसें मुहैया कराई जाएंगी। यह योजना 10 साल तक चलेगी।

- विश्वकर्मा योजना को भी मिली कैबिनेट की मंजूरी

30 लाख शिल्पकार परिवारों को मिलेगा फायदा

केंद्रीय मंत्रिमंडल ने देश के छोटे कामगारों को आर्थिक मदद देने के लिए विश्वकर्मा योजना को मंजूरी दी गई। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि इस योजना के लिए 13 हजार करोड़ की धनराशि स्वीकृत की गई है। इसके तहत शिल्पकारों को एक लाख तक के कर्ज महज 5 फीसदी ब्याज पर दिए जाएंगे। इस योजना से 30 लाख शिल्पकार परिवारों को रोजगार मिलेगा।

हिमाचल में तीसरे दिन भी बचाव अभियान जारी

शिव मंदिर हादसे में अब तक 13 शव बरामद

शिमला, 16 अगस्त (देशबन्धु)। हिमाचल प्रदेश में बारिश ने हाहाकार मचा दी है। प्रदेश भर में लैंडस्लाइड से भारी नुकसान हुआ है। बीते दिनों हुई मूसलाधार बारिश के चलते प्रदेश में बड़ी संख्या में लैंडस्लाइड के मामले सामने आए हैं। खास कर राजधानी में लैंडस्लाइड ने भारी तबाही मचाई।

शिमला में शिव मंदिर पर लैंडस्लाइड होने से कई लोग मलबे के नीचे दब गए। लाल कोठी और कृष्णा नगर में लैंडस्लाइड ने काफी नुकसान हुआ। राजधानी शिमला में समरहिल के शिव मंदिर में तीसरे दिन भी लापता लोगों को तलाशने के लिए सर्च ऑपरेशन

सेना की मशीन की ली जा रही है मदद

बुधवार सुबह से ही शुरू कर दिया गया था। बचाव अभियान में सेना की छोटी मशीन की भी मदद ली जा रही है। सर्च ऑपरेशन सुबह 7:30 बजे से जारी है। इस दर्दनाक घटना में अब तक 13 लोगों के शव निकाले गए हैं। अभी भी मलबे में लोगों के दबे होने की आशंका है। जानकारी के अनुसार मलबे में दबे लोगों की तलाश कर रहे जवानों ने अब शिव मंदिर से लेकर नीचे एक किलोमीटर तक नाले में शवों की तलाश शुरू कर दी है। इसमें कई और शव मिलने की आशंका है।

तेज बारिश का अलर्ट जारी किया

हिमाचल और उत्तराखंड में बीते 3 दिनों से बारिश जारी है। दोनों राज्यों में लैंडस्लाइड और बादल फटने से जुड़ी घटनाओं में 80 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों में यहां तेज बारिश का अलर्ट जारी किया है।

कांग्रेस ने कैग रिपोर्ट पर केंद्र पर घेरा

कैग की रिपोर्ट के खुलासों पर जवाब दें मोदी

नई दिल्ली, 16 अगस्त (देशबन्धु)। कांग्रेस ने बुधवार को कहा कि लेखा और महानियंत्रण(कैग) की रिपोर्ट में जिन महत्वपूर्ण सरकारी परियोजनाओं में घोटालों का पर्दाफाश हुआ है उनसे देश को भारी आर्थिक नुकसान हुआ है और परियोजनाओं की साख पर भी सवाल उठे हैं इसलिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को इस बारे में जवाब देना चाहिए। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने आज पार्टी मुख्यालय में संवाददाता सम्मेलन में कहा कि भारत माला परियोजना के तहत करीब 70-75 हजार किमी लम्बी सड़कों का निर्माण हुआ है।

इसके लिए निधि को मंजूरी प्रधानमंत्री की अध्यक्षता वाली मंत्रिमंडल समिति ने दी। इसके बावजूद एक किमी सड़क के निर्माण में दोगुना राशि खर्च हुई और करोड़ों रुपए का फर्जीवाडा हुआ है। उनका कहना था कि द्वारका एक्सप्रेस-वे में 2 किमी सड़क बनाने में जितने रुपए खर्च हुए हैं उतने पैसे में मंगलयान मंगल ग्रह पर पहुंचा जा सकता है। इस सड़क को दुनिया का आठवां अजूबा घोषित कर देना चाहिए और उसे देखने के लिए टिकट लगना चाहिए।

- सड़क के निर्माण में दोगुना राशि खर्च हुई
- 250 करोड़ प्रति किलोमीटर पहुंचा खर्च

132 करोड़ रुपए अवैध वसूले गए

उन्होंने कहा कि मोदी सरकार जिस द्वारका एक्सप्रेस-वे की तारीफ करते नहीं थकती उसको लेकर जब खुलासा तो पता चला कि 18 करोड रुपए प्रति किलोमीटर सड़क के निर्माण के लिए स्वीकृत हुए थे लेकिन इस सड़क का निर्माण 250 करोड़ रुपए प्रति किलोमीटर पहुंचा है।

कांग्रेस आलाकमान ने दिल्ली के नेताओं के साथ की अहम बैठक

नई दिल्ली। कांग्रेस आला कमान की लोकसभा चुनाव के मद्देनजर दिल्ली के पार्टी नेताओं के साथ रणनीति बनाने को लेकर बुधवार को यहां कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे की अध्यक्षता में बैठक हुई जिसमें पार्टी के प्रमुख नेताओं ने हिस्सा लिया। पार्टी सूत्रों के अनुसार बैठक में श्री खड़गे के अलावा पार्टी के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस के दिल्ली के प्रभारी महासचिव दीपक बाबरिया, प्रदेश अध्यक्ष अनिल चौधरी, वरिष्ठ नेता अजय माकन, संदीप दीक्षित सहित कई प्रमुख नेता शामिल हुए।

पवार बोले, भाजपा से नहीं मिला कोई ऑफर

लोगों के बीच दरार पैदा करना चाहती है भाजपा

मुंबई, 16 अगस्त (एजेंसियां)। एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने भाजपा पर निशाना साधा है। पवार का कहना है कि भाजपा लोगों के बीच दरार पैदा करना चाहती है। इसके साथ ही एनसीपी नेता ने पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण के उस दावे को भी खारिज किया जिसमें उन्होंने कहा था कि राकांपा प्रमुख या उनकी बेटी सुप्रिया सुले में से किसी एक को भाजपा से कैबिनेट मंत्री पद का प्रस्ताव मिला है। उन्होंने कहा कि अजित के साथ बैठक में कोई राजनीतिक चर्चा नहीं की गई। उन्होंने कहा कि उन्हें कोई पेशकश नहीं की गई है। चव्हाण ने दावा किया था कि भाजपा के ऑफर के लिए अजित और शरद के बीच गुप्त बैठक हुई थी। राकांपा सुप्रीमो शरद पवार ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। छत्रपति संभाजी नगर में एनसीपी प्रमुख शरद पवार ने कहा कि पिछले आठ-10 दिनों से मैं पूरे महाराष्ट्र में पार्टी कार्यकर्ताओं से मिल रहा हूं। दो दिन पहले सोलापुर के सांगोला इलाके में कम से कम 1000 लोगों ने अलग-अलग जगहों पर मेरी कार रोकी। पुणे, सतारा और अन्य स्थानों पर पार्टी के कई कार्यकर्ता मुझसे मिलने आए। मैं कल बीड का दौरा करूंगा। उन्होंने कहा, इंडिया की अगली बैठक मुंबई में होगी। भाजपा और उनके साथी विपरीत काम कर रहे हैं। भाजपा से लड़ने के लिए सफल रणनीति बनाएंगे। पवार ने यह भी कहा कि विभाजन दिवस मनाने का फैसला गलत था। भाजपा लोगों में दरार पैदा करना चाहती है और लोगों को धर्म, समुदाय के आधार पर बांट रही है। राकंपा के वरिष्ठ नेता ने आगे कहा, बागी गुट को मेरी फोटो न लगाने के लिए कहा था। लेकिन उन्होंने मेरी बात को नहीं माना है। अब हम इसके खिलाफ अदालत जाएंगे। पवार ने कहा भाजपा सरकारों को अस्थिर कर रही है। मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र में सरकारों को अस्थिर किया गया गया। मणिपुर हिंसा को लेकर कहा, मणिपुर संवेदनशील राज्य है और वहा अतिरिक्त सावधानी बरतने की आवश्यकता है।

कांग्रेस के दावे को भी किया खारिज

छत्तीसगढ़ व मध्य प्रदेश को लेकर भाजपा की केंद्रीय चुनाव समिति ने की बैठक

प्रधानमंत्री सहित भाजपा के सभी दिग्गज नेताओं का हुआ जमावड़ा

■ विंध्यवासिनी त्रिपाठी

नई दिल्ली, 16 अगस्त (देशबन्धु)। इस साल के आखिर में मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान,तेलंगाना व मिजोरम में विधानसभा चुनाव होने हैं। भाजपा राजस्थान में वापसी की उम्मीद कर रही है। लेकिन छत्तीसगढ़ में जहां सत्ता से बेदखल होने के पांच साल बाद भी पिछड़ती नजर आ रही है, वहीं मध्यप्रदेश में शिवराज सरकार के लिए सत्ता बरकरार रखना बेहद मुश्किल लग रहा है। इसी को लेकर पार्टी चुनाव की घोषणा होने से पहले ही मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ पर केंद्रीय चुनाव समिति की बैठक कर उम्मीदवारों के चयन व हालात से निपटने की रणनीति पर चर्चा की। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक, इस बैठक में केंद्रीय चुनाव समिति के सदस्यों ने राज्यों के पदाधिकारियों से चुनाव तैयारियों का जायजा लिया। बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अलावा, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, बीएल संतोष, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, कैलाश विजयवर्गीय सहित अन्य कई नेता मौजूद रहे।

दिल्ली में फिर उफान पर यमुना

नई दिल्ली, 16 अगस्त (देशबन्धु)। पहाड़ों पर बारिश से जनजीवन प्रभावित है। भूस्खलन से कई इलाकों का आवागमन बाधित है। उधर नदियों में जल स्तर बढ़ने से मैदानी इलाके भी जल भराव से प्रभावित हो रहे हैं। ऐसे में यमुना का जल स्तर बढ़ने से देश की राजधानी दिल्ली में बाढ़ का खतरा फिर से मंडराने लगा है।

केंद्रीय जल आयोग के अनुसार दिल्ली में यमुना का जल स्तर खतरे के निशान को पार कर गया है। बुधवार की सुबह 5 बजे राजधानी दिल्ली में यमुना का जल स्तर और बढ़कर 205.43 मीटर पर पहुंच गया।

फिर मंडराया बाढ़ का खतरा

उपलब्धि चांद के और करीब पहुंचा चंद्रयान-3

चंद्रयान-3 से आज अलग होगा लैंडर

चेन्नई, 16 अगस्त (एजेंसियां)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने बुधवार को भारत के चंद्रयान-3 को चंद्रमा के और करीब ले जाते हुए कहा कि लैंडर मॉड्यूल को गुरुवार को प्रोपल्शन मॉड्यूल से अलग किया जाएगा। अंतरिक्ष एजेंसी ने एक ट्वीट में कहा, आज की सफल फायरिंग, जो थोड़े समय के लिए आवश्यक थी, ने चंद्रयान-3 को अपनी मंशा के अनुरूप 153 किमी गुना 163 किमी की कक्षा में स्थापित कर दिया है।

इसके साथ ही चंद्रयान की कक्षा बदलने का काम पूरा हो गया है। अब तैयारियों का समय आ गया है क्योंकि प्रोपल्शन मॉड्यूल और लैंडर

चंद्रयान की कक्षा बदलने का काम पूरा हो गया

मॉड्यूल अपनी अलग-अलग यात्राओं के लिए तैयार हो रहे हैं। प्रोपल्शन मॉड्यूल से लैंडर मॉड्यूल को 17 अगस्त 2023 को अलग करने की योजना बनाई गई है। चंद्रयान-3 में

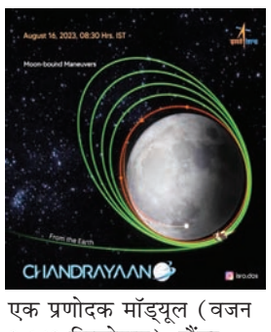

एक प्रणोदक मॉड्यूल (वजन 2,148 किलोग्राम), लैंडर (1,723.89 किलोग्राम) और एक रोवर (26 किलोग्राम) शामिल हैं। भारत के तीसरे चंद्र मिशन का मुख्य उद्देश्य लैंडर को चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के पास उतारना है। चंद्रयान-2 मिशन में लैंडर पर नियंत्रण खो देने की वजह से

100 किमी ऊंचाई से चंद्रमा पर उतरेगा

उसकी सॉफ्ट लैंडिंग की जगह क्रैश लैंडिंग हो गई थी और लैंडर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था। इसरो के मुताबिक, लैंडर के 23 अगस्त को शाम 5.47 बजे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर उतरने की उम्मीद है। लैंडर चंद्रमा की सतह से लगभग 100 किमी की ऊंचाई से चंद्रमा पर उतरेगा। सॉफ्ट लैंडिंग एक पेचीदा मुद्दा है। सुरक्षित और जोखिम-रहति क्षेत्र खोजने के लिए लैंडिंग से पहले साइट की इमेजिंग की जाएगी। लैंडिंग के बाद छह पहियों वाला रोवर बाहर निकलेगा और एक चंद्र दिवस की अवधि के लिए चंद्रमा की सतह पर प्रयोग करेगा जो पृथ्वी के 14 दिनों के बराबर है।

देश

उवाच

महाराष्ट्र में 'भारत जोड़ो पदयात्रा' का पहला चरण तीन सितंबर से शुरू होगा और यह 17 सितंबर तक चलेगा। पदयात्रा के दौरान वे किसानों की समस्या, युवाओं की बेरोजगारी, राज्य सरकार में अनुबंध के आधार पर कर्मचारियों की नियुक्ति और महंगाई को जनता के सामने रखेंगे।

-नाना पटोले, एमपीसीसी के अध्यक्ष

तापमान	अधिकतम	न्यूनतम
दिल्ली	35.0	28.0
मुंबई	28.0	27.0
कोलकाता	27.0	26.0
चेन्नई	32.0	28.0

भारत जी-20 के बीच मणिपुर जलने से खो रही वैश्विक विश्वसनीयता : कांग्रेस

मणिपुर हिंसा को लेकर केंद्र सरकार पर साधा निशाना

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। कांग्रेस नेता और सांसद शशि थरूर ने केंद्र सरकार पर बड़ा हमला बोला है। बुधवार को उन्होंने कहा कि एक तरफ भारत 'एक धरती, एक परिवार, एक भविष्य' की थीम पर जी-20 बैठकों की मेजबानी कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ एक राज्य जल रहा है, इससे भारत देश दुनिया के सामने अपनी विश्वसनीयता खो रहा है। तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर ने कहा कि जहां भारत के नेता अपने भाषणों में वसुधैव कुटुम्बकम की बात करते हैं, वहीं 'जब हमारा अपना ही एक राज्य जल रहा हो तो हमारी क्या विश्वसनीयता होगी? दुनिया भर में जो लोग भारत के बारे में पढ़ेंगे, वे कहेंगे कि सबसे पहले यहां मानवता और सद्भाव की जरूरत है। दिल्ली के पत्रकार जॉर्ज कल्लिवयालिल द्वारा लिखित 'मणिपुर एफआईआर' नामक पुस्तक का कवर जारी करने के बाद शशि थरूर ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी से अनुरोध करूंगा कि कम से कम वैश्विक स्तर पर हमारी विश्वसनीयता को बचाने के लिए कुछ कार्रवाई करें। इस कार्यक्रम का आयोजन केरल मीडिया अकादमी ने किया था। इस समारोह में शामिल होने वाले गणमान्य व्यक्तियों में सीपीआई (एम) नेता और राज्यसभा सांसद जॉन ब्रिटास भी शामिल थे। मणिपुर में हिंसा मई में फैली थी, आज उसने भयावह रूप ले लिया है। स्थिति को देखते हुए वहां राष्ट्रपति शासन लगाया जाना चाहिए। इस तरह, सेना और राज्यपाल बिना किसी राजनीतिक हस्तक्षेप के कानून और व्यवस्था बनाए रखने पर निर्णय ले सकते हैं। आगे उन्होंने भाजपा के नेतृत्व वाली राज्य और केंद्र सरकार दोनों की कड़ी आलोचना की और कहा कि भाजपा को सत्ता में रहना है इसलिए वह वहां राष्ट्रपति शासन नहीं चाहते। इससे पहले शशि थरूर ने नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय का नाम बदलने को लेकर पीएम पर निशाना साधा था और कहा कि प्रधानमंत्री संग्रहालय और पुस्तकालय करने पर कहा कि यह अफसोस की बात है कि यह नौबत आई।

भाजपा को सत्ता में रहना है इसलिए वह राष्ट्रपति शासन नहीं चाहते

वैश्विक स्तर पर हमारी विश्वसनीयता को बचाने के लिए कार्रवाई करें मोदी : शशि थरूर

मणिपुर में लगातार अशांति का माहौल : कांग्रेस

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई ने बुधवार को कहा कि जब तक लूटे गए छह हजार हथियार बरामद नहीं हो जाते, तब तक मणिपुर में शांति नहीं हो सकती है। मणिपुर में लगातार अशांति का माहौल है। जैसे ही लगता है कि राज्य में तनाव कम हो रहा है वैसे ही हिंसा फिर भड़क जाती है। गोगोई ने कहा कि मणिपुर में लूटे गए छह हजार अत्याधुनिक हथियार और छह लाख राउंड गोला-बारूद बरामद होने तक शांति नहीं हो सकती। उन्होंने पत्रकारों से बात की। कहा कि राज्य में तीन मई से हिंसा जारी है। यहां सुरक्षा बलों से हथियार और गोला बारूद लूटे गए। अब इन हथियारों का इस्तेमाल राज्य के आम लोगों के खिलाफ किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि राज्य में शांति और सामान्य स्थिति कैसे होगी, जब दोनों पक्षों के बीच सुलह पर कोई बातचीत ही नहीं हुई है। कांग्रेस नेता ने दावा किया कि मैतेई और कुकी दोनों मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह से नाखुश हैं। उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि गृह मंत्री अमित शाह ने संसद में मुख्यमंत्री का पूरा समर्थन किया। उन्होंने कहा कि शांति समितियों में सीएम की मौजूदगी के कारण शांति वार्ता विफल हो गई है। कालियाबोर से सांसद गोगोई ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से देश को गुमराह किया है। जब तक 6,000 हथियार बरामद नहीं हो जाते, तब तक राज्य में शांति नहीं आ सकती।

उल्टा तिरंगा फहराने पर असम भाजपा अध्यक्ष के खिलाफ प्राथमिकी

गुवाहाटी, 16 अगस्त (एजेंसियां)। स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान गुवाहाटी में पार्टी मुख्यालय पर कथित तौर पर उल्टा तिरंगा फहराने के आरोप में असम भाजपा अध्यक्ष भाबेश कलिता के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की गई है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक, कलिता पर देशद्रोही गतिविधि में शामिल होने का आरोप लगाते हुए तीन लोगों ने मंगलवार शाम को नगांव सदर पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई। उन्होंने दावा किया कि राज्य भाजपा नेता को इस तथ्य की जानकारी थी कि तिरंगा उल्टा रखा गया था और इसके बावजूद उन्होंने इसे फहराया। जब यह बताया गया कि झंडा उल्टा फहराया गया है, तो इसे ठीक किया गया। घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कलिता ने बुधवार को आईएएनएस को बताया,पार्टी कार्यकर्ता जो झंडा फहराने के प्रभारी थे, वे इस बात से अनभिज्ञ थे कि इसे उल्टा फहराया गया था। इस वजह से यह हमारी जानकारी के बिना उल्टा हो गया।

बहुसंख्यकवाद के आधार पर नहीं चलाया जा सकता देश : महबूबा

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी (पीडीपी) की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने बुधवार को कहा कि वह बहुत खुश हैं कि सुप्रीम कोर्ट अनुच्छेद-370 मामले में सुनवाई कर रहा है। इस दौरान उन्होंने भगवान राम का भी जिक्र किया। वह बुधवार को नई दिल्ली में सुप्रीम कोर्ट में अनुच्छेद 370 को निरस्त करने को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर चल रही सुनवाई में शामिल होने के लिए पहुंचीं।

इस दौरान उन्होंने मीडिया से रूबरू होते हुए कहा कि देश को बहुसंख्यकवाद के आधार पर नहीं चलाया जा सकता। यह देश संविधान के अनुसार चलेगा। पूर्व मुख्यमंत्री महबूबा ने भगवान राम और उनके रघु वंश का जिक्र करते हुए कहा कि हमें अभी भी इस देश के सर्वोच्च न्यायालय पर भरोसा है। मैं उनसे अपील करना चाहती हूं कि देश रघुकुल रीत सदा चली आई, प्राण जाए पर वचन ना के सिद्धांत पर विश्वास करता है। पीडीपी की अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती ने कहा कि हिंदू पौराणिक कथाओं में भगवान राम से संबंधित रघु वंश इस सिद्धांत में विश्वास करते थे कि आपको अपना वादा कभी नहीं तोड़ना चाहिए। भले ही इसके लिए आपको अपना जीवन खोना पड़े।उन्होंने कहा कि अनुच्छेद 370 को हटाने का मुद्दा भारत के लोगों और 1947 में कश्मीर के मूल निवासियों से किए गए वादे से संबंधित है।

- अनुच्छेद-370 मामले में जारी सुनवाई पर जताई खुशी
- भगवान राम व उनके रघु वंश का किया जिक्र

जम्मू-कश्मीर के लोगों की विशेष स्थिति को छीन लिया

महबूबा मुफ्ती ने कहा कि कि जम्मू-कश्मीर के लोगों की विशेष स्थिति को छीन लिया है। आज आइडिया ऑफ इंडिया परीक्षण पर है। देश का संविधान, न्यायिक प्रणाली और लोकतांत्रिक प्रणाली आज परीक्षण पर है। उन्होंने कहा कि वह संतुष्ट हैं कि अदालत ने केंद्र की इस दलील को स्वीकार नहीं किया कि अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को निरस्त करने के बाद पूर्ववर्ती राज्य जम्मू-कश्मीर में स्थिति में सुधार हुआ है। मुफ्ती ने दावा किया कि पिछले पांच वर्षों में कई कश्मीरी पंडित घाटी छोड़ने को मजबूर किया गया है।

सार संक्षेप

सिन्हा ने वाजपेयी को याद कर दी श्रद्धांजलि

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने) भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की पांचवीं पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और उन्हें एक महान राजनेता बताया। सिन्हा ने एक ट्वीट किया, महान राजनेता एवं पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को उनकी पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि। वाजपेयी की दृष्टिकोण, बुद्धिमत्ता, उनके विचार और आदर्श हमें प्रगति के पथ पर प्रेरित और मार्गदर्शन करते रहेंगे।

सांगली, सतारा में भूकंप के हल्के झटके

कोल्हापुर। महाराष्ट्र में कोल्हापुर और उससे सटे सांगली और सतारा जिलों के कुछ हिस्सों सहित आसपास के इलाकों में बुधवार को कुछ सेकंड के लिए भूकंप के हल्के झटके महसूस किए गए। सुबह पौने सात बजे आए भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 3.4 मापी गयी। भूकंप जिले और सांगली एवं सतारा जिलों के कुछ हिस्सों में आया था। भूकंप का केंद्र बिंदु सतारा जिले के कोयाना सिंचाई बांध से 20 किमी दूर जमीन से पांच किटर की गहराई में दर्ज किया गया। भूकंप से क्षेत्रों में जानमाल के नुकसान की कोई रिपोर्ट नहीं है।

तमिलनाडु के तीन छात्रों की समुद्र में डूबने से मौत

चेन्नई। तमिलनाडु के दक्षिणी तिरुनेलवेली जिले के थिसैयानविलई तालुक में मंगलवार शाम को समुद्र में नहाने गए तीन स्कूली छात्रों की डूबने से मौत हो गयी। पुलिस सूत्र ने बताया कि जैसे ही तीनों लापता हो गए, तटीय सुरक्षा समूह पुलिस और अग्निशमन सेवा कर्मियों ने मछुआरों के साथ मिलकर उनका पता लगाने के लिए तलाशी अभियान शुरू किया।

सिक्किम ने जन उनमुक्ति दिवस मनाया

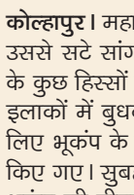

नई दिल्ली। मुख्यमंत्री तामांग ने छठवें जन उन्मुक्ति दिवस समारोह के दौरान रंगपो खेल के मैदान में विशाल सभा को संबोधित करने के दौरान कहा की रुलिंग पार्टी एसकेएम आने वाले 2024 के विधानसभा चुनाव में सभी 32 सीटों पर 'रिकॉर्ड अंतर' से जीत हासिल करेगी। यह रूलिंग पार्टी एसकेएम का एक कैलेंडर कार्यक्रम है, जो हर साल 10 अगस्त , पार्टी अध्यक्ष और वर्तमान मुख्यमंत्री तामांग की रिहाई के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। एसकेएम अध्यक्ष ने कहा कि 'जन उन्मुक्ति दिवस' सिक्किम के लोगों के लिए एक उज्वल दिन है, जिन्होंने 'परिवर्तन' आह्वान का समर्थन किया और उन्हें स्वतंत्र रूप से बोलने की आजादी मिली। मुख्यमंत्री ने कहा, '6 जन उन्मुक्ति दिवस के अवसर पर, मैं सिक्किम के उन सभी लोगों को नमन करता हूं जो परिवर्तन के लिए हमारे संघर्ष में हमारे साथ खड़े रहे और सिक्किम के इतिहास में एक नया अध्याय शुरू किया।'

कोलकाता में युद्धपोत का शुभारंभ करेंगी द्रौपदी मुर्मू

कोलकाता, 16 अगस्त (वार्ता) राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू 17 अगस्त को कोलकाता स्थित गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड में नौसेना के प्रोजेक्ट 17ए फ्रिगेट के पोत विंध्यगिरि का शुभारंभ करेंगी। नौसैनिक पोत का नाम कर्नाटक की पर्वत श्रृंखला के नाम पर रखा गया है और यह प्रोजेक्ट 17ए फ्रिगेट का छठवां पोत है। युद्धपोत का लॉन्चिंग समारोह कोलकाता शहर में हुगली नदी के तट पर जीआरएसई की जहाज निर्माण सुविधा में आयोजित किया जाएगा।

अत्याधुनिक जहाज को नवीनतम उपकरणों से सुसज्जित किया जाएगा और सेवा में शामिल करने के लिए भारतीय नौसेना को सौंपे जाने से पहले व्यापक परीक्षणों से गुजरना होगा। पूर्ववर्ती विंध्यगिरि ने 8 जुलाई 1981 से 11 जून 2012 तक अपनी 31 साल की सेवा के दौरान कई चुनौतीपूर्ण अभियान और बहुराष्ट्रीय अभ्यासों में भाग लिया था। नव-निर्मित विंध्यगिरि देश के समृद्ध नौसेना इतिहास को अंगीकार करने के दृढ़ संकल्प का प्रतीक होने के साथ-साथ भविष्य में स्वदेशी रक्षा क्षमता को प्रेरित करने को भी दर्शाता है। प्रोजेक्ट 17 ए कार्यक्रम के अंतर्गत मैसर्स एमडीएल द्वारा कुल चार पोत और मैसर्स जीआरएसई द्वारा तीन पोत निर्माणाधीन हैं। परियोजना के पहले पांच पोतों का एमडीएल और जीआरएसई द्वारा 2019-2022 के बीच शुभारंभ किया गया।

ओबीसी वर्ग के साथ न्याय करे सरकार : कमलनाथ

कांग्रेस ने राज्य सरकार पर ओबीसी विरोधी होने का लगाया आरोप

भोपाल, 16 अगस्त (एजेंसियां)। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने प्राथमिक शिक्षक वर्ग की परीक्षा में नियुक्ति की मांग कर रहे अभ्यर्थियों की मांगों का समर्थन करते हुए बुधवार को कहा कि सरकार अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के परीक्षार्थियों के साथ न्याय करे। कमलनाथ ने ट्वीट करते हुए आरोप लगाया कि प्रदेश सरकार ने पिछले 18 वर्ष में ओबीसी वर्ग के खिलाफ काम करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

ओबीसी वर्ग के अभ्यर्थियों ने शिकायत की है कि प्राथमिक शिक्षक वर्ग 3 परीक्षा 2020 की द्वितीय काउंसलिंग में 800 से अधिक ओबीसी वर्ग के अभ्यर्थियों के नियुक्ति पत्र रोक दिए गए हैं। ये अभ्यर्थी भोपाल में लोक शिक्षण संचालनालय के बाहर धरना दे रहे हैं। उन्होंने सरकार से आग्रह किया कि इस शिकायत पर गंभीरता पूर्वक विचार कर न्यायोचित ढंग से नियुक्तियां दी जाएं।

सड़क पर उतरे ओबीसी परीक्षार्थी

मध्य प्रदेश में प्राथमिक शिक्षक भर्ती परीक्षा के चयनित अन्य पिछड़ा वर्ग के परीक्षार्थियों के नियुक्ति पत्र जारी न किए जाने का मामला तूल पकड़ रहा है। चयनित परीक्षार्थियों ने नियुक्ति पत्र की मांग को लेकर डीपीआई कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया। कांग्रेस ने राज्य सरकार पर ओबीसी विरोधी होने का आरोप लगाया है। राज्य में पिछले वर्षों में हुई प्राथमिक शिक्षक वर्ग 3 परीक्षा के सफल परीक्षार्थियों को नियुक्ति न दिए जाने के आरोप लंबे अरसे से लग रहे हैं। इसी के चलते राज्य के विभिन्न हिस्सों से पहुंचे परीक्षार्थियों ने लोक शिक्षण संचालनालय के सामने प्रदर्शन किया और नियुक्ति आदेश जारी करने की मांग की। छात्रों का आरोप है कि उनकी नियुक्ति के आदेश जारी नहीं किए जा रहे है। कांग्रेस के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरुण यादव ने प्रदर्शनकारी छात्रों का समर्थन करते हुए कहा कि, सीएम शिवराज अपने आपको ओबीसी हितैषी बताते हैं।

कोट.शिकायत पर गंभीरता पूर्वक विचार कर न्यायोचित ढंग से नियुक्तियां दी जाएं : कमलनाथ

मगर उनके कार्यकाल में सबसे ज्यादा प्रताड़ित दलित, आदिवासी और पिछड़ा वर्ग ही रहा है। ओबीसी वर्ग तीन के चयनित शिक्षक भोपाल में डीपीआईके बाहर विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं क्योंकि सरकार उन्हें ज्वाइनिंग नहीं दे रही है।

बजरंग दल को नहीं करेंगे प्रतिबंधित : दिग्विजय

भोपाल। मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस के वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह ने बुधवार को कहा कि कांग्रेस के सत्ता में आने पर बजरंग दल को प्रतिबंधित नहीं किया जाएगा, हालांकि गुंडा तत्वों को नहीं छोड़ा जाएगा। सिंह ने संवाददाताओं से चर्चा के दौरान कहा कि कांग्रेस की ओर से बजरंग दल को प्रतिबंधित नहीं किया जाएगा, बजरंग दल में कुछ अच्छे लोग भी हो सकते हैं, हालांकि गुंडा तत्वों को नहीं छोड़ा जाएगा। सिंह के इस बयान से जुड़ा वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सिंह के इस बयान पर चुटकी लेते हुए भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता नरेंद्र सलूजा ने कहा कि सिंह को ये बात बहुत देर से समझ आई है कि बजरंग दल देशभक्त और राष्ट्रभक्तों का संगठन है।

कमजोर वर्गों के जीवन से गरीबी अभी भी दूर नहीं हुई : केसीआर

किसानों का 37 हजार करोड़ का फसल ऋण किया गया माफ

हैदराबाद, 16 अगस्त (देशबन्धु)। मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव ने तेलंगाना राज्य और देश भर के सभी लोगों को भारतीय स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी। गोलकोंडा फोर्ट में आयोजित स्वतंत्रता दिवस कार्यक्रम में झंडोत्तोलन के बाद अपने संबोधन में के.चंद्रशेखर राव ने कहा कि इस अवसर पर मैं उन स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जिन्होंने ब्रिटिश गुलामी की जंजीरों को तोड़ दिया और देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। तेलंगाना एक ऐसे राज्य के रूप में देश के लिए एक उदाहरण बन गया है जहां किसान कल्याण फल-फूल रहा है। साढ़े नौ साल की अवधि में दो चरणों में राज्य में

किसानों का कुल 37,000 करोड़ रुपये का फसल ऋण माफ किया गया है। मुझे यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि पूरे देश में ऐसी कोई सरकार नहीं है जिसने किसानों को इस तरह से कर्ज मुक्त किया हो।

मैं आदरपूर्वक कहता हूं कि देश में ऐसा कोई राज्य नहीं है जो किसान कल्याण के मामले में तेलंगाना की बराबरी कर सके। दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों और कमजोर वर्गों के जीवन से गरीबी अभी भी दूर नहीं हुई है। मैं निवेदन करता हूं कि प्रगति के फल, जो सभी वर्गों की उन्नति के लिए समान रूप से उपयोगी हैं, वे प्राप्त स्वतंत्रता के गुण हैं।

देश के स्वतंत्रता संग्राम की भावना से हमने अहिंसक और शांतिपूर्ण तरीके से तेलंगाना राज्य हासिल किया। मुख्यमंत्री के.चंद्रशेखर राव ने आगे कहा कि स्वतंत्र भारत के 75 वर्षों में हासिल की गई प्रगति महत्वपूर्ण है, लेकिन यह कहा जाना चाहिए कि अपेक्षित लक्ष्य और प्राप्त किए जाने वाले लक्ष्य अभी तक हासिल नहीं किए जा सके हैं। प्राकृतिक संसाधन और मेहनती लोग होते हुए भी शासकों की अक्षमता के कारण संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं हो सका है।

नीतीश राजनीति में जा रहे पीछे : मांझी

पटना, 16 अगस्त (एजेंसियां)। बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और हिंदुस्तान अवाम मोर्चा के प्रमुख जीतन राम मांझी ने बुधवार को बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को नसीहत देते हुए कहा कि वे अब राजनीति में पीछे जा रहे, उन्हें पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के चरणों में बैठकर प्रायश्चित करना चाहिए। वाजपेयी की पुण्यतिथि पर आयोजित एक कार्यक्रम के बाद मांझी ने पत्रकारों से चर्चा करते हुए कहा कि आज वे जिसके साथ हैं उन्हें वे कभी भ्रष्टाचारी कहते थे। उन्होंने यह भी कहा कि राजद अब सीएम पर छाया हुआ है। उन्होंने कहा कि आज बिहार में 1700 करोड़ का बना पुल पानी में बह जा रहा। हर दिन राज्य में कहीं न कहीं से हत्या की खबरे आती रहती हैं। इस दौरान मांझी ने दावा करते हुए कहा कि अगले चुनाव में नरेंद्र मोदी की पूर्ण बहुमत की सरकार फिर से आने वाली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की महानता है कि वह बहुमत होते हुए भी सभी जमातों को अपने साथ लेकर चल रहे हैं। वे सभी को साथ लेकर चलते हैं।

राजनीतिक जगत में शरद पवार का कद है ऊंचा : राउत

अजित पवार इतने प्रभावशाली नहीं कि शरद को केंद्रीय मंत्री बना सकें

मुंबई, 16 अगस्त (एजेंसियां)। शिवसेना (उद्धव बाला साहेब ठाकरे) के नेता संजय राउत ने बुधवार को कहा कि महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार इतने प्रभावशाली नहीं हैं कि वह राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) सुप्रीमो शरद पवार को केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह दे सकें। राउत वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण के हवाले से उन मीडिया रिपोर्टों पर प्रतिक्रिया दे रहे थे कि अजीत पवार ने शरद पवार को केंद्रीय मंत्रिमंडल में जगह देने की पेशकश की थी। राउत ने मीडिया से कहा कि शरद पवार ने अजित पवार को बनाया है और राजनीतिक जगत में उनका कद ऊंचा है। राउत ने कहा, अजित पवार इतने बड़े नेता नहीं हैं कि वह शरद पवार को ऑफर दे सकें। अजित पवार को शरद पवार साहब ने बनाया, शरद पवार को अजित पवार ने नहीं बनाया। उनका (शरद पवार) कद ऊंचा है। गौरतलब है कि चव्हाण ने पहले दावा किया था कि भाजपा ने शरद पवार को केंद्रीय कृषि मंत्रालय की पेशकश की थी। चव्हाण ने बताया कि पुणे में व्यवसायी अतुल चोरडिया के स्वामित्व वाले बंगले पर राकांपा सुप्रीमो और उनके भतीजे अजीत पवार के बीच एक बैठक हुई। यह बैठक कथित तौर पर भाजपा के प्रस्ताव के इर्द-गिर्द घूमती रही। चव्हाण के अनुसार, दिलचस्प बात यह है कि बैठक में राकांपा गुट के नेता जयंत पाटिल भी मौजूद थे, जिससे चर्चा की गंभीरता का पता चलता है।

उम्मीद *वैष्णो देवी दरबार आने वालों का आंकड़ा एक करोड़ छूने की उम्मीद*

सात माह में 58 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने लगाई हाजिरी

सुरेश एस डुग्गर

जम्मू,16 अगस्त (देशबन्धु)। इस साल वैष्णो देवी आने वालों की संख्या के एक करोड़ से अधिक होने की उम्मीद बढ़ गई है। यह उम्मीद इस साल पिछले सात महीनों के दौरान आने वाले 58 लाख श्रद्धालुओं के कारण जगी है। वैष्णो देवी यात्रा के इतिहास में यह दूसरा अवसर है कि सात माह में आंकड़े ने 58 लाख को छुआ हो।

जारी वर्ष में श्रद्धालुओं के उत्साह का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि जारी वर्ष के पहले 7 माह में 58 लाख से अधिक श्रद्धालु मां के दरबार हाजिरी लगा चुके हैं यानी कि जारी वर्ष के पहले 7 माह में 5820228 श्रद्धालु अब तक मां के चरणों में नतमस्तक हो चुके हैं। वहीं इसी समयावधि में बीते वर्ष 5503995 श्रद्धालु मां के दरबार हाजिरी लगाने पहुंचे थे। हालांकि जारी वर्ष के जुलाई माह में बीते वर्ष के जुलाई माह

रिमझिम बारिश भी नहीं थाम पा रही श्रद्धालुओं के कदम

के मुकाबले कम संख्या में श्रद्धालु मां के दरबार पहुंचे हैं वर्ष 2023 के जुलाई माह में 776800 श्रद्धालु मां के द्वार पहुंचे थे जबकि वर्ष 2022 के जुलाई माह में कुल 907542 श्रद्धालु मां के दरबार पहुंचे थे यानी कि 130742 अधिक संख्या में श्रद्धालु बीते वर्ष के जुलाई माह में मां के दरबार पहुंचे थे।

बीते वर्ष के मुकाबले जारी वर्ष के पहले 7 माह में 316233 अधिक संख्या में श्रद्धालु मां के दरबार पहुंचे और हजारों की संख्या में रोजाना मां वैष्णो देवी के दर्शनों के लिए श्रद्धालुओं का आना निरंतर जारी है। चाहे तीखी गर्मी हो या घनी धुंध या फिर रिमझिम बारिश बावजूद इसके श्रद्धालुओं के कदम निरंतर मां के भवन की ओर बढ़ रहे हैं। वर्ष 2023 के जनवरी माह में कुल 524189 श्रद्धालु मां के दरबार पहुंचे थे तो वहीं फरवरी माह में 414432 श्रद्धालु जबकि मार्च माह में 894650 अप्रैल माह में 1018540 मई माह में 995773 जून माह में 1195844 श्रद्धालु जुलाई माह में 776800 श्रद्धालु मां के दर पहुंचे थे। वही जारी माह के पहले 7 माह में अब तक कुल 5820228 श्रद्धालु मां के दरबार में हाजिरी लगा चुके हैं। वर्ष 2022 के जनवरी माह में 438521 श्रद्धालु फरवरी माह में 361074 श्रद्धालु मार्च माह में 778669 श्रद्धालु अप्रैल माह में 902192 श्रद्धालु मई माह में 986766 श्रद्धालु जून माह में 1129231 श्रद्धालु जबकि जुलाई माह में 907542 श्रद्धालु मां के दरबार पहुंचे थे यानी कि वर्ष 2022 के पहले 7 माह में कुल 5503995 श्रद्धालु मां के दरबार हाजिर लगाने पहुंचे थे। बढ़ती भीड़ के कारण वैष्णो देवी श्राइन बोर्ड की चिंताएं भी बढ़ गई हैं। पहले से ही वह आने वालों को दी जाने वाली सुविधाओं को लेकर परेशान था जिसके हल की खातिर वह आईआईएम अहमदाबाद की सहायता ले रहा है। वैष्णो देवी तीर्थ स्थान देश का पहला ऐसा तीर्थस्थान है जहां वाहनों से नहीं बल्कि लोग पैदल ही 13 किमी की चढ़ाई चढ़ कर वैष्णो देवी की पिंडियों के दर्शनार्थ जाते हैं।

कैपिटल ज़ोन

उल्टा पुल्टा

एक नौजवान बोला : चांद तो रात में निकलता हैं, आज दिन में कैसे निकल आया ?
लड़की बोली : अरे उल्लू तो रात को बोलता था, आज दिन में कैसे बोल रहा है।

अधिकारियों ने दिल्ली जल बोर्ड का धन रोका: भारद्वाज

विधानसभा उपाध्यक्ष ने याचिका समिति को भेजा जल बोर्ड में धन की कमी का मामला

- धन जारी न होंने से परियोजनाएं हो रहीं बाधित
- उपराज्यपाल पर इस मुद्दे की जानकारी होने के बाद भी कुछ नहीं करने का लगाया आरोप

नई दिल्ली,16 अगस्त (देशबन्धु)। दिल्ली विधानसभा में बुधवार को जल बोर्ड में धन की कमी का मामला सत्तापक्ष के सदस्यों ने पुरजोर तरीके से उठाया। जिसके बाद विधानसभा की उपाध्यक्ष राखी बिड़ला ने इस मामले को विधानसभा की याचिका समिति को भेज दिया है। और समिति को एक महीने के भीतर अपनी रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया। जल मंत्री सौरभ भारद्वाज ने सत्तापक्ष के सदस्य दिनेश मोहनिया द्वारा विधानसभा में पेश ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर जवाब देते हुए कहा कि अधिकारी दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) को धन मुहैया कराने में बाधा डाल रहे हैं, जिसकी वजह से विभाग की कई परियोजनाएं धन की कमी के कारण अधर में हैं।दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) के साथ धन की कमी पर चर्चा में भाग लेते हुए मंत्री भारद्वाज ने उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना पर इस मुद्दे की जानकारी होने के बाद भी कुछ नहीं करने का आरोप लगाया। प्रस्ताव पर चर्चा के दौरान जल बोर्ड की परियोजनाओं को लेकर सत्तापक्ष और विपक्ष के सदस्यों के बीच तीखी बहस हुई। बहस के दौरान सत्तापक्ष के सदस्यों ने कहा कि अधिकारी धन जारी नहीं कर रहे हैं, जिसकी वजह से उनके निर्वाचन क्षेत्रों में परियोजनाएं बाधित हो रही हैं वहीं भाजपा विधायकों ने कहा कि आप सरकार अपनी अक्षमताओं का ठीकरा दूसरों पर फोड़ने की आदि हो गई है। भारद्वाज ने चर्चा का जवाब देते हुए कहा कि कोरोना वायरस महामारी के दौरान मीटर की रीडिंग लेने वाले कर्मचारी रीडिंग लेने नहीं जा पाए और उस दौरान बिल नहीं बनाए गए। कुछ मामलों में जहां बिल बनाए गए, उनका भुगतान नहीं किया गया। लेकिन इस बार जल बोर्ड काम कर रहा है तो उन्हें वेतन का भुगतान नहीं किया जा रहा है। रोजमर्रा के खर्च का भुगतान पूंजीगत धन के माध्यम से किया गया, जो 1,500 करोड़ रुपये था। सौरभ ने कहा कि वित्त विभाग के एक अधिकारी ने सवाल किया कि 1500 करोड़ रुपये कहां खर्च किये गये। मंत्री ने कहा कि उन्होंने हमसे सवाल किया कि हम राजस्व पर पूंजीगत धन कैसे खर्च कर सकते हैं। हमने उनसे दो हजार करोड़ रुपये देने का अनुरोध किया लेकिन वे फाइलें वापस भेजते रहे। सौरभ ने कहा कि वे (अधिकारी) 500 करोड़ रुपए देंगे क्योंकि 1,500 करोड़ रुपए पहले ही आपको दिए जा चुके हैं। भारद्वाज ने विधानसभा को बताया कि पिछले छह महीनों में कोई भी नई परियोजना शुरू नहीं हुई है क्योंकि उनके पास धन ही नहीं है। भारद्वाज ने दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी से डीजेबी को वित्त आवंटित करने की अनुमति देने का आग्रह किया। उन्होंने आरोप लगाया कि जल बोर्ड ही एकमात्र विभाग नहीं है, जिसे परेशान किया जा रहा है। दिल्ली विधानसभा की याचिका समिति को शिकायतें प्राप्त हुई हैं। इससे पहले, सरकारी अस्पतालों में डाटा प्रविष्टि करने वाले विभिन्न ऑपरेटर को भी हटा दिया गया था तथा मोहल्ला क्लीनिकों में मुफ्त जांच और वृद्धावस्था पेंशन का भुगतान भी रोक दिया गया था।

जल बोर्ड का घाटा 72 हजार करोड़ कैसे हो गया, इसकी सीबीआई जांच हो : बिधूड़ी

दिल्ली विधानसभा में नेता विपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने सदन के विशेष सत्र में जल बोर्ड पर हुई चर्चा के दौरान कई गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि 2014 में जो जल बोर्ड 500 करोड़ रुपए के फायदे में था, अब 72 हजार करोड़ रुपए के घाटे में कैसे चला गया। 2016 से दिल्ली जल बोर्ड के खातों का सीएजी ऑडिट क्यों नहीं कराया गया। पानी के बिलों में करोड़ों रुपए का घोटाला कैसे हो गया। जल बोर्ड अतिरिक्त पानी क्यों उपलब्ध नहीं करा पाया और यमुना की सफाई के लिए केंद्र द्वारा दिए गए 8500 करोड़ रुपए का हिसाब जल बोर्ड क्यों नहीं दे रहा। बिधूड़ी द्वारा उठाए गए सवालों का जल मंत्री सौरभ भारद्वाज कोई जवाब नहीं दे पाए। बिधूड़ी ने जल बोर्ड के क्रियाकलाप की सीबीआई जांच की मांग की है। जल बोर्ड पर ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर बिधूड़ी ने कहा कि जल बोर्ड भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा अड्डा बन गया है। उन्होंने कहा कि जल बोर्ड के खातों की 2016 से सीएजी जांच नहीं कराई।

विधानसभा के सत्र पर उपराज्यपाल की आपत्ति सही नहीं : राखी बिड़ला

नेता प्रतिपक्ष ने सक्सेना की टिप्पणी का समर्थन किया

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा की उपाध्यक्ष राखी बिड़ला ने बुधवार को कहा कि उपराज्यपाल वी.के.सक्सेना ने सदन का दो दिवसीय सत्र बुलाए जाने पर आपत्ति जताई है, लेकिन उनकी टिप्पणी सही नहीं है। बिड़ला ने विधानसभा में कहा कि उपराज्यपाल ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को एक पत्र लिखा है, जिसमें सक्सेना ने दो दिवसीय सत्र पर आपत्ति जताते हुए कहा है कि सत्र के आयोजन से जुड़े नियमों का पालन नहीं किया जा रहा। विधानसभा उपाध्यक्ष ने कहा कि सक्सेना की टिप्पणी सही नहीं है क्योंकि बुधवार को शुरू हुआ सत्र अप्रैल में बुलाए गए पिछले सत्र की निरंतरता में है। इससे पहले, सक्सेना ने अप्रैल में आयोजित सत्र में गंभीर प्रक्रियात्मक खामियों का मुद्दा उठाया था। अप्रैल में विधानसभा का सत्र आबकारी नीति मामले के संबंध में पूछताछ के लिए केजरीवाल को केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई) से समन प्राप्त होने के बाद बुलाया गया था। बिड़ला ने यह भी कहा कि विधानसभा अध्यक्ष को नियमों के तहत यह शक्ति प्राप्त है कि वह किसी भी समय सत्र बुला सकते हैं, चाहे क्यों न सदन अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया हो। विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष रामवीर सिंह बिधूड़ी ने सक्सेना की टिप्पणी का समर्थन किया, जिसके बाद भाजपा विधायक और राखी बिड़ला के बीच जुबानी जंग देखने को मिली। उपाध्यक्ष बिड़ला ने कहा कि विधानसभा कोई राजनीतिक अखाड़ा नहीं है, बल्कि विधायकों द्वारा अपने-अपने विधानसभा क्षेत्रों से संबंधित मुद्दों को उठाने की एक जगह है।

आजादी के अमृत काल में देश विकास के पथ पर अग्रसर : गुप्ता

आजादी के लिए लाखों शहीदों की दीं कुर्बानियां

नई दिल्ली,16 अगस्त (देशबन्धु)। देश आजादी के अमृत काल में अपना 77 वां स्वतंत्रता दिवस मनाया जा रहा है, आज हमारा देश युवाओं का देश है, हमने अपनी आजादी के लिए लाखों शहीदों की कुर्बानियां दी है, जिस कारण आज हम सुरक्षित माहौल में खुशहाल जीवन जी रहे हैं यह कहना था आदित्य केयर एंड एजुकेशन सोसायटी के संस्थापक अध्यक्ष अनिल गुप्ता का।

समाज सेवी अनिल गुप्ता ने पुष्प विहार के विभिन्न सेक्टरों के आरडब्ल्यूए, बुद्धिजीवी वर्ग, सरकारी कर्मचारियों, अधिकारियों की उपस्थिति में झंडारोहण किया, जिसमे स्कूलों के छात्रों, महिलाओं, युवाओं ने बढ़-चढ़कर भाग लिया, देश भक्ति से ओत प्रोत गीतों, नाटक और भारतीय संस्कृति से जागरूक किया गया। इस मौके पर अनिल गुप्ता ने कहा कि हमने आजादी के लिए लाखों शहीदों की कुर्बानियां दी है, आज देश युवाओं का देश है, देश का भविष्य बच्चों के हाथों में सुरक्षित हैं।

इस मौके पर अनिल गुप्ता ने बच्चों को स्कूल बैग, जमेट्री बॉक्स भी दिए। वहीं बच्चों को विभिन्न प्रतियोगिता में जीतने वालों को शील्ड भी प्रदान की।

अनिल गुप्ता पिछले कई वर्षों से सोसायटी के माध्यम से जन सेवा के कार्य कर रहे हैं, वहीं कोविड काल में हर स्तर से जरूरतमंदों की सेवा की आज भी लगातार उनका प्रयास रहता है कि कोई भी बच्चा पुस्तकों के कारण अशिक्षित न रहे इलाज के कारण कोई परेशान न हो।

राजधानी के स्कूलों में मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

नई दिल्ली। पूर्वी दिल्ली के लिटिल फ्लॉवर स्कूल शाहदरा, एस आर कैपिटल स्कूल शाहदरा ग्रीन फील्ड स्कूल दिलशाद गार्डन फेयर चाइल्ड स्कूल हर्ष विहार बाल मन्दिर स्कूल प्रीत विहार लवली पब्लिक स्कूल लक्ष्मी नगर, बाल मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल, डिफेंस एन्क्लेव, विकास मार्ग, दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस समारोह बड़े उत्साह और देशभक्ति के उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत हमारे मुख्य अतिथि ओपी शर्मा, विधायक के स्वागत के साथ हुई। स्कूल की प्रिंसिपल संतोष आहूजा और डायरेक्टर योगेश अरोड़ा ने मुख्य अतिथि के साथ राष्ट्रीय ध्वज फहराया। प्रिंसिपल ने सभा को संबोधित करते हुए उनकी राष्ट्रवादी भावना की अपील की और उनसे भारतीय होने पर गर्व करने और जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्य को पूरा करने का आग्रह किया। उन्होंने देश की सच्ची संपत्ति के रूप में आज के युवाओं की भूमिका पर भी जोर दिया। फिर स्कूली छात्रों द्वारा एक मनमोहक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मार्च पास्ट से हुई। फिर देशभक्ति के उत्साह के साथ एक सांस्कृतिक समारोह आयोजित किया गया।

दिल्ली विधानसभा में मणिपुर हिंसा, नूंह में मारे गए लोगों को दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली। दिल्ली विधानसभा ने मणिपुर में जातीय हिंसा और हरियाणा के नूंह में साम्प्रदायिक झड़पों में जान गंवाने वाले लोगों को बुधवार को श्रद्धांजलि दी। दिल्ली विधानसभा का दो दिवसीय सत्र बुधवार को शुरू हुआ। दिल्ली में समूह के अधिकारियों के स्थानांतरण और पदस्थापन से जुड़े राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार (संशोधन) विधेयक, 2023 लागू होने के बाद पहली बार विधानसभा का सत्र बुलाया गया है। सत्र शुरू होते ही बालासोर रेल हादसे में मारे गए लोगों, पुंछ में आतंकवादी हमले में शहीद हुए पांच जवानों, हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखंड में भारी बारिश के चलते जान गंवाने वाले लोगों और मणिपुर हिंसा और नूंह में साम्प्रदायिक झड़पों में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। ओडिशा के बालासोर जिले में दो जून को हुए रेल हादसे में 293 लोग मारे गए थे। मणिपुर में तीन मई से मेइती और कुकी समुदायों के बीच व्यापक पैमाने पर जातीय हिंसा हो रही है तथा अब तक 150 लोगों की मौत हो चुकी है। हरियाणा के नूंह में विश्व हिंदू परिषद (विहिप) की एक शोभायात्रा पर 31 जुलाई को हमला किए जाने के बाद हिंसा भड़क गई थी और यह गुरुग्राम समेत आसपास के इलाकों तक फैल गई थी, जिसमें दो होमगार्ड और एक नायब इमाम समेत छह लोगों की मौत हो गई। इन सभी घटनाओं में जान गंवाने वाले लोगों की याद में विधानसभा के सदस्यों ने दो मिनट का मौन भी रखा।

सौंध ने अपने रीटेल स्टोर लॉन्च किया

नई दिल्ली,16 अगस्त (देशबन्धु)। वुमेन्सवियर के किफायती लक्जरी लेबल सौंध ने हाल ही में अपने रीटेल स्टोर का लॉन्च किया है, यह भारत में ब्राण्ड का 28वां एक्सक्लुजिव आटउटलेट है। गुरुग्राम के एयरिया मॉल में खोला गया सौंध का यह स्टोर उपभोक्ताओं के लिए वन स्टॉप शॉप की भूमिका निभाएगां 599 वर्गफीट से अधिक क्षेत्रफल में फैले इस स्टोर को भव्य इंटीरियर से सजाया गया है, जहां डिस्पले किया गया शानदार कलेक्शन उपभोक्ताओं को खरीददारी का बेजोड़ अनुभव प्रदान करेगा। स्टोर में सौंध की ओर सम्पूर्ण रीटेल कलेक्शन मौजूद है, जिसमें महिलाओं के लिए रैडी-टू-वियर परिधान जैसे कुर्ता सेट, ड्रैसेज एवं काफ्तान, टॉप एवं ट्यूनिक, जैकेट और फेस्टिव सेट शामिल हैं। स्टोर के लॉन्च के अवसर पर सौंध के संस्थापक एवं सीईओ सरबजीत सलूजा ने कहा की गुरूग्राम में सौंध के नए स्टोर की ओपनिंग को लेकर हम बेहद उत्सुक हैं, यह दिल्ली एनसीआर में हमारा छठा और गुरूग्राम में दूसरा स्टोर है।

इस्कॉन द्वारका में किया गया आजादी की गाथा का गुणगान

देशभक्ति के रंगों के परिधानों में दिखी आजादी की शान

नई दिल्ली,16 अगस्त (देशबन्धु)। देश के नायकों के त्याग, बलिदान और तपस्या के दिन 15 अगस्त पर हम देशवासी जितना अभिमान करें, उतना कम है। भारतीय वीर सपूतों के खून से लिखी गई इस आजादी की गाथा का गुणगान करने के साथ-साथ हम उन्हें नमन करते हैं और इस स्वतंत्रतापूर्ण जीवन के लिए भगवान का आभार व्यक्त करते हैं। इस्कॉन द्वारका दिल्ली ने इस स्वतंत्रता दिवस को एक नए ही अंदाज में सेलिब्रेट किया। देश के रक्षाकर्मियों के लिए श्री श्री रुक्मिणी द्वारकाधीश मंदिर में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया। इसमें सैनिकों के परिवारवालों एवं संबंधियों ने विशेष रूप से भाग लिया एवं भक्तगणों ने उनके लिए यज्ञ में आहुति अर्पण की।

बच्चों एवं युवाओं के लिए तिरंगे रंग की दालों से झंडा बनाए जाने का आकर्षण खास रहा। वहीं भक्तगण देशभक्ति के रंगों में रंगे परिधानों में रंगे नजर आए। इसके अतिरिक्त बच्चों के लिए विविध कार्यक्रमों के आयोजन भी किए गए। इसके अतिरिक्त बच्चों एवं बड़ों ने मंदिर प्रांगण स्थित फूड काउंटर पर केक, पेस्ट्री व सैंडविच बरफी जैसे व्यंजनों का आनंद भी लिया।

फुटबॉल के खेल को बढ़ावा देना उद्देश्य : भाटिया

नई दिल्ली,16 अगस्त (देशबन्धु)। उत्तरी भारत एफ सी नई दिल्ली स्थित एक फुटबॉल क्लब, जो अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ और दिल्ली फुटबॉल एसोसिएशन के साथ पंजीकृत है, वर्तमान में दिल्ली फुटबॉल लीग के बी डिवीजन में खेल रहा है और इसमें 13, 15, 18, 19 और वरिष्ठ खिलाड़ियों के लिए तीन अकादमी केंद्र हैं। न्यू एक्स कॉर्पोरेशन हाउस ऑफ स्पोर्ट्स एक पंजीकृत। कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय दिल्ली के साथ मिलकर, देश के युवाओं के बीच फुटबॉल को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए, उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाने के उद्देश्य से, देश का प्रतिनिधित्व करने और गौरव लाने के लिए स्तरीय फुटबॉल खिलाड़ियों को तैयार करना है। इस विषय पर बात करने के लिए नई दिल्ली स्थित प्रेस क्लब ऑफ इंडिया में प्रेस वार्ता का आयोजन किया गया जिसमे सभी क्लब से जुड़े प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसमे दिल्ली फुटबॉल एसोसिएशन के उपाध्यक्ष एन के भाटिया, कार्यकारी निदेशक, कार्यकारी निदेशक पूर्व निदेशक फीफा यू-17 वर्ल्ड इंडिया पूर्व निदेशक एस ए आई पूर्व प्रमुख एन ए आई एएस डॉ.बीरूमल, महानिदेशक सीएसडी म्युनिसिपल जुआन पाब्लो रेनोसो व चैयरमेन न्यू स्पोर्ट्स ग्रुप के वसीम अल्वी उपस्थित हुए। सीएसडी म्युनिसिपल (ग्वाटेमाला) ग्वाटेमाला सिटी में स्थित एक प्रोफेशनल फुटबॉल क्लब है, वे ग्वाटेमाला फुटबॉल के शीर्ष स्तर लीगा नैशनल में भाग लेते हैं। टीम ने 1942-43 टूर्नामेंट में अपना पहला राष्ट्रीय लीग खिताब जीता, ग्वाटेमाला में पहली आधिकारिक राष्ट्रीय लीग चैंपियनशिप और 1974 में CONCA-CAF चैंपियनशिप कप जीता। म्यूनिसिपल ग्वाटेमाला में सबसे प्रसिद्ध फुटबॉल क्लब है। जुआन पाब्लो रेनोसो (प्रतिनिधि), महानिदेशक, सीएसडी म्युनिसिपल (ग्वाटेमाला) मैत्रेयी कॉलेज में 2 दिवसीय फुटबॉल क्लिनिक का आयोजन 18 अगस्त 2023 तक ग्वाटेमाला फुटबॉल कोच से अग्रिम फुटबॉल प्रशिक्षण सीखने के लिए 300-400 युवा फुटबॉल खिलाड़ी नि:शुल्क भाग लेंगे। उत्तरी भारत एफ.सी और सीएसडी म्यूनिसिपल एफसी ग्वाटेनमाला फुटबॉल के क्षेत्र में सहयोग कर रहे हैं और एक एक्सचेंज कार्यक्रम शुरू कर रहे हैं जो भारत के युवा खिलाड़ियों को लैटिन अमेरिका में नई जड़ें तलाशने में मदद करेगा।

मां-बाप की सेवा-सम्मान करोगे तो जिंदगी में मिलेगी सुख-शांति समृद्धि : महाराज

नई दिल्ली, 16 अगस्त (देशबन्धु)। श्री कृष्णागिरी पार्श्व पद्मावती शक्तिपीठ तीर्थ धाम शक्तिपीठाधिपति मंत्र शिरोमणि राष्ट्रीय संत परम पूज्य गुरुदेव श्री वसंत विजय जी महाराज के सानिध्य में आयोजित 55 दिवसीय शिव महापुराण, यज्ञ, अखंड रुद्राभिषेक महाउत्सव आज छठे दिन में प्रवेश कर गया। बुधवार को छत्तरपुर मार्कंडेय हाल में आयोजित शिव कथा, यज्ञ में सनातन मंत्रों की शक्ति का दिव्य नजारा देखने को मिला। राष्ट्रीय संत वसंत विजय महाराज के शिव दरबार में चमत्कारों की झड़ी लग गयी। चमत्कार का नजारा यह था कि कथा पंडाल तो छोड़ो तो देश और विदेश तक में कहीं कुमकुम बरसा तो कहीं अपने आप ही दीपक प्रज्वलित हो उठे। कितने भक्तों को अपने ईष्ट देवताओं कुलदेवी देवताओं के साक्षात दर्शन हुए। किसी को भगवान शिव तो किसी को भगवान कृष्ण ने दर्शन दिए। इसके अलावा भक्तों पर लक्ष्मी मां भी मेहरबान हुईं। शिव दरबार में कथा की शुरुआत राष्ट्रीय गान से हुई। संत वसंत विजय जी महाराज साहेब ने स्वतंत्रता दिवस के मौके पर देशवासियों को शुभकामनाएं दी। गुरुदेव ने हजारों की संख्या में शिव दरबार में उमड़ी भक्तों की भीड़ को आज अमावस्या के मौके पर एक अकाट्य मंत्र कवच दिया।

राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से किया गया सम्मानित

नई दिल्ली,16 अगस्त (देशबन्धु)। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग दिल्ली सरकार के तत्वावधान में कांस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इंडिया में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग दिल्ली सरकार के चेयरमैन जगदीश यादव ने विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाले लोगों को राष्ट्रीय एकता पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अलग-अलग राज्यों से आए कई लोगों ने पुरस्कार पाकर अपने को गौरवान्वित महसूस किया। पुरस्कार पाने वालों में जयश्री बालासाहेब थोराट, अड़. विपिन नंदवानी, डॉ. आर.जे. बरनबास, देवदान कलकुम्बे, डॉ.तरूण शर्मा, सुनील कुमार, सुमित गुप्ता, राजेश जॉन पॉल, हरप्रीत सिंह दुग्गल, अभिषेक चावला, मीनल शिंदे, रसिका, पायल चावला आदि को पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में संयोजक के रूप में अनूप चावला एवं डॉ.भरत झा रहे। इस मौके पर सारांश महाजन सहायक आयुक्त जीएसटी, रिटायर चीफ फायर अधिकारी डॉ. धर्मपाल भारद्वाज, शास्त्रीय गायक पंडित बलदेव राज वर्मा आदि मौजूद रहे।

ग्रेटर नौएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

भूखण्ड संख्या-1, सैक्टर नॉलेज पार्क-4 ग्रेटर नौएडा
जिल-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि Flat No. 163, Block/Tower-H, 1st Floor, Gaur Atulyam, Area-120.77 Sqm., Sector-Omicron-I, Greater Noida जो कि Sh. Jeet Lal Taneja & Mrs. Shashi Taneja निवासी Flat No. 163, Block/Tower-H, 1st Floor, Gaur Atulyam, Sector-Omicron-I, Greater Noida के नाम पर उप निबंधन कार्यालय, सदर गौतमबुद्ध नगर में दिनांक-03.12.2019 को पंजीकृत है। Sh. Jeet Lal Taneja की मृत्यु के उपरान्त उनके पत्नी व पुत्र Mrs. Shashi Taneja & Mr. Gaurav Taneja ने उक्त भूखण्ड/भवन में अपने पति/पिता के भाग का नामांतरण प्रस्तुत किये है। अतः इस म्यूटेशन के सम्बन्ध में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन तिथि के 35 दिन के अन्दर अपनी लिखित आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखो में Mrs. Shashi Taneja & Mr. Gaurav Taneja का नाम दर्ज कर दिया जायेगा।

प्रबन्धक (बिल्डर्स)
ग्रेटर नोएडा औ0 वि0 प्राधिकरण

सड़क किनारे खड़े खराब वाहनों के खिलाफ हो कार्रवाई : शैली

- महासफाई अभियान के अंतर्गत मेयर ने जोशी रोड क्षेत्र का किया निरीक्षण

नई दिल्ली,16 अगस्त (देशबन्धु)। दिल्ली को कूड़ा मुक्त करने के लिए अब दिल्ली होगी साफ पहल शुरू की गई है। इसकी कमान खुद मेयर डॉ शैली ओबरॉय ने संभाली हुई है। पिछले चार दिनों में मेयर आधा दर्जन से अधिक वार्डों का औचक निरीक्षण कर चुकी है। मेयर डॉ. शैली ओबरॉय ने बुधवार को महासफाई अभियान के अंतर्गत करोल बाग क्षेत्र के वार्ड-83 में जोशी रोड क्षेत्र का निरीक्षण किया। सफ़ाई कर्मचारियों का मनोबल बढ़ाने के लिए मेयर ने क्षेत्रीय पार्षद के साथ स्वयं झाड़ू लगाया और इस अभियान को सफल बनाने की नागरिकों से अपील की। मेयर डॉ शैली ओबरॉय ने क्षेत्रीय पार्षद व निगम अधिकारियों के साथ क्षेत्र में चल रहे सफाई अभियान का जायज़ा लिया। मेयर ने निगम अधिकारियों को निर्देश दिए कि सफाई व्यवस्था में बाधा बन रहे सड़क किनारे खड़े ख़राब वाहनों के ख़िलाफ़ उचित कार्रवाई की जाए। वार्डों में जहां ज़्यादा कूड़ा होता है, उन स्थानों को चिन्हित किया जाए। वहां साफ-सफाई व सौंदर्यीकरण कार्य किये जाएं। दिल्ली नगर निगम यह महा-सफाई अभियान पूरे वर्ष चलाएगा। इसके अंतर्गत तीन हजार टीमों का गठन किया गया है। हर टीम 50 गलियों का निरीक्षण कर रही है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए क्षेत्रों की आरडब्लूए व मार्केट एसोसिएशन भी आगे आकर अभियान का हिस्सा बन रही हैं। मेयर ने कहा कि वे बिना किसी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के वार्डों का दौरा करती रहेंगी।

यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

प्रथम तल, कॉमशियल कॉम्प्लेक्स, पी-2, सैक्टर-ओमेगा-1, ग्रेटर नोएडा, जनपद गौतमबुद्ध नगर-201308 (उ0प्र0)

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उपजिलाधिकारी, सदर परिवार सदस्यता प्रमाण पत्र 1451/एस0टी0-एस0डी0एम0/2022 दिनांक 19.12.2022 के अनुसार ग्राम धनौरी में निम्न प्रकार मृतक के स्थान पर उनके पारवारिक सदस्यों के नाम दर्ज किये जाने प्रस्तावित है।

ग्राम का नाम	खसरा संख्या	मृतक काश्तकार का नाम	मृतक के परिवारिक सदस्यों के नाम	आयु लगभग वर्ष में	मृतक से संबंध
धनौरी	730 734 1345	श्रीमती रामो देवी पत्नी स्व0 रामपाल सिंह व रामपाल सिंह पुत्र श्री पैमी नि0 जुनैदपुर की मढैया परगना दनकौर तहसील व जिला गौतमबुद्धनगर	श्रीमती कृष्णा देवी पत्नी स्व0 विनोद कुमार नागर	47	पुत्रवधु
			श्री हरेन्द्र नागर पुत्र स्व0 विनोद कुमार नागर	27	पौत्र
			श्री गौरव नागर पुत्र स्व0 विनोद कुमार नागर	22	पौत्र
			मीनाक्षी नागर पुत्री स्व0 विनोद कुमार नागर	24	पौत्री
			श्रीमती धीरो देवी	62	पुत्री विवाहित
			श्रीमती मैमवती	52	पुत्री विवाहित
			श्रीमती सुधा	43	पुत्री विवाहित
			श्रीमती सीमा	40	पुत्री विवाहित

उपरोक्त वारिसानों के संबंध में यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 15 दिन के अंदर अपनी आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखों में मृतक के स्थान पर उनके पारिवारिक सदस्यों के नाम 07 प्रतिशत आबादी भूखण्ड, 64.7 प्रतिशत अतिरिक्त प्रतिकर या प्राधिकरण द्वारा अन्य अनुमन्य लाभ संबंधी अभिलेखों में दर्ज करा दिया जायेगा।

तहसीलदार
यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण

ग्रेटर नोएडा औद्योगिक विकास प्राधिकरण

भूखण्ड संख्या-01, सैक्टर नॉलेज पार्क-4, ग्रेटर नोएडा सिटी-201310
जिला-गौतमबुद्ध नगर।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम/सैक्टर-धंधोला की प्रस्तावित आबादी में आवंटित आवंटन संख्या-जी.यू.एल.0116, भूखण्ड संख्या-8, क्षेत्रफल-550 वर्ग मीटर श्री किशन लाल पुत्र श्री मंगल, निवासी-ग्राम-तिलपता, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 के पक्ष में आवंटित किया गया था। आवंटी श्री किशन लाल पुत्र श्री मंगल की मृत्यु के उपरांत इनके सर्वश्री संताराम, महेन्द्र सिंह पुत्रगण स्व० श्री किशन लाल, सर्वश्री आशोक कुमार, पवन कुमार पुत्रगण श्री शेर सिंह, श्रीमती विमला पत्नी श्री शेर सिंह, श्रीमती उषा रानी (विवाहित) श्रीमती कविता (विवाहित) श्रीमती जयंती (विवाहित), श्रीमती सविता रानी (विवाहित) पुत्रीगण श्री शेर सिंह पौत्रगण/पुत्रबधु/पौत्रीगण स्व० श्री किशन लाल, निवासी-ग्राम-तिलपता करनवास, ग्रेटर नोएडा, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 में से सर्वश्री संताराम, महेन्द्र सिंह पुत्रगण स्व० श्री किशन लाल, निवासी-ग्राम-तिलपता करनवास, ग्रेटर नोएडा, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 के पक्ष में नामांतरण करने हेतु नामांतरण प्रपत्र एवं शपथ-पत्र प्रस्तुत किये गये है। अतः इस नामांतरण के संबंध में किसी को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन की तिथि से 35 दिन के अन्दर अपनी लिखित आपत्ति प्राधिकरण कार्यालय में दर्ज कराने का कष्ट करें, अन्यथा नियमानुसार प्राधिकरण अभिलेखो में इनके सर्वश्री संताराम, महेन्द्र सिंह पुत्रगण स्व० श्री किशन लाल, निवासी-ग्राम-तिलपता करनवास, ग्रेटर नोएडा, जिला-गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 के पक्ष में सह आवंटी के रूप में दर्ज कर दिया जायेगा।

प्रबन्धक (कृषक आबादी)
ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण

कैपिटल ज़ोन

उवाच

मैं इस शहर के लिए नया हूं लगातार शहर का भ्रमण कर रहा हूं। जहां भी जा रहा हूं शहर अच्छा बना हुआ है। शहर इसलिए सुंदर है क्योकि बहुत साफ सुथरा है। स्वच्छ सर्वेक्षण में पिछले साल नोएडा पूरे देश में 11वें रैंक पर था। हम इस साल और मेहनत करना होगा ताकि हमारी रैंक इम्प्रूव हो जाए:-

लोकेश एम, सीईओ नोएडा प्राधिकरण

पुलिस ने अमेजन के फर्जी डिलिवरी ब्वॉय को किया गिरफ्तार

नोएडा, 17 अगस्त (देशबन्धु)। पुलिस ने एक ऐसे शातिर ठग को गिरफ्तार किया है जो दूसरे व्यक्ति के पहचान पत्र और आधार कार्ड देकर नाम बदलकर नौकरी करता था। और मौका मिलते ही बड़ा हाथ मारकर फरार हो जाता था।

■ दूसरे व्यक्ति की आईडी से कंपनी में करता था नौकरी, अप्रैल में चोरी किए थे 12 एप्पल मैक बुक

थाना फेस-3 पुलिस ने आरोपी गठ को गढ़ी गोलचक्कर के पास से गिरफ्तार किया है। इसकी पहचान पंकज सिंह पुत्र लाल सिंह हुई है। दरअसल एमएम लॉजिस्टिक कंपनी (अमेजन कंपनी) के लिए डिलिवरी का काम करता है। इसकी कंपनी में डिलिवरी ब्वाय दीपक नागर काम कर रहा था। हाल ही में लॉजिस्टिक से दीपक नागर 12 एप्पल मैक बुक लेकर फरार हो गया। इसके बाद से दीपक का नंबर बंद आ रहा था। कंपनी ने इसकी जानकारी पुलिस को दी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू की। कंपनी की ओर से दीपक का आधार कार्ड और अन्य दस्तावेज दिए गए। पुलिस तफ्तीश करते हुए दीपक के पास पहुंची। लेकिन ये डिलिवरी ब्वाय था ही नहीं। असली ठग पंकज सिंह था जो दीपक के आधार कार्ड और पहचान पत्र का प्रयोग करके एमएम लॉजिस्टिक कंपनी (अमेजन कंपनी) में नौकरी कर रहा था। पंकज ने ही एमएम लॉजिस्टिक कंपनी में डिलिवरी ब्वाय का काम करते हुए अमेजन के वेयर हाउस सेक्टर 67 से 22 अप्रैल 2023 को धोखाधडी कर 12 एप्पल मैक बुक लेकर फरार हो गया था।

न्यू नोएडा देश का सबसे बड़ा इन्वेस्टमेंट हब होगा: लोकेश एम

नोएडा, 17 अगस्त (देशबन्धु)। नोएडा प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम ने कहा कि मैं इस शहर के लिए नया हूं लगातार शहर का भ्रमण कर रहा हूं। जहां भी जा रहा हूं शहर अच्छा बना हुआ है। शहर इसलिए सुंदर है क्योकि बहुत साफ सुथरा है। स्वच्छ सर्वेक्षण में पिछले साल नोएडा पूरे देश में 11वें रैंक पर था। हम इस साल और मेहनत करना होगा ताकि हमारी रैंक इम्प्रूव हो जाए। नोएडा 240 वर्गकिमी में बसा है। यहां दिल्ली से बहुत लोग आते है। बढ़ती आबादी को देखते हुए हमे इंफ्रास्ट्रक्चर बढ़ाना होगा। यानी मकान, सड़क चौड़ी करनी होगी। बोर्ड बैठक में न्यू नोएडा में मास्टर प्लान अप्रूव कराया। ये न्यू नोएडा हमे 210 वर्गमीटर में बसाना है। 84 गांवों में बसाना है। इसमें बहुत अच्छी सड़क बनेगी। ग्रीनरी भी सुरक्षित करना होगा। न्यू नोएडा देश का सबसे बड़ा इंवेस्टमेंट शहर होगा। न्यू नोएडा में बड़े बड़े प्लाट काटेंगे इसमें बड़ी बड़ी कंपनी आएंगी। जिससे लोगों को नौकरी मिलेगी। ग्रोथ करेगा जिससे तीनों प्राधिकरण स्ट्रांग होगा। जल्द ही जमीन अधिग्रहण को लेकर एक वित्तीय मॉडल तैयार किया जाएगा। कर्मचारियों से कहना चाहता हूं। हमें किसानों से प्रति व्यवहार सौम्य रखना होगा। न्यू नोएडा में भी जमीन अधिग्रहण करे तो वहां भी किसानों के साथ बेहतर व्यवहार करे। हमें पब्लिक के साथ बेहतर व्यवहार करना होगा। पब्लिक की समस्या को दूर करना होगा। पब्लिक की समस्या को दूर करना है। एक बात और हमे नोएडा प्राधिकरण का पैसा संभल कर खर्च करना है क्योकि ये पब्लिक का पैसा ही है। इसलिए जो भी खर्च करे पब्लिक के हित के लिए किया जाए।

■ पब्लिक और किसानों की समस्या हल करना हमारी प्राथमिकता

आवारा गाय दिखी तो मालिक को देना होगा 10000 जुर्माना

नोएडा, 17 अगस्त (देशबन्धु)। सड़कों पर घूम रही आवारा गौंवश के पकड़े जाने पर उनके मालिकों पर जुर्माना की रकम को डबल कर दिया गया है। अब उन्हें गौवंश छुड़ाने के लिए 10 हजार रुपए बतौर जुर्माना देना होगा। ये गलती दोबारा होने पर जुर्माने की रकम 15000 रुपए और तीसरी बार में 20 हजार रुपए देने होंगे साथ ही संबंधित थाने में मालिक के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया जाएगा। नोएडा प्राधिकरण के डीजीएम एसपी सिंह ने बताया कि लगातार सड़को पर आवारा पशुओं के दिखने की शिकायत मिल रही है। इसको देखते हुए जुर्माना की रकम को बढ़ाया गया है। उन्होंने बताया कि सड़कों पर घूम रहे आवारा पशुओं को कैटल कैचर वाहन के जरिए सेक्टर-14ए शनि मंदिर के पास स्थित गौशाला और सेक्टर-135 स्थित गौशाला में रखा जाता है। अब से पहले इन गायों को छुड़ाने के लिए मालिकों पर 5000 हजार जुर्माना लगाया जाता है। जिसमें बढ़ोतरी की गई है। पहला पालतू दुधारू पशुओं से दुग्ध व्यापार करने वाले नोएडा वासी गौवंश, भैसों का सुबह दूध निकालने के बाद उन्हें खुला छोड़ देते है। ये नोएडा में घूम-घूम कर जगह-जगह उगी घास व भोजन खाते है। दूसरा कारण पशु पालकों द्वारा गाय और भैसों को तब तक पाला जाता है जब तक वे दूध देते है। दूध देने वाले गौवंश गंभीर बीमारी से ग्रसित होने या दूध देना बंद कर देने पर उन्हें नोएडा के मार्ग पर छोड़ दिया जाता है। ऐसे पशुपालकों के खिलाफ भी एक्शन लिया जाएगा।

■ दूसरी बार 15000 और तीसरी बार में 20 हजार जुर्माना के साथ होगी एफआईआर

सिटी बस टर्मिनल का सीईओ ने किया निरीक्षण

■ अंतर राज्जयीय और अंतर जनपदीय बसों को बढ़ाने के निर्देश ■ स्पेस का किया जाए बेहतर प्रयोग

नोएडा। नोएडा प्राधिकरण के सीईओ लोकेश एम ने नोएडा ट्रैफिक सेल की ओर से बनाए गए सेक्टर-82 में नव निर्मित सिटी बस टर्मिनल का निरीक्षण किया। इसके बाद इसकी उपयोगिता को लेकर एक विस्तृत बैठक की गई। बैठक में एनटीसी के अधिकरी मौजूद रहे। सीईओ ने सिटी बस टर्मिनल में निर्मित विभिन्न तलों का अधिकतम उपयोग नहीं होने पर आपत्ति जाहिर की। उन्होंने निर्देश दिए कि सिटी बस टर्मिनल में अंतर-जनपदीय व अंतर-राज्जयीय बसों की संख्या को बढ़ाया जाए। ताकि आमजन को आवागमन के लिए दिल्ली या अन्य शहरों के टर्मिनल न जाना पड़े। इस दौरान, सिटी बस टर्मिनल में कॉमर्शियल व ऑफिस स्पेस वाली जगहों के उपयोग के लिए वाणिज्यिक व संस्थागत विभागों को आवंटन योजना लाने के निर्देश दिए। वहीं संस्थागत, औद्योगिक व वाणिज्यिक विभाग के संबंधित अधिकारी स्वयं भ्रमण कर खाली पड़े स्पेसेस के संबंध में रिपोर्ट प्रस्तुत करें। टर्मिनल पर फुट फॉल बढ़ाने के लिए यहां फूड फेस्टिवल, सिटी ऑफिस अपेरल थीम पर विभिन्न एग्जिबिशन आयोजित की जाए।

'मेडिसिन मार्केट में बीसीडीए के तत्वाधान में धूमधाम से बना 77वां स्वतंत्रता दिवस'

बुलंदशहर, 16 अगस्त (देशबन्धु)। केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन (बीसीडीए) के तत्वाधान में मेडिसिन मार्केट बुलंदशहर में ध्वजारोहण कर स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया। इस अवसर सभी दवा व्यापारियों ने संयुक्त रूप से ध्वजारोहण किया ध्वजारोहण के पश्चात सभी ने राष्ट्रगान किया वह भारत माता की जयकारों से पूरा प्रांगण गूंज उठा उसके उपरांत सभी ओजस्वी वक्ताओं ने अपने अपने विचार रखे और देश के प्रति अपने राष्ट्रप्रेम को बखान करते हुए सभी अमर जवान शहीदों को नमन किया व श्रद्धांजलि अर्पित करी किस प्रकार अमर शहीदों के कारण हमें आजादी मिली उन सभी बातों का जिक्र किया और वर्तमान समय में किस प्रकार भारत विश्व गुरु बनाकर आगे बढ़ रहा है पूरा विश्व हमारे भारत को अच्छी नजर से देख पा रहा है आज सभी व्यापारी देश की अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं और इस बीसीडीए के सभी दवा व्यापारी सद्भावना से सभी धर्म के लोग भाईचारे वह एक जुटता के साथ मिलकर कम कर रहे हैं पूरे जिले का यह संगठन सभी के लिए मिसाल है किस प्रकार यहां एकजुटता से प्रेम भाव से सभी लोग कम कर रहे हैं। इस अवसर पर अध्यक्ष गौरव गर्ग, उपाध्यक्ष पुनीत अग्रवाल, महासचिव नीरज अग्रवाल, सहसचिव आनंद अग्रवाल, कोषाध्यक्ष देवेंद्र कुमार, चेयरमैन देवेश त्यागी ,संरक्षक नलिन अग्रवाल, प्रदीप अग्रवाल, प्रमोद सिंघल, संगठन मंत्री अभिनव वर्मा, प्रिंस अग्रवाल, संजय साहनी, मुजम्मिल खान, पंकज गुप्ता, अभिषेक आर्य, विशन आर्य, अरुण चौधरी, पप्पू त्यागी, अनुराग जिंदल, हिर्देश अग्रवाल ,मनोज अग्रवाल, संजय गोयल, सुशील गोयल, गर्वित, आकाश गोयल, अमित गोयल, मनोज गोयल, पंकज मलिक, जितेंद्र तोमर, उज्जवल गोयल आदि मुख्य रूप से रहे।

हर्ष फायरिंग का वीडियो वायरल

नोएडा, 17 अगस्त (देशबन्धु)। सेक्टर-63 पुलिस ने मंगलवार को हर्ष फायरिंग करने पर लाइसेंसी बंदूक के साथ एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया। आरोपी कंपनी के कॉरिडोर में हर्ष फायरिंग कर रहा था। थाना प्रभारी ने बताया कि छिजारसी में किराए के मकान में रहने वाले लक्ष्मीकांत मिश्रा ने मंगलवार को अपनी लाइसेंसी बंदूक से हर्ष फायरिंग की। लक्ष्मीकांत मिश्रा एक कंपनी में बतौर गार्ड के रूप में काम करते है।

■ लाइसेंसी बंदूक के साथ किया गया गिरफ्तार, आरोपी कंपनी में है गार्ड

फायरिंग की वजह से से आम लोगों की जान को खतरा उत्पन्न हो रहा था। मामले की सूचना मिलते ही पुलिस ने आरोपी को उसकी लाइसेंसी बंदूक के साथ गिरफ्तार कर लिया। आरोपी मूलरूप से इलाहाबाद का रहने वाला है। वह एक कंपनी में गनमैन है। आरोपी के खिलाफ आयुध अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। दरसअल आरोपी का फायरिंग करते हुए वहीं खड़े लोगों ने वीडियो बना लिया। वीडियो आठ सेकेंड का है। जिसमें साफ दिख रहा है कि आरोपी अपनी लाइसेंसी बंदूक से एक फायर करता है। इसके बाद बंदूक की नली को खाली करता है। ये वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो गया। किसी ने पुलिस को ट्विट कर आरोपी पर सख्त कार्यवाही करने के लिए कहा। पुलिस ने इलेक्ट्रॉनिक सर्विलांस के आधार पर आरोपी को कंपनी के बाहर से गिरफ्तार करते हुए। बंदूक को जब्त किया।

अनोखे अंदाज में जीडीए सचिव ने मनाया स्वतंत्रता दिवस

पार्कों में टहल रहे नागरिकों से की मुलाक़ात और व्यवस्था सुधार के लिए मांगे सुझाव

गाजियाबाद, 17 अगस्त (देशबन्धु)। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर जहां लोगों ने ध्वज ध्वजारोहण वह रंगारंग कार्यक्रम के साथ मनाया वही गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के सचिन राजेश कुमार सिंह ने अनोखे अंदाज में स्वतंत्रता दिवस मनाया मंगलवार को उन्होंने जहां गाजियाबाद प्रकाश प्राधिकरण में ध्वजारोहण किया वहीं शहर के दो पार्कों में ब्राह्मण भ्रमण भ्रमण किया और योगा कर रहे लोगों से मुलाकात कर उनका हालचाल जाना राजेश कुमार सिंह ने लोगों से सुझाव भी मांगे।

■ पार्क को और अच्छा करने के लिए दे सकते हैं सुझाव व मार्गदर्शन

मंगल्वत को आज जीडीए सचिव राजनगर के मानव औषधि पार्क सेंट्रल पार्क तथा उसे जुड़े हुए दो और पार्कों में पहुंचे और निरीक्षण किया गया। वहां पर उन्होंने मॉर्निंग वॉक कर रहे व योग कर रहे लोगों से वार्ता की ।उनसे यह भी अनुरोध किया गया कि यदि उनका कोई सलाह या कोई मार्गदर्शन हो पार्क को और अच्छा करने में तो वह दे सकते हैं। सामान्य तौर पर सभी लोग उन पार्कों के रखरखाव से संतुष्ट दिखे। श्री सिंह ने जीडीए परिसर में ध्वजारोहण भी किया।

जयपुरिया कॉलेज में आयोजित हुई कार्यशाला

नोएडा, 17 अगस्त (देशबन्धु)। सेक्टर-62 स्थित जयपुरिया इंस्टिट्यूट ऑफ मैनेजमेंट में महिलाओं की आत्मसुरक्षा व साइबर सुरक्षा के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्याशाला में पुलिस उपायुक्त महिला सुरक्षा प्रीति यादव ने महिलाओं को जागरुक किया। उन्होंने कहा कि आज की महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ रही है और स्वयं के साथ-साथ अपने परिवार की जिम्मेदारियां उठा रही है। कभी-कभी महिलाओं को कार्यस्थल या रास्ते में छींटाकशी या अन्य कठिनाई का सामना करना पड़ जाता है। ऐसे में महिलाओं को चुप नहीं रहना चाहिए बल्कि आगे आकर ऐसे व्यक्तियों की शिकायत तुरंत अपने नजदीकी पुलिस स्टेशन पर देनी चाहिए ताकि ऐसे मामलों में कड़ी कार्रवाई की जा सके। जनपद के प्रत्येक थाने पर महिला हेल्प डेस्क बनी हुई है। वहां पर हर समय महिला पुलिसकर्मी द्वारा गोपनीयता बनाए रखते समस्याओं को सुना जाता है। यदि आपको को कोई भी व्यक्ति रास्ते में, कार्यस्थल पर, फोन पर या अन्य किसी माध्यम से परेशान करने की कोशिश करता है तो इसके संबंध में तुरंत महिला हेल्प डेस्क पर सूचना दीजिए। उनके द्वारा महिला सुरक्षा चक्र के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए वूमेन पावर लाइन-1090, चाइल्ड हेल्प लाइन 1098, महिला हेल्पलाइन 181 व पुलिस हेल्पलाइन नंबर डायल-112 के बारे में बताया गया। जागरूकता कार्यक्रम के दौरान महिलाओं को विभिन्न साइबर अपराधों के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए साइबर हेल्पलाइन 1930 व साइबर अपराध से बचाव के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी गयी।

■ पुलिस उपायुक्त ने महिलाओं को आत्मरक्षा और साइबर सुरक्षा के लिए किया जागरुक

अनजान फोन कॉल व वीडियो कॉल नहीं उठाने चाहिए व लालच में आकर किसी के साथ अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए क्योंकि वीडियो लाइक करने के बहाने पैसे देने का लालच देकर आपके साथ साइबर फ्रॉड हो सकता है। यातायात पुलिस उपनिरीक्षक द्वारा यातायात नियमों से अवगत कराते हुए सड़क दुर्घटनाओं से किस प्रकार बचाव किया जा सकता है जानकारी देकर जागरूक किया गया।

नई पहल: निगम कार्यकारिणी बैठक में पीडब्ल्यूडी, जल निगम तथा जीडीए के रहेंगे शामिल

गाजियाबाद, 17 अगस्त (देशबन्धु)। नगर निगम प्रशासन ने शहर हित में अब एक नई पहल की है। अब नगर निगम कार्यकारिणी की बैठक में पीडब्ल्यूडी, जल निगम तथा जीडीए के अधिकारी भी शामिल रहेंगे। ताकि सम्बंधित विभागों के बीच समन्वय रहे और शहर का विकास बेहतर ढंग से हो सके।

नगर आयुक्त कैंप कार्यालय पर पार्षदों की बैठक में इस बार तीन कार्यकारिणी सदस्य प्रवीण कुमार, आदिल मलिक तथा राजकुमार भाटी भी उपस्थित रहे। जिनके द्वारा कार्यकारिणी बैठक में पीडब्ल्यूडी जल निगम तथा गाजियाबाद विकास प्राधिकरण के संबंधित अधिकारियों को भी आमंत्रित करने का विषय रखा गया। कार्यकारिणी में उठाए जाने वाले विषय नगर निगम के साथ-साथ अन्य विभागों के अधिकारियों से भी संबंधित होते हैं जिसको देखते हुए नगर आयुक्त ने इस सुझाव को मान लिया।

आईजीआरएस में कोताही बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ होगी करवाई: राकेश सिंह

गाजियाबाद, 17 अगस्त (देशबन्धु)। महात्मा गांधी सभागार कलेक्ट्रेट में जिलाधिकारी ने बुधवार को आईजीआरएस की बैठक सम्पन्न हुई। उन्होंने कार्य मे कोताही बरतने वाले अधिकारियों के खिलाफ कारवाई की चेतावनी दी। साथ ही उन्होंने आईजीआर एस के तहत आने वाली जनशिकायतों को समय सीमा के भीतर गुणवत्तापूर्ण निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने विभागों द्वारा शिकायतों पर दी गयी आख्यों पर टिप्पणी करते हुए कहा कि जिन शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण नहीं किया गया है उन्हें प्रतिकुल प्रविष्टि दी जाये। उन्होने आदेश दिये। जिलाधिकारी ने आदेश दिये कि सभी विभाग के अधिकारी कार्यदिवस पर प्रतिदिन दर्पण पोर्टल को चैक कर उनमें आई शिकातयों का निस्तारण करें और एडीएम से सीडीओ स्तर तक के अधिकारी 10 से 12 तक अपने कार्यालय पर जनसुनवाई करते हुए जनता की समस्याओं का निस्तारण करें। मुख्यमंत्री की पहली प्राथमिकता जनता की समस्याओं का निस्तारण करना है उसी के अनुरूप सभी अधिकारीगण कार्य करते हुए जनसमस्याओं का निस्तारण करे। यदि ऐसा नहीं पाया जाता है तो उनके खिलाफ लिखित कार्यवाही की जायेगी। इस अवसर पर एडीएम रणविजय सिंह, उपनिदेश कृषि रामजतन मिश्रा सहित सभी विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे।

'संयुक्त किसान मजदूर संगठन ने धूमधाम से मनाया देश का 77वां स्वतंत्रता दिवस

नोएडा, 17 अगस्त (देशबन्धु)। मंगलवार 15 अगस्त 2023 को देश की आज़ादी की 77वीं वर्षगांठ के शुभ अवसर पर सेक्टर 9 जे जे कालोनी बैंक ऑफ़ इंडिया के पास अंतरराष्ट्रीय शूटर किसान नेता संयुक्त किसान मजदूर संगठन राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम पंडित व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एडवोकेट दिनेश अवाना ने तिरंगा झंडा फहराकर सभी देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी तथा संगठन के समस्त पदाधिकारियों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर हर्षोल्लास के साथ आज़ादी का जश्न मनाया। इस दौरान राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम पंडित ने अपने संबोधन में कहा कि आज हमारे देश की आज़ादी के 76 वर्ष पूर्ण हो गये हैं देश को आज़ाद कराने में अपना पूरा जीवन न्यौछावर करने वाले महान विभूतियों को हम नमन करते हैं। देश का प्रत्येक नागरिक अमन शांति व आपसी भाईचारे के साथ देश की एकता तथा अखंडता को बनाये रखते हुई जीवन जियें यह हमारे महापुरुषों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस मौक़े पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एडवोकेट दिनेश अवाना, राष्ट्रीय महासचिव शहाबुद्दीन राष्ट्रीय सचिव दिनेश शर्माए राष्ट्रीय सचिव नरेंद्र भाटी, राष्ट्रीय सचिव हरीश लोहियाए प्रदेश अध्यक्ष जितेंद्र चौधरी, पश्चिम उत्तर प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र मुखिया, जिला गौतम बुद्ध नगर युवा अध्यक्ष जीतू शर्माए जिला अध्यक्ष गौतम बुध नगर गजेंद्र भाटी, एनसीआर अध्यक्ष युवा जावेद खान, एनसीआर उपाध्यक्ष युवा प्रवेज, प्रदेश महासचिव धर्म सिंह जीनवाल, एनसीआर महासचिव युवा मोहम्मद चांद, रेडी पटरी अध्यक्ष नवाब खान, झुकी झोपड़ी प्रकोष्ठ अध्यक्ष सनवीर हुसैनए छात्र सभा अध्यक्ष ओसामा सोशल मीडिया अध्यक्ष गुलफाम, महिला युवा उपाध्यक्ष गुलाबसा, महिला युवा उपाध्यक्ष शबनम, सलीम सैफी, रणवीर भाटी व अन्य सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

जी20 समिट की तैयारी को लेकर बैठक में हुआ मंथन

गाजियाबाद, 17 अगस्त (देशबन्धु)। जी20 समिट कार्यक्रम को लेकर जिलाधिकारी ने अन्य विभागों के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक समिट की तैयारी को लेकर कई घंटे तक मंथन किया गया। जिलाधिकारी राकेश कुमार सिंह ने बताया कि जी20 समिट में 40 देशों के राष्ट्रध्यक्ष सम्मलित होंगे। उन्होने कहा कि उनके आगमन से पूर्व ही सड़के, नाली, ग्रीन बैल्ट, लाईटिंग व्यवस्था सहित अन्य सौदर्यकरण के कार्य शत प्रतिशत पूर्ण कर लिये जाए। जिलाधिकारी ने उपस्थित अधिकारियो को निर्देशित करते हुए कहा कि पीडब्लूडी एवं नगर निगम, जीडीए अपने-अपने विभाग के क्षेत्र में पड़ने वाली सभी सड़कों को गड्ढा मुक्त कर पैटिंग कराये। जिलाधिकारी ने जी-20 टीम रूट पर निर्धारित कार्य बिन्दु पर प्रकाश डालते हुए निर्देशित किया कि नाली कही भी टूटी हो, उसकी मरम्मत हो, नाली ढकी हो तथा चैम्बर पर ढक्कन लगा हो, नाली और सड़क के बीच में इण्टरलॉकिंग लगा हो, रास्ते में कहीं जल भराव हो तो उसकी निकासी अवश्य करायी जाये, खम्भों में लाईट जलती हुई पायी जाये, फसाड लाइटिंग, स्पाइरल लाइटिंग की समुचित व्यवस्था हो। मलवा सड़क के किनारे ना पड़ा हो, यदि कोई भी खराब हैण्डपम्प पड़ा हो तो उसकी मरम्मत करायी जाये, गमलों में सूखे पौधे ना हो यदि गमले टूटे-फूटे हों तो उसकी मरम्मत करायी जाये, फसाड पेंटिंग यदि खराब हो तो उसको ठीक कराया जाये, रास्ते में कूड़ा का ढेर ना लगा हो, रास्ते में अवैध होर्डिंग ना लगी हो, इलेक्ट्रिक पोलों पर तारों का जंजाल ना हो, व्यू-कटर आवश्यकतानुसार लगवाया जाये।

■ समिट से पूर्व ही शहर का पूर्ण करे सौदर्यकरण: राकेश कुमार सिंह जिलाधिकारी

■ साफ-सफाई, सुन्दरता सहित लाईटिंग पर दे विशेष ध्यान: जिलाधिकारी

श्री सिंह ने साइनेंज टेढ़ा-मेढ़ा ना हो, झालर एवं लाइटिंग की पूरी व्यवस्था हो, ट्री अर्नामेंट लाइट तथा अन्य लाइटिंग अर्नामेंट का कार्य ठीक हो, पूरे जी0-20 में लैंडस्कोपस डेकोरेशन को ठीक कराया जाये, बागवानी/हार्टिकल्चर के माध्यम से सौन्दर्यीकरण हेतु आवश्यकतानुसार प्लानिंग किया जाये, कोई भी दुकानदार अपने दुकान का सामान बाहर ना रखे, दुकानदारों द्वारा लगाये गये अनावश्यक साइनबोर्ड को हटवाया जाये सहित सड़कों के किनारों व फूटपाथ पर अवैध अतिक्रमण ना हो इसका विशेष ध्यान रखा जाये। बैठक में नगरायुक्त डॉ.नितिन गौड़, एडीएम सिटी गम्भीर सिंह, एडीएम प्रशासन रणविजय सिंह सहित पुलिस विभाग, नगर निगम विभाग, जीडीए, विकास विभाग सहित सम्बंधित विभाग के अधिकारीगण मौजूद रहे।

पार्षदों एवं जनता की शिकायत पर महापौर ने की डूडा परियोजना अधिकारी के साथ बैठक

गाजियाबाद, 17 अगस्त (देशबन्धु)। लगातार पार्षदो एवं जनता द्वारा डूडा विभाग की शिकायत की जा रही है। डूडा विभाग में प्रधानमंत्री आवास योजना एवं लोन योजना में बहुत लापरवाही हो रही है। जिसके लिए महापौर सुनीता दयाल ने आज परियोजना अधिकारी डूडा संजय पथरिया के साथ बैठक की। जिसमे विभाग द्वारा जांच में भेजे गए लोगो द्वारा जनता को परेशान किया जा रहा है की शिकायत की ग। ई इसके साथ मलिन बस्तियों में डूडा द्वारा अच्छा एवं गुणवत्तापूर्ण कार्य कराया जाना चाहिए हेतु निर्देश दिए गए जिसके लिए परियोजना अधिकारी ने बताया कि जब से मैं आया हूँ तब से कई लोगो पर कार्यवाही कर चुका हूँ और आगे भी अनियमितता मिलने पर कार्यवाही की जाएगी और मलिन बस्तियों में गुणवत्ता पूर्वक कार्य किया जाएगा। हाउस टैक्स में सेटेलमेंट की बात कहे तो मुझे तत्काल अवगत कराएं।

■ प्रधानमंत्री आवास एवं लोन देने में हो पारदर्शिता: महापौर

महापौर सुनता दयाल को हाउस टैक्स के सम्बंध में लगातार शिकायत प्राप्त हो रही है जिसका निस्तारण भी कराया जा रहा है लेकिन महापौर सुनीता दयाल ने शहर की जनता से आग्रह किया है कि आपके आवास पर कोई नया हाउस टैक्स का नोटिस आता है या पुराने हॉउस टैक्स में निगम का कर्मचारी/अधिकारी आपसे टैक्स में समझौता करने की बात कहता है उसकी बातों में न आए और किसी से भी समझौता न करें बल्कि उसकी सूचना तत्काल लिखित रूप में शिकायत दे जिससे कि हॉउस टैक्स चोरी में पर अंकुश लगाया जा सकें।

कैपिटल ज़ोन

उवाच

यात्री एयरपोर्ट के साथ जेवर एयरपोर्ट कार्गो का भी हब बनेगा। अभी आईजीआई से खिलौने, इलेक्ट्रानिक्स उपकरण, कपड़े आदि विदेश भेजे जाते हैं। आईजीआई के कार्गो में सबसे अधिक हिस्सेदारी गाजियाबाद व गौतमबुद्ध नगर जिले की है। इसलिए जेवर एयरपोर्ट कार्गो का भी हब बनेगा :- **डॉ. अरुणवीर सिंह, सीईओ नायल**

कैबिनेट से मंजूरी के बाद फिल्म सिटी निर्माण को लेकर लेकर निकलेगी निविदा

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। यमुना एक्सप्रेसवे औद्योगिक प्राधिकरण के सेक्टर-21 में प्रस्तावित फिल्म सिटी को तीन फेस में विकसित करने की मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित कमेटी ने मंजूरी दे दी है। फिल्म सिटी के बिड डाक्यूमेंट और कंसेशन एग्रीमेंट पर भी मुहर लग गई। अब इसका प्रस्ताव उप्र कैबिनेट में रखा जाएगा। कैबिनेट से मंजूर होने के बाद फिल्म सिटी का बिड निकाला जाएगा। उम्मीद है इस माह के अंत तक फिल्म सिटी का ग्लोबल टेंडर निकाल दिया जाएगा। इससे पहले भी शासन स्तर पर फिल्म सिटी को लेकर बैठक हुई थी, बैठक में तीन बड़े सुझाव पर सहमति बन गई थी। शासन लाइसेंस का समय, मोरोटोरियम समय

■ **मुख्य सचिव दुर्गा शंकर मिश्र की अध्यक्षता में हुई बैठक में बिड डाक्यूमेंट और कंसेशसन एग्रीमेंट को दी मंजूरी**

और लाभांश की हिस्सेदारी में बदलाव कर दिया है। इसी महीने ग्लोबल टेंडर निकाले जाएंगे।

फिल्म सिटी मुख्यमंत्री का ड्रीम प्रोजेक्ट है। इसमें हो रही देरी को लेकर मुख्यमंत्री ने खुद इसकी निगरानी शुरू कर दी है। इसको लेकर पिछले सप्ताह लखनऊ में बैठक भी हुई थी। प्राधिकरण ने फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े लोगों से वार्ता की। उनके सुझाव लिए। लखनऊ में पीपीपी मॉडल वाली परियोजना के बनी बिड इवैल्यूवेशन कमेटी के समय इन सुझावों को रखा गया। अब इन सुझावों को मान लिया गया है। अब इनको बिड डाक्यूमेंट और कंशेसन एग्रीमेंट में शामिल किया जाएगा। कैबिनेट से मंजूरी के बाद इसके टेंडर निकाले जाएंगे। फिल्म सिटी को तीन चरणों में विकसित किया जाएगा। पहला चरण 230 एकड़ में विकसित होगा। पहले चरण के लिए ही टेंडर निकाले जाएंगे। फिल्म इंडस्ट्री से जुड़े लोग लाइसेंसिंग पीरियड 90 साल का का मांग रहे थे। पहले यह 60 साल का था। अब 90 वर्ष कर दिया गया है। पहले मोरोटोरियस पीरियड 4 साल का था। अब इसे बढ़ाकर 7 साल कर दिया गया। पहले रेवेन्यु शेयरिंग फिक्स प्रीमियम 116 करोड़ रुपए और लाभांश में हिस्सेदारी थी। अब केवल लाभांश में हिस्सेदारी है। यह कुल लाभांश का पांच प्रतिशत होगा। इसी से बिडिंग शुरू होगी। चयनित कंपनी को कम से काम 10 हजार वर्ग मीटर के भूखंड को सब लाइसेंस देने की अनुमति रहेगी। पहला चरण 230 एकड़ में विकसित होगा। 156 एकड़ में फिल्म स्टूडियो व बैकलाग बनेगा। 20 एकड़ में फिल्म इंस्टीट्यूट बनेगा। 54 एकड़ में व्यावसायिक गतिविधियां होंगी। इसमें विला, होटल, प्लाजा और टाउनशिप विकसित होगी। टाउनशिप में शूटिंग के लिए रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन, एयरपोर्ट आदि बनाए जाएंगे।

यमुना एक्सप्रेस वे पर कार पिकअप में घुसी, चार घायल दो गंभीर

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। दनकौर कोतवाली क्षेत्र में यमुना एक्सप्रेसवे पर बुधवार सुबह कार और पिकअप गाड़ी के बीच भीषण टक्कर हो गई। हादसे में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार चार लोग घायल हो गए। इनमें दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। कार सवार लोग बांके बिहारी के दर्शन कर मथुरा से नोएडा लौट रहे थे। हादसा पिकअप चालक द्वारा अचानक ब्रेक लगाने पर हुआ। पुलिस द्वारा घटना की जांच की जा रही है। पुलिस के मुताबिक नोएडा के पर्थला गांव निवासी मनीष अपने पिता इंद्र दत्त, माता एवं दोस्त रूपम पांडेय के साथ मंगलवार को बांके बिहारी के दर्शन करने मथुरा गए थे। दर्शन कर बुधवार सुबह कार में सवार होकर यमुना एक्सप्रेसवे के रास्ते घर लौट रहे थे। दनकौर कोतवाली क्षेत्र में पहुंचे तो उनकी कार आगे चल रही बोलेरो पिकअप से टकरा गई। बताया जाता है कि पिकअप चालक ने अचानक ब्रेक लगा दिए। जोरदार टक्कर होने पर कार बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई और उसमें सवार लोग फंस गए। हादसे की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया। साथ ही क्षतिग्रस्त वाहनों को हटा यातायात सुचारू कराया। कोतवाली प्रभारी ने बताया कि घायलों को कैलाश अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

■ **कार सवार मथुरा से नोएडा के लिए आ रहे थे वापस**

इंटर्नशिप, स्टार्टअप और सामूहिक कार्यक्रम को लेकर किया समझौता

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। नॉलेज पार्क स्थित शारदा यूनिवर्सिटी के शारदा लॉन्चपैड विभाग ने फिगफैक्स कंपनी के साथ एमओयू साइन किया। इस दौरान शारदा यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर डॉ. सिबाराम खारा और कंपनी के ऑनर आशु गुप्ता मौजूद रहे है। इसमें स्टूडेंट्स को इंटर्नशिप, स्टार्टअप और ज्वाइंट एक्टिविटी कराई जाएगी। शारदा विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर डॉ. सिबाराम खारा ने कहा कि छात्रों को भविष्य में इससे काफी लाभ होगा। स्टार्टअप के लिये प्लेटफार्म मिलेगा। छात्रों के मार्गदर्शन के लिये संबंधित विषय के विशेषज्ञ से परामर्श की व्यव्यथा कराई जाएगी। किस संस्था से आर्थिक मदद मिल सकती है, इसकी भी जानकारी दी जाएगी। कंपनी के ऑनर आशु गुप्ता ने कहा कि इसमें हम यूनिवर्सिटी के स्टूडेंट्स से आइडिया लेंगे अगर उनके इनोवेटिव आइडिया पसंद आता है, तो कंपनी और यूनिवर्सिटी साथ मिलकर उस पर काम करेगी। जिससे स्टूडेंट्स को स्टार्टअप शुरू करने के लिए फंड भी दिए जाएंगे। शारदा लॉन्चपैड विभाग के डायरेक्टर अमित सहगल ने बताया कि इसमें स्टूडेंट्स के लिए सेमिनार, वर्कशॉप और एक्सपर्ट टॉक का भी आयोजन किया जाएगा और इसमें आज के समय में मार्केट की मांग है क्या है और किस तरह हम अपने इनोवेटिव आइडिया पर काम कर सकते जो ज्यादा इफेक्टिव हो।

सार संक्षेप

गौमाता गौरक्षा मंच के चिकित्सा प्रदेश अध्यक्ष बने डॉ. जगमोहन शर्मा

जेवर। कस्बे के मौहल्ला सराय नैन सिंह निवासी डॉ. जगमोहन शर्मा को गौमाता गौरक्षा मंच से चिकित्सा प्रदेश अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया है। जिसपर गौरक्षा मंच के कार्यकर्ताओं मे खुशी की लहर हैं। गौमाता गौरक्षा मंच के प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार ने उनको ये पद सौंपते हुए कहा कि वह संगठन के लिये ईमानदारी, निष्ठा, सक्रियता के साथ अपना योगदान दें। वहीं डॉ. जगमोहन शर्मा ने कहा कि वह गौ सेवा करते हुए व ईमानदारी और कड़ी मेहनत से अपने पद पर रहते हुए संगठन के लिये कार्य करेंगे। जिसपर कार्यकर्ताओं ने उनका फूल माला पहनाकर स्वागत किया।

ट्रेक्टर की टक्कर से बाइक सवार, गंभीर

जेवर। कोतवाली क्षेत्र के गांव अलावलपुर के समीप यमुना एक्सप्रेस वे की सर्विस रोड पर बुधवार को एक ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। लोगों ने गंभीर अवस्था मे उसे कस्बे के निजी अस्पताल मे भर्ती कराया जहां उसका उपचार जारी है। टप्पल कोतवाली के गांव वैना का रहने वाले रतनपाल ने पुलिस से शिकायत करते हुए बताया कि उनका बेटा राहुल कुमार (23) बुधवार को बाइक द्वारा जेवर जा रहा था। उसी दौरान यमुना एक्सप्रेस वे के सर्विस रोड पर गांव अलावलपुर के समीप सामने से आ रहे एक तेज रफ्तार ट्रेक्टर ने उसकी बाइक मे टक्कर मार दी। हादसे मे राहुल गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर परिवार के लोग मौके पर पहुंचे तथा उसे गंभीर अवस्था मे कैलाश अस्पताल मे भर्ती कराया। मौका पाकर ट्रेक्टर चालक ट्रेक्टर लेकर मौके से फरार हो गया। पीड़ित पिता की शिकायत पर पुलिस ने ट्रेक्टर चालक की तलाश शुरू कर दी है।

सत्रह मोबाइल फोन के साथ एक आरोपी गिरफ्तार, पीजी में घुसकर करता था चोरी

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। बीटा-टू कोतवाली पुलिस ने पीजी में रहने वाले छात्रों के मोबाइल फोन चोरी करने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार किया है, जिसके पास से विभिन्न कंपनियों के 17 मोबाइल बरामद हुए हैं। अभियुक्त रेकी कर घटना को अंजाम देता था। पुलिस अन्य आरोपियों के बारे में पता लगा रही है। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक विनोद कुमार मिश्रा ने बताया कि शहर के विभिन्न सेक्टरों में स्थित पीजी (पेइंग गेस्ट) में रहने वाले छात्रों के मोबाइल फोन चोरी होने की शिकायत मिली थी। इस पर पुलिस टीम गहनता से छानबीन कर रही थी। मुखबिर की सूचना पर मंगलवार को सिटी पार्क के समीप से एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया, जिसकी पहचान कैलाश निवासी रूदी थाना अरनिया बुलंदशहर के रूप में हुई है। कोतवाली प्रभारी ने बताया कि अभियुक्त के कब्जे से विभिन्न कंपनियों के 17 मोबाइल फोन बरामद हुए। अभियुक्त शातिर किस्म का मोबाइल चोर है, जो विशेष रूप से कॉलेजों में पढ़ने वाले छात्रों के कमरे में घुसकर मोबाइल फोन चोरी की घटना को अंजाम देता है। पीजी में रहने वाले छात्र अक्सर कमरे का दरवाजा खुला छोड़कर सो जाते हैं। इसका फायदा उठाकर अभियुक्त रेकी कर चुपके से कमरे में घुसकर चोरी की घटनाओं को अंजाम देता है। आरोपी के अन्य साथियों के बारे में पता लगाया जा रहा है।

वृद्धाश्रम में मनाया गया स्वतंत्रता दिवस समारोह

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। असहाय जरूरतमंद लावारिस वृद्धजनों के सेवार्थ ग्राम नलगढ़ा गांव में पूर्णतया नि:शुल्क संचालित खुशियों की ओर आश्रम के संचालक अशोक कुमार एवं संचालिका दीक्षा ने बुजुर्गों के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया। इस मौके पर बुजुर्गों में मिठाई फल का वितरण किया गया। अशोक कुमार ने बताया कि हमें बुजुर्गों को हर रूप से खुशियां देनी चाहिए, क्योंकि बुजुर्ग ही परिवार की शान होते है। साथ ही साथ दीक्षा ने भी बताया की यहां सभी वह बुजुर्ग हैं जो पूर्णतया अपने बच्चों के द्वारा बहिष्कृत कर दिए गए हैं, हम उन्हें भगवान का रूप मानकर सेवा कर रहे हैं।

जीटी रोड़ के चौड़ीकरण के साथ नाला बनाने की मांग

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। भाजपा नेता व गौ रक्षा हिन्दू दल के संस्थापक अध्यक्ष वेद नागर ने जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर मांग किया कि लालकुआ गाजियाबाद से दादरी गौतमबुद्ध नगर के बीच भारत सरकार पूरे हाइवे को चौड़ीकरण करा रहा है, जिसके चलते व पानी की निकासी ना होने के कारण रोजाना गाड़ी दुर्घटना के चलते लोगों की मौत हो रही है। जीटी रोड़ पर रह रहे लोगों के परेशानी को देखते हुये क्षेत्र के अच्छैजा, सादापुर, बादलपुर, बिशनुली, खेडा, छपरोला आदि समेत रोड़ पर रह रहे गांव के लोगों ने तय किया है कि नाला बनने से पहले रोड़ नहीं बनना चाहिए।

■ **जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर लोगों की समस्या से कराया रूबरू**

रोड चौड़ीकरण के चलते रोजाना की दुर्घटना में लोगों को मरते नहीं देखा जा सकता, नाले से पहले अगर रोड बनता है तो उसका विरोध किया जायेगा और कार्य नहीं करने दिया जायेगा। इस समस्या का समाधान करते हुये नाला बनाकर पानी या तो समतल फैक्ट्री के बड़े नाले में या सादोपुर व धूम के पास बड़े नाले में डाल दिया जाये दोनों तरफ की दूरी मात्र 3 किलो मीटर लगभग है। इस दौरान दीपक नागर, बली ठेकेदार, चमन नागर, अनिल सिंह, राजकुमार, सन्दीप, निखिल, चिराग, विजय कुमार समेत कई लोग मौजूद रहे।

एक लाख की कुश्ती में जोंटी भाटी अजय गुर्जर के बीच हुआ मुकाबला

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। गुरुग्राम के उल्लावास गांव में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर स्व. चौ. धर्मवीर पहलवान की याद में दंगल का आयोजन किया गया। दंगल में मुख्य अतिथि चौधरी सतवीर सरपंच, चौधरी राजवीर पहलवान, दंगल में पहले नंबर की कुस्ती एक लाख की जिसमें जोंटी भाटी भारत केसरी व हिंद केसरी अजय गुर्जर गांव लाखूवास के बीच हुई। यह कुश्ती 15 मिनट चलने के बाद बराबरी पर छूटी। दंगल में 31 हजार की कुश्ती उपकार पहलवान धनोरी व अभिषेक पहलवान गाटा के बीच बराबरी पर रही। 11 हजार की कुश्ती कालू पहलवान व साहिल पहलवान दिल्ली के बीच बराबरी पर रही। 51 सौ की कुश्ती भूपी पहलवान दिल्ली व सागर पहलवान हरियाणा के बीच बराबरी पर रही। 31सौ की कुश्ती सचिन पहलवान व विनय पहलवान हरियाणा के बीच हुई, इसमें विनय विजय हुए दंगल में उपस्थित रहे। रामअवतार यादव, जयवीर पहलवान, रंजीत पहलवान, राजेन्द्र पहलवान, बब्बू पहलवान आदि लोग मौजूद रहे।

बीएसएमजी नेशनल गेम्स बैडमिंटन टूर्नामेंट में बच्चों ने जीता पदक

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। रेयान इंटरनेशनल स्कूल, ग्रेटर नोएडा ने डीडीए स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स, दिलशाद गार्डन, दिल्ली में आयोजित बीएसएमजी नेशनल गेम्स बैडमिंटन टूर्नामेंट- 2023 में भाग लिया, जिसमें विभिन्न श्रेणियों में विभिन्न राज्यों के 14 से अधिक स्कूलों ने भाग लिया। हमारे स्कूल ने 14 स्वर्ण, 16 रजत और 12 कांस्य के साथ कुल मिलाकर प्रथम स्थान प्राप्त किया और स्कूल को एक समग्र ट्रॉफी भी प्राप्त हुई। इस दौरान स्वर्ण पदक जीतने वालों में श्रीवत्स-4एफ, पार्थ-6बी, हर्षित-8बी(2), दिव्यांश-10ए(2), विराट-7जी, सृष्टि-10सी, ऋषि-8बी, आयुष्मा-7सी, समरधा-7बी। दीर्घिका-7जी, रागिनी-12बी, अदिति-7बी। रजत पदक- आरवी-3ए, देवांश-4एफ, एज्ञा सुगंध -7, माधव -10एच, नमिश-8ए, नैतिक-8डी, भूमि-10ए, सृष्टि-10सी, आन्या-8ए, एब्सर-11, सोनाक्षी-9एफ नव्या-9एफ आयुष्मा-7सी, ख्याति-9डी, प्रत्यूष, निपुण-11 जी। कांस्य पदक- आर्जव-10, आर्यन-10, नैना-9जी, आयुष्मा-7सी, अनुष्का-8, विधान-4एफ तन्वी-8, रुद्र-7, मयंक-8बी, आदित्य मिश्रा, नंदिनी-10, ऋषव-9 डी।

बच्चा चोरी के शक में नेपाल के युवक की हत्या का आरोपी गिरफ्तार

दनकौर, 16 अगस्त (देशबन्धु)। दनकौर क्षेत्र के कनारसी गांव में करीब डेढ़ वर्ष पहले बच्चा चोरी के शक में ग्रामीणों ने नेपाल के युवक की पीटकर हत्या कर थी। इस मामले में पुलिस ने एक फरार आरोपी को बुधवार को गिरफ्तार किया है। जिसको पुलिस ने कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया है। जानकारी के मुताबिक, पिछले वर्ष 25 मार्च को नेपाल के ननकू (25) नाम के युवक कनारसी गांव में बच्चा चोरी के शक में ग्रामीणों ने पेड़ से बंधक बना दिया था। जिसके बाद उसकी जमकर पिटाई की थी। इस घटना में वह गंभीर रूप से घायल हो गया था। सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने जिसको अस्पताल में भर्ती कराया था। जहां उसकी मौत हो गई थी। इस मामले मृतक के भाई पंचराम ने कनारसी गांव के नरेश समेत अन्य अज्ञात लोगों के खिलाफ अपने भाई की हत्या का केस दर्ज कराया था। पुलिस ने घटना के वक्त नरेश नाम के आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था।

जबकि जांच के दौरान गांव के ही बबली उर्फ देशी का नाम भी सामने आया है। जिसके चलते पुलिस ने मामले में फरार आरोपी को बुधवार को उसके गांव के पास से गिरफ्तार किया है। कोतवाली प्रभारी संजय सिंह का कहना है कि नेपाल के युवक की हत्या के मामले में दोषी पाए गए दूसरे आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेजा गया है।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन को लेकर उद्यमियों की बैठक

■ **आईआईए ने डीजी प्रतिबंध से एमएसएमई को बाहर रखने का किया अनुरोध**

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। उद्यमियों ने वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) ने अधिकारियों के आवाहन पर संवाद गोष्ठी का आयोजन एनटीपीसी दादरी के हॉल में हुआ, जिसमे सभी स्टेक होल्डर्स को आमंत्रित किया गया था। सीएक्यूएम के वरिष्ठ अधिकारी एस डी अत्री, असिस्टेन्ट डायरेक्टर डॉ. आर.के. अग्रवाल, राज्य प्रदूषण नियंत्रण विभाग से सपना श्रीवास्तव, क्षेत्रीय कार्यालय प्रदूषण नियंत्रण बुलंदशहर, डी.के. गुप्ता, ग्रेटर नोएडा, उत्सव शर्मा नोएडा, मंच पर उपस्थित रहे। मंच का संचालन एनटीपीसी के अधिकारी ने किया, उन्होंने सभी का स्वागत किया, एसडी अत्री ने स्लाइड और प्रोजेक्टर स्क्रीन पर अपना प्रेजेंटेशन दिया। इसके उपरांत उन्होंने उद्यमियों के प्रश्नों के उत्तर दिए। आईआईए ग्रेटर नोएडा टीम ने सीएक्यूएम के ग्रैप और डीजी सेट प्रतिबंधों पर उद्योगों को होने वाली परेशानियों पर एक पत्र दिया। चेयरमैन राकेश बंसल और विपिन माहना ने आपने सभी मुद्दों को लगभग 20 मिनट तक उठाया और अधिकारियों से सभी पर संज्ञान लेकर डीजी प्रतिबंध से एमएसएमई को बाहर रखने का अनुरोध किया। इस गोष्ठी में आईआईए से चेयरमैन राकेश बंसल, सचिव सरबजीत सिंह, विपिन माहना, जे. एस. राणा, जेड रहमान, मनोज सिराधना व प्रमोद गुप्ता ने प्रतिभाग किया। अंत में आज्ञा से एनटीपीसी के अधिकारी ने गोष्ठी का समापन किया।

रामपुर-फतेहपुर और पाली गांव के लीज बैक के मसलों पर समिति ने की सुनवाई

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। किसानों की आबादी विनियमावली (लीज बैक) के प्रकरणों को सुलझाने के लिए प्राधिकरण के एसीईओ आनंद वर्धन और ओएसडी हिमांशु वर्मा ने बुधवार को रामपुर-फतेहपुर और पाली गांव के लीज बैक के मसलों पर समिति ने सुनवाई की। इन गांवों के लीज बैक के लगभग 40 प्रकरणों पर समिति ने किसानों का पक्ष सुना, जिन प्रकरणों में साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए थे, उन में किसानों से साक्ष्य जमा कराने को कहा गया है। आबादी व्यवस्थापन के लिए बनी समिति किसानों के लीज बैक के प्रकरणों को सुलझाने के लिए एसीईओ आनंद वर्धन, लगातार बैठक कर रही है। बुधवार को एसीईओ ने ओएसडी हिमांशु वर्मा और ओएसडी रजनीकांत के साथ इन दो गांवों के लीज बैक के पुराने प्रकरणों के साथ ही नए प्रकरणों पर भी सुनवाई की। किसानों के पक्ष को सुना। उनसे साक्ष्य प्राप्त किए। किसानों को 2011 व वर्तमान की सैटेलाइट इमेज भी दिखाई गई। जिन किसानों के पास साक्ष्य उपलब्ध नहीं थे, उनको आवेदन पत्र, मूल निवास का साक्ष्य और भूलेख के दस्तावेज शीघ्र ही विभाग में जमा कराने को कहा गया है। समिति साक्ष्यों व सुनवाई के आधार पर रिपोर्ट तैयार करेगी। यह रिपोर्ट सीईओ की अध्यक्षता में बनी समिति के समक्ष प्रस्तुत की जाएगी और फिर बोर्ड के अनुमोदन लेकर किसानों को आबादी की जमीन लीज बैक की जाएगी। प्राधिकरण के एसीईओ आनंद वर्धन का कहना है कि किसानों के आबादी प्रकरण सुलझाने के लिए समिति सुनवाई कर रही है। सभी गांवों के मसले एक-एक करके निपटाए जाएंगे।

नोएडा एयरपोर्ट का 52 प्रतिशत निर्माण कार्य हो चुका है पूरा

ग्रेटर नोएडा, 16 अगस्त (देशबन्धु)। नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड की बोर्ड बैठक इस बार स्विटरलैंड में हुई। जिसमें नायल के सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह शामिल हुए। बोर्ड बैठक में यमुना इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड में ज्यूरिख एयरपोर्ट इंटरनेशनल एजी की अंशधारिता को बढ़ा दिया है। यह अंशधारिता दो हजार करोड़ से बढ़ाकर तीन हजार करोड़ रुपए कर दी गई। बोर्ड को बताया गया कि एयरपोर्ट का 52 प्रतिशत निर्माण कार्य पूरा हो चुका है। बोर्ड बैठक के बाद अधिकारियों ने बेल्जियम के लीस एयरपोर्ट, एम्स्टर्डम के शिफोल एयरपोर्ट व स्विटजरलैंड के ज्यूरिख एयरपोर्ट का दौरा किया। यहां की सुरक्षा, इमिग्रेशन, कामन होल्डिंग एरिया आदि को देखा। साथ ही इन एयरपोर्ट पर यात्रियों के सामान के निस्तारण की प्रक्रिया, अपनाई जा रही तकनीकी, पार्किंग, वे एरिया आदि को भी देखा है। नायल के सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह ने बताया कि बेल्जियम का लीस एयरपोर्ट कार्गो एयरपोर्ट है। यहां पर कार्गो के इंफ्रास्ट्रचर को देखा गया। इसकी खूबियों को जेवर एयरपोर्ट में लागू करेंगे। एयरपोर्ट से दुग्ध उत्पाद, फल, सब्जी, अनाज को भी विदेश भेजने की सुविधा होगी। भंडारण के लिए कोल्ड सप्लाई चेन विकसित की जाएगी। नायल के सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह ने बताया कि यात्री एयरपोर्ट के साथ जेवर एयरपोर्ट कार्गो का भी हब बनेगा। अभी आईजीआई से खिलौने, इलेक्ट्रानिक्स उपकरण, कपड़े आदि विदेश भेजे जाते हैं। आईजीआई के कार्गो में सबसे अधिक हिस्सेदारी गाजियाबाद व गौतमबुद्ध नगर जिले की है। इसलिए जेवर एयरपोर्ट कार्गो का भी हब बनेगा।

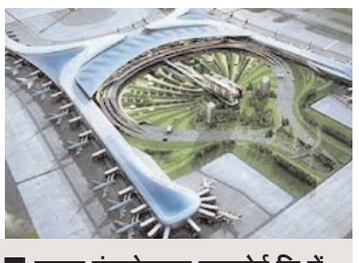

■ **यमुना इंटरनेशनल एयरपोर्ट लि में ज्यूरिख एयरपोर्ट की अंशधारिता बढ़ी**

■ **बेल्जियम का लीस एयरपोर्ट कार्गो एयरपोर्ट से बेहतर होगा नोएडा एयरपोर्ट का कार्गो**

विश्व कई देशों में नोएडा एयरपोर्ट के मॉडल की हनक

ग्रेटर नोएडा। जेवर इंटरनेशनल एयरपोर्ट पैसेजर के साथ माल वाहक और एमआरओ विकसित करने का मॉडल विश्व के कई देशों के लिए नजीर बन सकता है। जितने कम समय में जमीन अधिग्रहण से लेकर एयरपोर्ट का निर्माण कार्य शुरू हुआ आज तक किसी भी देश में इतने कम समय में एयरपोर्ट का निर्माण नहीं हुआ। इतनी जमीन भी किसी एयरपोर्ट के पास नहीं है। आने वाले 100 साल को लेकर एयरपोर्ट का मॉडल तैयार किया गया है। पैसेंजर, कार्गो, एमआरओ आदि के लिए इतनी जमीन उपलब्ध है कि 100 साल तक इसके विस्तार करने में कोई अडचन नहीं आएगी।

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
पश्चिमी उत्तर प्रदेश ब्यूरो कार्यालय
209 कृष्णा अपरा प्लाजा अल्फा कॉमर्शियल बेल्ट, ग्रेटर नोएडा
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के लिए संम्पर्क करें
खोया-पाया/ सूचना/ नाम परिवर्तन/ आवश्यकता
फोनः- 0120-4270009

पत्र नहीं मित्र
देशबन्धु
समाचार, विज्ञापन एवं प्रसार के संपर्क करें
क्षेत्रिय कार्यालय रबुपुरा
Mob: 9411492655

Shiv Mahima Enterprises
सभी प्रकार के विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें
नाम परिवर्तन, खोया पाया, सूचना, अवश्यकता
Mob.: 9910280173
Off.-221, 2nd Floor, Meridian View Plaza, Alpha Comm. Belt, Gr. Noida

संपादकीय

नई दिल्ली, गुरूवार 17 अगस्त 2023

संस्थापक-सम्पादक : स्व. माया‌राम सुरजन

लाल किले का कद घटाते नरेन्द्र मोदी

15 अगस्त को लाल किले की प्राचीर से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को जिस लहज़े में सम्बोधित किया वह उनकी प्रवृत्ति व तेवर के बहुत विपरीत तो नहीं था लेकिन ज्यादातर लोग मानकर चल रहे थे कि अपने दूसरे कार्यकाल के अंतिम स्वतंत्रता दिवस समारोह के बतौर मुख्य अतिथि और दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रमुख होने के नाते वे अमृत काल के समापन अवसर पर दिये जाने वाले उद्‌बोधन के जरिये राष्ट्र को गरिमामय तरीके से कोई अभिनव दिशा देंगे। आशा की गई थी कि बदहाली से विचलित व व्यथित देश की अवाम और हाल की अनेक घटनाओं से पीड़ित लोगों के ज़ख्मों पर मरहम लगाकर मोदी बतलाएंगे कि पूरा देश एक स्पंदित समाज है जिसके पास परस्पर सुख-दुख में एक-दूसरे को सम्भालने की ताकत है और जो उदार और संवेदनशील भी है।

मोदी ने एक बार फिर से सभी को निराश किया, जैसा कि वे इसी स्थान पर खड़े होकर पिछले 9 वर्षों से करते आ रहे हैं। उन्होंने यह भी संदेश दे दिया कि उनके पास कहने के लिये मौलिक कुछ भी नहीं है। इतिहास को कोसने और सारी योजनाओं का प्रतिफल कहीं दूर भविष्य में उपलब्ध करने वाला मोदी का यह भाषण उनके पिछले किसी भी अन्य उद्‌बोधन से कतई अलहदा नहीं था। 15 अगस्त का उल्लेख करने वाले उनके वाक्यों को हटा दिया जाये तो यह फर्क करना मुश्किल होगा कि मोदी ये बातें अपने पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच कर रहे हैं या संसद में अविश्वास प्रस्ताव पर बोल रहे हैं। प्रतिपक्ष की आलोचना करने, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा का इज़हार करने और हवाई किले बनाने की उनकी प्रवृत्ति स्थान और प्रसंग विशेष का भेद मिटा देती है। इस बार भी ऐसा ही हुआ। जश्ने-आज़ादी- 2023 का उनका वक्तव्य केवल उनके अपने पद की ही प्रतिष्ठा में ऐतिहासिक गिरावट दर्ज करने के लिये याद नहीं किया जायेगा बल्कि वह राष्ट्र के सबसे पवित्र पर्व एवं सर्वोच्च मंच की गरिमा दोनों को ही धूल-धुसरित करने वाले ऐसे एकालाप के रूप में दाखिल हो गया है जिसका प्रदर्शन वे अपने दो बार के कार्यकाल में अनगिनत बार कर चुके हैं। चूंकि चुनाव जीतने और सत्ता बनाये रखने में 24×7 व्यस्त रहने वाले मोदी का सारा विमर्श परिवारवाद, तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार की घिसी-पिटी बातों तक सीमित था अत: उनके पास देशवासियों को देने के लिये कुछ था ही नहीं।

यह अवसर तमाम क्षुद्रताओं व संकार्णताओं से उठकर कुछ नया कहने और करने की प्रेरणा देने वाला होता है। पिछले सारे प्रधानमंत्रियों ने यही किया है। कई पीएम ऐसे हुए जिनका कद न जवाहरलाल नेहरू जितना था, न ही लालबहादुर शास्त्री सा; और न ही इंदिरा गांधी जैसा। हर कोई समकालीन परिस्थितियों, अपनी विशिष्ट कार्य शैली और विचारधारा के अनुरूप देशवासियों से मुख़ातिब हुआ। सभी प्रधानमंत्री प्राचीर की सीढ़ियों के नीचे दलगत सियासत और निजी विचारों को छोड़कर उद्‌बोधन के लिये ऊपर चढ़ते थे।

वैसे तो मोदी के पहले के सारे वक्तव्यों में भी प्रकारांतर से विरोधियों को ललकारने, कोसने, नीचा दिखाने जैसे तत्व पाये जाते रहे परन्तु मंगलवार का सम्बोधन उनके वर्तमान कार्यकाल का आखिरी था जिसे उन्होंने यूं लिया मानों वे अपने राजनैतिक विरोधियों से हिसाब अंतिम रूप से चुकता कर रहे हों। उनका सर्वाधिक अभद्र प्रदर्शन वह था जब उन्होंने साफ कर दिया कि अगले साल यहां वे ही तिरंगा फहरायेंगे। ऐसा कहना एक तरह से सम्पूर्ण लोकतांत्रिक प्रक्रिया का ही अपमान है। आखिर कोई पीएम यह दावा कैसे कर सकता है कि अगले साल के मध्य में होने जा रहे आम चुनावों में जनता उनकी पार्टी को ही बहुमत से जिताएगी। दूसरे, भारत में प्रधानमंत्री के प्रत्यक्ष चुनाव की व्यवस्था तो है नहीं, जैसी कि अमेरिका में है जहां राष्ट्रपति प्रत्यक्ष प्रणाली से निर्वाचित होता है। यहां सबसे बड़े विजेता दल के द्वारा संसदीय दल में अपना नेता चुना जाता है जो सामान्य तौर पर उस पार्टी के द्वारा भी स्वीकृत होता है। जहां तक भारतीय जनता पार्टी की बात है तो उसके बारे में लोकप्रिय मान्यता यह है (जो काफी हद तक सही है) कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिसे तय करता है उसे ही भाजपा कार्यकारिणी अनुमोदित करती है। मोदी के मामले में भी यही हुआ था। अगर मोदी अगले साल भी झंडा फहराने की बात करते हैं तो क्या यह समझा जाये कि उन्हें भाजपा व संघ की अनुमति या स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है? क्या वे इन दो संगठनों से बड़े हो गये हैं? अगर ऐसा है तो यह भाजपा-संघ दोनों के लिये चिंताजनक है।

गौतम अदानी के साथ उनके संबंधों को लेकर हुए खुलासों के साथ ही उनके नेतृत्व में भारत में फैली परस्पर नफ़रत, सामाजिक ध्रुवीकरण के कुत्सित प्रयासों से ऊपजी हिंसा (हालिया मणिपुर, मेवात, जयपुर-मुंबई ट्रेन में मुस्लिमों पर गोलीचालन आदि की घटनाएं), मानवाधिकार के हनन जैसे मुद्दों के कारण उनका चेहरा काफी दागदार हो गया है। इसके अलावा सतत मजबूत होते विपक्षी गठबन्धन ने मोदी की जमीन को खिसका दिया है। देश के भीतर व बाहर उनकी जबर्दस्त किरकिरी हुई है। अपनी इसी दरकती ज़मीन को बचाने के लिये मोदी ने लाल किले का इस्तेमाल एक ओर तो अपने विरोधियों को बदनाम करने के लिये किया तो वहीं अपनी दावेदारी भी पेश की है। मोदी का यह भाषण जनमत को नीचा दिखाना तो है ही, समग्र लोकतांत्रिक प्रणाली का अपमान भी है। मोदी ने इस ऐतिहासिक अवसर एवं स्थान का जैसा इस्तेमाल किया है वह न केवल भौंडा है, बल्कि अनैतिक व अलोकतांत्रिक भी है। मोदी ने अपने पद की गरिमा ही नहीं गिराई, विभिन्न ऐतिहासिक कारणों से भारतीय गर्व के प्रतीक लाल किले का कद भी घटाया है।

अमृतकाल में आत्ममुग्ध प्रधानमंत्री

दुनियादारी

■ सर्वमित्रा सुरजन

दक्षिणपंथी सोच के लोग आजादी की लड़ाई के वक्त से गांधी-नेहरू से खौफ खाते थे। अंग्रेजों के खिलाफ जब देश के लाखों लोग गांधी, नेहरू, पटेल, बोस, आजाद और भगत सिंह के नक्शे कदमों पर चलकर हंसते-हंसते कुर्बानी देने तैयार हो जाते थे, तब हिंदू महासभा जैसे संगठनों के अनुयायी अपने को बचाने, अंग्रेजों के वफादार बनने और इन स्वाधीनता सेनानियों के प्रयासों को विफल करने में जुटे रहते थे। हालांकि इनकी कोशिशें कामयाब नहीं हुईं। देश स्वाधीनता सेनानियों और लाखों-करोड़ों हिंदुस्तानियों की त्याग और तपस्या के बूते आजाद हो गया। दक्षिणपंथी लोगों की निगाह में देश की आजादी से अधिक जरूरी हिंदू राष्ट्र की अवधारणा को खाद-पानी देना था। गांधीजी इस कोशिश में उन्हें बाधक की तरह दिखे तो बेझिझक गांधी की हत्या कर दी गई। लेकिन नेहरू उनके लिए बड़ी चुनौती बने रहे। आजादी के बाद जिस तरह पं. नेहरू ने देश को संभाला, आगे बढ़ाया, दुनिया के मानचित्र में भारत को प्रतिष्ठा दिलाई, दसियों देशों की आजादी के लिए प्रेरणास्त्रोत बने, उससे नेहरू को लेकर संघ का डर और बढ़ता गया। संघ ने पांच-छह दशकों का लंबा इंतजार किया कि उसे किसी तरह नेहरू से बदला लेने का मौका मिले। नेहरू के बारे में बेबुनियाद, झूठी खबरें अफवाही तंत्र ने बहुत फैलाई और अब इस नापाक साजिश में और तेजी आ चुकी है। अब देश से नेहरू के नाम को मिटाने वाले फैसले लिए जा रहे हैं। नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी का नाम बदलकर पीएम म्यूजियम एंड लाइब्रेरी कर दिया गया है। ये फैसला जून में ही लिया जा चुका था, लेकिन इसे 15 अगस्त के मौके पर ही अमल में क्यों लाया गया, ये गंभीरता से सोचने वाली बात है। कांग्रेस ने इस फैसले पर पलटवार किया है। लेकिन कांग्रेस को अब बातों से बढ़कर एक्शन में दिखने की जरूरत है। क्योंकि नेहरू के साथ अब आजादी के आंदोलन को खारिज करने की कोशिश भी शुरु हो गई है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया के (कु) ख्यात एंकर ने पंद्रह अगस्त के मौके पर ये बताने की कोशिश की कि भारत छोड़ो आंदोलन का कोई योगदान आजादी में नहीं था। इस एंकर के मुताबिक 1947 में भारत ही नहीं बहुत से देशों को अंग्रेजों ने आजाद कर दिया, जबकि हमें इतिहास में पढ़ाया गया है कि भारत छोड़ो आंदोलन के कारण आजादी मिली। साफ तौर पर समझ आता है कि देश में नए किस्म का इतिहास लिखने की तैयारी हो रही है। 1947 के पहले के इतिहास में भारत के लिए दक्षिणपंथियों का कोई योगदान दर्ज नहीं है, तो इसे छिपाने के लिए इतिहास ही बदला जा रहा है। कुछ दिनों से प्रधानमंत्री मोदी जिस तरह क्विट इंडिया के नारे को परिवारवाद, भ्रष्टाचार और तुष्टिकरण से जोड़ रहे हैं, वो भी ऐसी ही कोशिश है। इस कोशिश को श्री मोदी लालकिले से भी दोहराते नजर आए। 77वें स्वतंत्रता दिवस पर लगातार दसवीं बार प्रधानमंत्री मोदी ने लालकिले की प्राचीर से तिरंगा फहराया। इस तरह डॉ.मनमोहन सिंह की बराबरी उन्होंने कर ली। लेकिन इस महत्वपूर्ण मौके की गरिमा बनाए रखने की जगह श्री मोदी ने चुनावी रैली की तरह लालकिले से भाषण दिया। उन्होंने ये तक कह दिया कि अगले साल भी वो ही आएंगे। उनके पहले जितने भी प्रधानमंत्री हुए, सभी में कोई न कोई कमी रही होगी, लेकिन आत्ममुग्धता से कोई भी प्रधानमंत्री ऐसा ग्रसित नहीं रहा, जैसा मोदीजी दिखाई दिए।

> **इलेक्ट्रानिक मीडिया के (कु) ख्यात एंकर ने पंद्रह अगस्त के मौके पर ये बताने की कोशिश की कि भारत छोड़ो आंदोलन का कोई योगदान आजादी में नहीं था। इस एंकर के मुताबिक 1947 में भारत ही नहीं बहुत से देशों को अंग्रेजों ने आजाद कर दिया, जबकि हमें इतिहास में पढ़ाया गया है कि भारत छोड़ो आंदोलन के कारण आजादी मिली।**

प्रधानमंत्री के भाषण में देश से अधिक सत्ता की चिंता नजर आई। लालकिले पर खड़े होकर भी उन्होंने विपक्ष को कोसने का मौका नहीं छोड़ा। प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में देशवासियों को 'परिवारजन' कहकर संबोधित किया। जबकि इससे पहले अपने भाषणों में विपक्ष को परिवारवाद के नाम पर ही घेरने की कोशिश श्री मोदी करते रहे हैं और लालकिले से भी उन्होंने ऐसा ही किया। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण में विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडिया' और कांग्रेस पर भी बिना नाम लिए तंज़ कसते हुए कहा, ''देश के लोकतंत्र में एक बीमारी आई है- परिवारवादी पार्टी. इनका एक ही मंत्र है- परिवार को, परिवार के लिए, परिवार के द्वारा।'' वहीं श्री मोदी ने देश की तीन बुराइयां बतलाईं भ्रष्टाचार, परिवारवाद,और तुष्टिकरण। जब से इंडिया का गठन हुआ है श्री मोदी इन्हीं तीन विषयों को हर मंच से उठाते रहे हैं। लालकिले से उन्होंने घमंडिया और परिवारवाद क्विट इंडिया जैसी बातें नहीं की, लेकिन जो कुछ कहा उसका मतलब इसी के इर्द-गिर्द ही घूम रहा था।

प्रधानमंत्री मोदी के भाषण की खास बात ये रही कि उन्होंने शुरुआत में ही मणिपुर की बात की, जबकि पिछले साढ़े तीन महीनों से मोदी मणिपुर पर बोलने से वे बचते ही रहे हैं। संसद में भी उन्होंने मणिपुर पर केवल 2 मिनट दिए, लेकिन लालकिले से मोदी ने कहा कि ''पिछले समय से मणिपुर में हिंसा का जो दौर चला. कई लोगों को हिंसा को शिकार होना पड़ा. मां- बेटियों के साथ अत्याचार हुआ लेकिन कुछ दिनों से शांति की खबरें आ रही है।'' उन्होंने कहा कि 'देश मणिपुर के साथ है। केंद्र सरकार, राज्य के साथ मिलकर समाधान के प्रयास कर रही है और करती रहेगी'। वहीं मणिपुर की घटना को देश की एकता के साथ जोड़ते हुए श्री मोदी ने कहा घटना मणिपुर में होती है तो दर्द महाराष्ट्र में होता है। ये बात शायद राहुल गांधी के भारत जोड़ो यात्रा के जवाब के लिए थी। लेकिन केवल दो लाइनों की बात चार हजार किमी की पदयात्रा का मुकाबला नहीं कर सकती।

खैर भाषण की शुरुआत प्रधानमंत्री ने मणिपुर से की तो आखिरी में अगले साल फिर से लाल क़िले से भाषण देने की बात कही। जनता से अगले साल भी आने के लिए आशीर्वाद की अपील करना अलग बात है, ये काम चुनावी मंच से होना चाहिए। मगर नरेन्द्र मोदी ने जनता के सामने ऐलान कर दिया कि वे अगले साल भी आएंगे, इसका मतलब ये है कि उन्होंने भारत की लोकतांत्रिक निर्वाचन प्रणाली को ठेंगा दिखला दिया। जनता को ये तय करने का अधिकार नहीं दिया कि अगले साल वह किसे प्रधानमंत्री चुनना चाहती है, बस अपना फैसला सुना दिया। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर इतनी अलोकतांत्रिक बात जनता किस तरह स्वीकार करेगी, इस पर मंथन बेहद जरूरी है। सवाल ये भी है कि क्या श्री मोदी राहुल गांधी के बढ़ते कद की वजह से डर रहे हैं। पहले इंडिया और अब भारत माता के नाम की चुनौती उनके सामने पेश हो रही है।

राहुल गांधी ने स्वतंत्रता दिवस पर ट्वीट किया कि 'भारत माता हर भारतीय की आवाज है! वहीं भारत जोड़ो यात्रा और भारत माता की आवाज के बारे में एक खुली चिट्ठी में राहुल गांधी ने लिखा- 'पिछले साल मैंने एक सौ पैंतालीस दिन उस ज़मीन पर घूमते हुए बिताए जिसे मैं अपना घर कहता हूं। मैंने समुद्र के किनारे से शुरुआत की और गर्मी, धूल और बारिश से गुज़रा। जंगलों, कस्बों और पहाड़ियों से होते हुए, जब तक कि मैं मेरे प्यारे कश्मीर नहीं पहुंच गया।'

मेरी भारत माता, जमीन का टुकड़ा-भर नहीं, कुछ धारणाओं का गुच्छा-भर भी नहीं है, न ही किसी एक धर्म, संस्कृति या इतिहास-विशेष का आख्यान, न ही कोई खास जाति-भर। बल्कि हरेक भारतीय की आवाज है भारत माता, चाहे वह कमजोर हो या मजबूत। उन आवाजों में गहरे पैठी जो खुशी है, जो भय और जो दर्द है, वही है भारत माता।

भारत माता की यह आवाज सब जगह है। भारत माता की इस आवाज को सुनने के लिए आपकी अपनी आवाज को, आपकी इच्छाओं को, आपकी आकांक्षाओं को चुप होना पड़ेगा। भारत माता हर समय बोल रही हैं। भारत माता किसी अपने के कान में कुछ न कुछ बुदबुदाती है, मगर तभी-जब उस अपने का आत्म पूरी तरह से शांत हो, जैसे एक ध्यानमग्न मनुष्य का मौन।

सब कुछ कितना सरल था। भारत माता की आत्मा का वह मोती जिसे मैं अपने भीतर की नदी में खोज रहा था, सिर्फ भारत माता की सभी संतानों के हहराते हुए अनंत समुद्र में ही पाया जा सकता है।

भारत माता को देवी स्वरूप में प्रतिष्ठित कर उनकी जय-जयकार करने वालों को राहुल गांधी की ये बातें शायद ही समझ आएं। मगर देश को भारत माता के बारे में श्री गांधी के इन विचारों पर गौर करना चाहिए। वर्ना इतिहास का अधकचरा ज्ञान देश की आजादी को लील जाएगा।

मोदी के खिलाफ इंडिया गठबंधन को सीधी लड़ाई लड़नी होगी

■ कल्याणी शंकर

क्या मणिपुर संकट का असर नवगठित विपक्षी गठबंधन इंडिया के पक्ष में हो सकता है? क्या कांग्रेस नेता राहुल गांधी इसका उपयोग उसी तरह कर सकेंगे जैसा कि एक अन्य विपक्षी नेता ममता बनर्जी ने 2011 के विधानसभा चुनावों में जीत के लिए पश्चिम बंगाल के सिंगूर और नंदीग्राम मामले में किया था? ये महत्वपूर्ण क्षण दुर्लभ और अविस्मरणीय हैं।

राहुल गांधी को उन बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है जो आने वाले महीनों में कांग्रेस और भारत की राजनीतिक स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। वह इन चुनौतियों से कैसे निपटते हैं, यह उनके भविष्य और समग्र रूप से भारतीय राजनीति के भविष्य को तय करने में महत्वपूर्ण होगा।

मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश करने का ताजा प्रयास पिछले हफ्ते एनडीए के बहुमत के कारण विफल हो गया। अब राहुल के लिए अपने लिए, अपनी पार्टी और विपक्ष के लिए बदलाव लाने का एक अनूठा मौका है।

> **राहुल गांधी को उन बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है जो आने वाले महीनों में कांग्रेस और भारत की राजनीतिक स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती हैं। वह इन चुनौतियों से कैसे निपटते हैं, यह उनके भविष्य और समग्र रूप से भारतीय राजनीति के भविष्य को तय करने में महत्वपूर्ण होगा। मोदी सरकार के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव पेश करने का ताजा प्रयास पिछले हफ्ते एनडीए के बहुमत के कारण विफल हो गया।**

2004 और 2014 के बीच, राहुल गांधी को डॉ. मनमोहन सिंह के मंत्रिमंडल में मंत्री बनने का अवसर मिला, लेकिन उन्होंने यह पद नहीं लिया। 2019 के चुनाव में कांग्रेस प्रमुख के तौर पर वह कांग्रेस को जीत नहीं दिला सके।

2014 में राष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रवेश के बाद से कांग्रेस बुरी स्थिति में है, जिसके परिणामस्वरूप कांग्रेस एक दशक तक सत्ता से बाहर रही। 2024 में आगामी लोकसभा चुनाव जीतना कांग्रेस के लिए नियंत्रण हासिल करने और उसकी बढ़ती बेचैनी को शांत करने के लिए महत्वपूर्ण है।

लोकसभा सदस्य के रूप में राहुल की वापसी से उनका, उनकी पार्टी और विपक्ष का उत्साह बढ़ा है। उन्होंने खुद को मोदी के राजनीतिक प्रतिशोध के शिकार के रूप में पेश किया और जनता की सहानुभूति हासिल की। संसद से उनकी बर्खास्तगी को गरिमापूर्ण तरीके से निपटाने और अंतत: सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप के कारण उनकी बहाली ने बड़ी परिपक्वता का प्रदर्शन किया।

राहुल को अपनी गलतियों का अहसास है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक 3500 किलोमीटर की दूरी तय करने वाली उनकी सफल भारत जोड़ो यात्रा ने एकता और शांति को बढ़ावा देने के लिए प्रशंसा अर्जित की। अपनी यात्रा के दौरान राहुल गांधी ने निराश कांग्रेस समर्थकों को एकजुट किया। उन्होंने खुद को एक आत्मविश्वासी नेता के रूप में पेश किया जो आगामी लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को चुनौती देने में सक्षम है। इसका परिणाम यह हुआ कि भाजपा और अन्य क्षेत्रीय नेताओं ने कांग्रेस समर्थकों के अलावा, आम जनता के बीच उनकी बढ़ती स्वीकार्यता पर ध्यान दिया।

राहुल को इस साल होने वाले विधानसभा चुनाव और अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए परिपक्वता दिखाने और एक नया आख्यान विकसित करने की जरूरत है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, तेलंगाना और मिजोरम सभी चुनाव की तैयारी कर रहे हैं। आम आदमी के नारे ने 2004 से 2014 तक पार्टी की सफलता और सत्ता बरकरार रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आम आदमी से संबंधित रोजी-रोटी के मुद्दों को उठाना महत्वपूर्ण है। ये चुनाव जीतना राहुल के राजनीतिक कॅरियर में एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है।

राहुल को शरद पवार (एनसीपी), ममता बनर्जी (टीएमसी), नीतीश कुमार (जद यू), एमके स्टालिन (द्रमुक) और अखिलेश यादव (सपा) जैसे वरिष्ठ विपक्षी नेताओं का समर्थन हासिल करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है।

राहुल की अयोग्यता के बाद, विपक्ष ने एकजुटता की दिशा में काम किया और अपने मतभेदों के बावजूद गठबंधन के साथ आगे बढ़ने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें कांग्रेस भी शामिल थी। इसने छोटे क्षेत्रीय दलों की जरूरतों को समायोजित किया तथा उनके साथ समान व्यवहार किया। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के यह कहने के बाद कि कांग्रेस प्रधानमंत्री पद के लिए प्रतिस्पर्धा नहीं कर रही है, राहुल अब गठबंधन सहयोगियों के लिए अधिक स्वीकार्य हैं।

प्रधानमंत्री मोदी के कांग्रेस मुक्त भारत के लक्ष्य के बावजूद कांग्रेस पार्टी जोर पकड़ रही है। पूरे देश में कांग्रेस पार्टी की अखिल-राष्ट्रीय प्रकृति के कारण गांधी की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है। यह भारत जोड़ो यात्रा और गुजरात उच्च न्यायालय के फैसले के बाद राहुल के संसद से निष्कासन और उसके बाद सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के कारण बहाली के बाद और भी अधिक है।

2019 में राहुल ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया था। हालांकि, वह अभी भी पार्टी के लिए निर्णय लेते हैं। उन्हें जिम्मेदारी लेनी चाहिए और पर्दे के पीछे से काम करने के बजाय खुलकर काम करना चाहिए। मुख्य विपक्षी दल के नेता के रूप में राहुल को इंडिया गठबंधन का नेतृत्व करने में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए।

मतदाताओं तक पहुंचने के लिए, जीवनयापन की बढ़ती लागत, मुद्रास्फीति और भोजन और दूध जैसी आवश्यकताओं की सामर्थ्य जैसे जरूरी मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। जहां राहुल का कांग्रेस की विचारधारा पर जोर देना महत्वपूर्ण है, वहीं लोगों की बुनियादी चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करने वाली एक नई कहानी भी उतनी ही जरूरी है।

पार्टी को पुनर्गठित करना और जमीनी स्तर पर मजबूत बूथ समितियां स्थापित करना आवश्यक है। गांधी को सही व्यक्ति को सही काम सौंपना चाहिए। गठबंधन की ताकत के हिसाब से इंडिया गठबंधन से भाजपा के खिलाफ हर सीट पर मजबूत उम्मीदवार उतारना जरूरी है। इस प्रयास के लिए सहयोग और लचीलापन आवश्यक है।

राहुल गांधी ने खुद को एक आत्मविश्वासी नेता के रूप में पेश किया है, जो आगामी लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मुकाबला करने के लिए तैयार है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने घोषणा की है कि भारत जोड़ो यात्रा का दूसरा भाग शीघ्र ही शुरू किया जायेगा।

पावन प्रसंग

वर्तमान को साधें

समाज में अधिकांश व्यक्ति ऐसे ही होते हैं, जो वर्तमान का महत्व नहीं समझते। उपलब्ध परिस्थितियों का सदुपयोग न कर पाने और अनुपलब्ध की कामना करते रहने वाले, पाते कुछ नहीं, गंवाते ही अधिक हैं। जीने का आनंद और लाभ तब है, जब हम वर्तमान में जिएं। भविष्य की कल्पना में वर्तमान को छोड़ बैठने की भांति कितने ही व्यक्ति भूत का जीवन जीते हैं। वे ऐसी दुनिया में रहते हैं, जिसका अस्तित्व बहुत समय पूर्व समाप्त हो गया था।

भविष्य में क्या सफलताएं पाकर क्या-क्या आनंद उठाया जाएगा। इसके सुंदर सपने कई व्यक्ति इस प्रकार संजो लेते हैं कि वे यथार्थ जैसे लगते हैं। शेखचिल्ली की कहानी प्रख्यात है, जिसने तेल ढोने की मजदूरी मिलने के पूर्व ही उससे मुर्गी, बकरी, बीवी़बच्चे प्राप्त होने का सपना इतना गहरा गढ़ लिया था, जिसमें तन्मय होकर वह सिर पर रखे घड़े को ही गंवा बैठा और मालिक द्वारा प्रताड़ना सहता फिरा। इसका कोई निश्चय नहीं कि भविष्य में क्या होगा? प्रयत्न करने पर परिस्थितियां मनचाही बन जाएं, यह कोई ठीक नहीं। चाहना ही सब कुछ नहीं है। परिस्थितियां कहीं से कहीं मोड़ ले सकती है और जैसा सोचा गया था, उससे सर्वथा पृथक प्रकार का जीवनयापन करना पड़ सकता है। सोचना एक बात है और पाना दूसरी बात। ऐसी दशा में अवास्तविकताओं के कल्पना लोक में विचरण करते रहने से किसी का क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है।

महत्व वर्तमान का ही है। भूत के अनुभवों का मात्र इतना ही लाभ है कि जो सीखा गया है, उससे वर्तमान को अधिक सुव्यवस्थित बनाया जाए। भविष्य चिंतन की उपयोगिता इतनी ही है कि उसके आधार पर वर्तमान की गतिविधियों को सुनियोजित किया जाए। वर्तमान के सुनियोजन न कर पाने और कुछ विशिष्ट बनने की कल्पना करते रहने वालों के हाथ से समय निकल जाता है। अंतत: उस किशोर की भांति पश्चाताप की अग्नि में जलना पड़ता है, जो जीवनपर्यन्त भटकता रहा। एक निश्चित लक्ष्य के अभाव में कुछ नहीं बन सका और सारा जीवन व्यर्थ चला गया। ऐसी स्थिति में कितने ही युवक-युवतियों की होती है। अपनी क्षमताओं का और उपलब्ध परिस्थितियों का ठीक प्रकार से एक निश्चित लक्ष्य में नियोजन नहीं कर पाते। दुनिया के रंग-बिरंगे आकर्षणों में उनका मन भटकता रहता है। फलत: वर्तमान छूटता जाता है और अंतत: यह भूल उन्हें वहां ले जा पकटती है, जहां कि पश्चाताप में सिर पीटने के अतिरिक्त कुछ शेष नहीं रहता। हरव्यक्ति को वर्तमान में जीना और उसी को ठीक प्रकार संजोने तक संभालने में दत्तचित रहना चाहिए। आगे-पीछे की बात सोचने में हर्ज नहीं, पर उनकी मर्यादा उतनी ही रहनी चाहिए, जो वर्तमान से तालमेल खाती है। आज जो संभव है, उसी को अधिक अच्छा बनाने का प्रयत्न किया जाए। अपनी बुद्धिमता, तत्परता और जागरुकता को उसी पर केंद्रित किया जाए। वर्तमान को परिष्कृत और श्रेष्ठ बनाने में ही बुद्धिमता है। किसी विचारक का कथन है 'जो बूत के साथ गुंथे रहते हैं, वे वृद्ध हैं, जो मात्र भविष्य की कल्पनाएं गढ़ते रहते हैं, वे बच्चे हैं तथा जो वर्तमान का सदुपयोग करते हैं, वे युवक हैं. बाल और वृद्ध की स्थिति से निकलकर हर व्यक्ति को अपनी युवा मनोभूमि का परिचय देना चाहिए। वर्तमान के सदुपयोग का अर्थ है- अपनी परिस्थितियों, योग्यताओं और साधनों को सुनियोजित करना।'

युग निर्माण योजना

आपके पत्र

कहां खड़े हैं आज हम ?

भारत ने वैश्विक पहचान हासिल करने के लिए ढेर सारी चुनौतियों को पार करते हुए दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्रों में से एक बनने के लिए छोटे कदम उठाए। भारत ने आजादी के बाद से एक लंबा सफर तय किया है, कई सही और गलत फैसलों से परहेज किया है, जो कई ऐसे स्थलों को पीछे छोड़ता है जो विभाजन की पीड़ा से एक मजबूत, शक्तिशाली और विकासशील राष्ट्र की यात्रा को परिभाषित करते हैं। हाल ही के दशकों में भारत धीरे-धीरे अंतरराष्ट्रीय स्थान पर ऊपर चढ़ता जा रहा है और इसके कारण विश्व की एक प्रमुख महाशक्ति के रूप में इसका वैश्विक प्रभाव भी नजर आने लगा है. पिछले चार दशकों में एक जबरदस्त ताकत के रूप में उभरकर सामने आया है और भारत ने भी काफ़ी ऊंचाइयां हासिल कर ली हैं। इसके कारण विश्व की आर्थिक शक्ति का केंद्र यूरोप और उत्तरी अमेरिका से हटकर एशिया की ओर स्थानांतरित होने लगा है। उदीयमान प्रबल शक्ति के बावजूद भारत अक्सर वैचारिक ऊहापोह में घिरा रहता है। यही कारण है कि देश के उज्ज्वल भविष्य और वास्तविकता में अंतर दिखाई देता है। हालांकि भारत महाशक्ति बनने की प्रक्रिया में प्रमुख बिंदुओं पर खरा उतरता है, लेकिन व्यापक अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में घरेलू मुद्दों के कारण वह कमजोर पड़ जाता है। हालांकि भारत के कई नेता गति को आगे बढ़ाने और सामाजिक राजनीतिक संकट से बचने में विफल रहे, यह भी राजनीतिक इच्छाशक्ति और प्रतिबद्धता की कमी का मामला था। भारत में विविधता के कारण, कहीं न कहीं आना मुश्किल है। हालांकि, अनुच्छेद 44 में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) यानी एक समान नागरिक संहिता लगने के प्रयासों को रूढ़िवादी वर्गों के प्रतिरोध का सामना करना पड़ा, जिन्होंने दावा किया कि इससे सांप्रदायिक वैमनस्य पैदा होगा।

पानी की तरह किलोमीटर पर भारत में भाषा बदल जाती है। इसलिए, हिंदी केवल आधिकारिक भाषा के रूप में लाना मुश्किल था और 1965 में तमिलनाडु के हिंदी-विरोधी आंदोलन जैसे हिंसा और गरमागरम बहस देखी गई। जनसंख्या नियंत्रण कानून 2019 का जनसंख्या नियंत्रण विधेयक, जिसे 2022 में वापस ले लिया गया था। दो संतान नीति को आजादी के बाद से 35 बार संसद में पेश किया गया है। इन मसौदे की आम जनता द्वारा भारी आलोचना की गई थी। कृषि अर्थशास्त्री और अन्य हितधारक दशकों से कृषि बाजार में सुधार की वकालत कर रहे हैं। इसने संकट से बचने के लिए तीन प्रमुख कृषि सुधार कानून जिन्हें निरस्त कर दिया गया को फिर से चुपके मोड में आगे बढ़ाने के बारे में सरकार को झिड़क दिया। लेबर कोड पर नियम आज तक टाले गए। कोड के परिणामस्वरूप कम टेक-होम पे और आसान छंटनी होगी। नि:संदेह सरकार को सुधार के मार्ग पर बहुत सावधानी से चलना होगा।

लोकतंत्र की सफलता में पहला है मतदान को अनिवार्य बनाना, जैसा कि कम से कम 30 लोकतंत्रों में किया गया है, जिससे मतदान प्रतिशत बढ़कर 90 प्रतिशत से अधिक हो गया है। देश जितना हिन्दू-मुसलमान सोशल मीडिया पर दिखाई देता है उतना है नहीं। आज का भारत किसी के बहकावे में आने वाला नहीं है। बदलते भारत के लोगों में अपने विवेक के आधार पर निर्णय करके देश को प्राथमिकता देने जैसी बातें प्रमुखता से सामने आईं। बिना साक्षरता के कोई भी देश आगे नहीं बढ़ सकता। ऐसे में सभी शिक्षित हों तभी सारी समस्याओं से आजादी पाई जा सकती है। साक्षरता के साथ-साथ देश भर में बढ़ती बेरोजगारी युवाओं को गुलामी का अहसास देती है, आखिर वो कब इससे आजाद होगा? अमृत महोत्सव के जश्न में डूबे, कहां खड़े हैं आज हम? सोचना होगा।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

प्रकाशक, मुद्रक : राजीव रंजन श्रीवास्तव द्वारा पत्रकार प्रकाशन प्रा. लि. के लिए 506, आई.एन.एस. बिल्डिंग, 9, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित एवं बीएफएल इंफोटेक लि., सी 9, सेक्टर-3, नोएडा से मुद्रित। सम्पादक : राजीव रंजन श्रीवास्तव, (पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)। आर.एन.आई. नं. DELHIN/2008/24216. दिल्ली कार्यालय :फोन: 011-23718195,23357784, फैक्स: 011-43581404, नोएडा कार्यालय: फोन: 0120-4114404 फैक्स: 0120-4273770 ई-मेल: deshbandhudelhi@gmail.com वेब: www.deshbandhu.co.in

हवाई में जंगल की आग से मरने वालों की संख्या 106 हुई

हवाई। अमेरिका में हवाई प्रांत के माउई जंगल की आग में मरने वालों की संख्या बढ़कर 106 तक पहुंच गई है। माउई काउंटी की ओर से यह जानकारी मिली है। इससे एक दिन पहले मरने वालों की संख्या 99 से अधिक बतायी गयी थी। नवीनतम जानकारी के अनुसार मंगलवार तक आग से झुलस कर मरने वालों की संख्या बढ़कर 106 तक पहुँच गयी है और जिनमें से केवल पांच मृतकों की पहचान की गयी है। काउंटी के मुताबिक अब तक करीब 32 फीसदी इलाके की तलाशी ली जा चुकी है। हवाई के गवर्नर जोश ग्रीन ने सोमवार को कहा कि तलाशी अभियान जारी रहने से मृतकों की संख्या काफी बढ़ सकती है।

देश विदेश

तोशाखाना मामले में इमरान की अपील पर 22 अगस्त को सुनवाई

इस्लामाबाद, 16 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान की अटक जेल में बंद पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान के तोषखाना मामले में दोषसिद्धि और सजा के खिलाफ दायर याचिका पर इस्लामाबाद उच्च न्यायालय (आईएचसी) 22 अगस्त को सुनवाई करेगा। मुख्य न्यायाधीश आमिर फारूक और न्यायमूर्ति तारिक महमूद जहांगीरी की खंडपीठ श्री खान की याचिका पर सुनवाई करेगी।

इस्लामाबाद की एक ट्रायल कोर्ट ने पांच अगस्त को पीटीआई प्रमुख को भ्रष्ट आचरण का दोषी पाया और मामले में उन्हें तीन साल जेल की सजा सुनाई। फैसले का मतलब यह है कि श्री खान आम चुनाव लड़ने के लिए भी अयोग्य हो गए हैं। अदालत ने तीस पेज के आदेश में कहा था, उन्होंने (इमरान) तोशाखाना से प्राप्त उपहारों के बारे में गलत जानकारी दी और उनकी झूठ साबित भी हो चुकी है। सुनवाई में फैसले की प्रत्याशा में पुलिस पहले से ही तैयार थी और अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश हुमायूं दिलावर द्वारा फैसला सुनाए जाने के कुछ मिनट बाद ही

■ इस्लामाबाद की एक ट्रायल कोर्ट ने पीटीआई प्रमुख को भ्रष्ट आचरण का पाया था दोषी

पुलिस हरकत में आ गई तथा श्री खान को लाहौर में उसके जमान पार्क आवास से गिरफ्तार कर लिया। पीटीआई अध्यक्ष ने इसके बाद अपनी सजा के खिलाफ अपने वकील ख्वाजा हारिस अहमद और बैरिस्टर गोहर अली खान के माध्यम से आईएचसी से संपर्क किया था और आईएचसी से उनकी अपील पर अंतिम फैसला आने तक उनकी कारावास की सजा को निलंबित करने का आग्रह किया था।

यूक्रेन को सहायता जारी रखेगा पाकिस्तान

पाकिस्तान के उप-रक्षामंत्री हमूद उज जमान खान ने कहा कि यूक्रेन में संघर्ष को कूटनीति के माध्यम से हल किया जाना चाहिए और पाकिस्तान प्रभावित क्षेत्रों में मानवीय सहायता प्रदान करना जारी रखेगा। श्री खान ने अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर मास्को सम्मेलन में कहा, पाकिस्तान, यूक्रेन में संघर्ष को कम करने के लिए एक राजनयिक समाधान की आवश्यकता की घोषणा करता है और प्रभावित क्षेत्रों में नागरिक आबादी को मानवीय सहायता प्रदान करता रहेगा। उल्लेखनीय है कि यूक्रेनी सैनिकों से सुरक्षा के लिए दोनेत्सक और लुगांस्क पीपुल्स रिपब्लिक के आह्वान के जवाब में रूस ने 24 फरवरी, 2022 को यूक्रेन में एक विशेष सैन्य अभियान शुरू किया था। रूसी रक्षा मंत्रालय ने कहा कि इस अभियान का उद्देश्य यूक्रेन को विसैन्यीकरण और अस्वीकृत करना और डोनबास को पूरी तरह से मुक्त करना है।

पाकिस्तान के फैसलाबाद में कई चर्चों में तोड़फोड़

इस्लामाबाद, 16 अगस्त (एजेंसियां)। पाकिस्तान के फैसलाबाद के जरनवाला जिले में ईशनिंदा के आरोप में बुधवार को कई चर्चों में तोड़फोड़ की गई। जरनवाला तहसील के पादरी इमरान भट्टी ने स्थानीय मीडिया को बताया कि ईसा नगरी इलाके में स्थित साल्वेशन आर्मी चर्च, यूनाइटेड प्रेस्बिटेरियन चर्च, एलाइड फाउंडेशन चर्च और शहरूनवाला चर्च में तोड़फोड़ की गई। उन्होंने कहा कि ईशनिंदा के आरोपी ईसाई सफाईकर्मी का घर भी तोड़ दिया गया। इस बीच पंजाब पुलिस प्रमुख उस्मान अनवर ने कहा कि पुलिस प्रदर्शनकारियों से बातचीत कर रही है और इलाके की घेराबंदी कर दी गई है। अधिकारी ने कहा कि शांति समितियों के साथ मिलकर स्थिति को नियंत्रित करने के प्रयास जारी हैं और पूरे प्रांत में पुलिस को चौकस कर दिया गया है।श्री अनवर ने कहा, ईसाई समुदाय के सदस्य क्षेत्र के सहायक आयुक्त को भी लोगों के खिलाफ होने के बाद वहां से हटा दिया

ईशनिंदा के आरोपी का घर भी तोड़ा

गया है। इस बीच 'डॉन' समाचार पत्र ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि ईसाई नेताओं ने आरोप लगाया कि पुलिस मूकदर्शक बनी रही। बाद में, पुलिस ने आरोपी के खिलाफ पाकिस्तान दंड संहिता की धारा 295बी और 295सी के तहत प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज की। चर्च ऑफ पाकिस्तान के अध्यक्ष बिशप आजाद मार्शल ने 'एक्स' (ट्यूटर) पर कहा कि बाइबिल का अपमान किया गया है और ईसाइयों पर पवित्र कुरान का उल्लंघन करने का झूठा आरोप लगाया गया है।

दैनिक पंचांग

mypandit.com 24 hour astrology service

■ बेजान दारूवाला

ग्रह स्थिति : गुरूवार 17 अगस्त, 2023 श्रावण कृष्ण पक्ष 14

राशिफल

मेष -आपको अपने उग्र स्वभाव और जिद्दी व्यवहार पर नियंत्रण रखने की जरूरत है। परिश्रम के बाद निर्धारित सफलता नहीं मिलने से मन में खिन्नता रहेगी। शारीरिक स्वास्थ्य भी कमजोर रहेगा। यात्रा के लिए योग्य समय नहीं है।

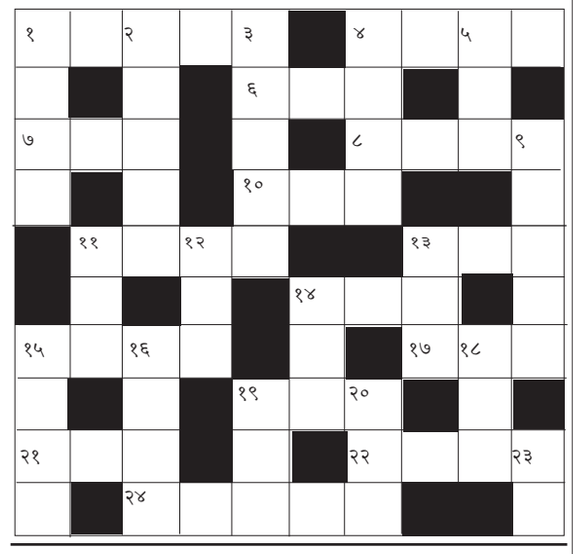

वृषभ -आज आपकी कार्य सफलता में दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास की भूमिका होगी। पितृपक्ष की तरफ से लाभ होगा। विद्यार्थी पढ़ाई में रुचि बनाए रख सकेंगे। सरकारी काम में सफलता या लाभ मिलेगा।

मिथुन -दिन की शुरुआत से ताजगी और स्फूर्ति का अनुभव करेंगे। भाग्यवृद्धि के अवसर आएंगे। तेजी से बदलते हुए विचार आपको उलझपूर्ण स्थिति में रखेंगे। नए काम का आरंभ कर सकेंगे।

कर्क -आज मन में थोड़ी हताशा रह सकती है। परिवार में सदस्यों के साथ गलतफहमी या मनमुटाव होगा। इगो से किसी की भावनाओं को चोट पहुंचेगी। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में नहीं लगेगा। धन खर्च होगा।

सिंह -आत्मविश्वास तथा त्वरित निर्णय लेकर काम में आगे बढ़ सकेंगे। सामाजिक मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। वाणी, व्यवहार में उग्रता तथा किसी के साथ इगो का टकराव होने की संभावना है। पिता या बुजुर्गों से लाभ प्राप्त होगा।

कन्या -शारीरिक और मानसिक चिंता में रहेंगे। इगो के कारण किसी के साथ झगड़ा हो सकता है। आकस्मिक धन खर्च होगा। दांपत्यजीवन में परेशानी आ सकती है। मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य खराब होगा।

तुला -गृहस्थ जीवन में सुख और आनंद की प्राप्ति होगी। आय वृद्धि का योग है। ऑफिस, व्यवसाय के क्षेत्र में अनुकूल वातावरण रहेगा। पदोन्नति मिलने के योग हैं। पारिवारिक सदस्य तथा मित्र मंडल के साथ खुश रहेंगे।

वृश्चिक -आपके सभी काम सरलता से पूरे होंगे। गृहस्थजीवन में आनंद और संतोष का अनुभव होगा। स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। समाज में मान-सम्मान मिलेगा। अधिकारियों और बुजुर्गों की कृपादृष्टि रहेगी।

धनु -आज कोई भी खतरनाक कदम आपको कठिनाई में डाल सकता है। किसी भी काम को करने में उमंग- उत्साह का अभाव रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से चिंता में रहेंगे। नौकरी- धंधे में तकलीफ और अवरोध उत्पन्न होंगे।

मकर -आज आपके लिए नकारात्मक विचारों से दूर रहने और खान-पान पर ध्यान देने की जरूरत है। अचानक धन खर्च होगा। चिकित्सा के पीछे खर्च होने की संभावना है। व्यापार में भागीदारों के साथ मतभेद बढ़ेंगे।

कुंभ -प्रेम, रोमांस, यात्रा, पर्यटन और मनोरंजन आपके आज के दिन का एक हिस्सा बनकर रहेंगे। परिजनों और मित्रों के साथ भोजन करने जाने का अवसर आएगा। उत्तम वस्त्र, आभूषण और वाहन प्राप्ति का योग है।

मीन -दैनिक कार्य निर्विघ्न पूरे होंगे। घर में सुख- शांति का वातावरण रहेगा। स्वभाव में उग्रता रहेगी। वाणी और व्यवहार में संभलकर काम करें। विरोधियों को परास्त कर सकेंगे।

नोट-उपरोक्त राशिफल बेजान दारूवाला द्वारा पूर्वलिखित है।

जापान से गुजरा तूफान 'लैन', 49 घायल

टोक्यो, 16 अगस्त (एजेंसियां)। जापान के कई हिस्सों से बुधवार को शक्तिशाली तूफान 'लैन' के गुजरने के कारण मूसलाधार वर्षा और तेज हवाएं चलने से करीब 49 लोग घायल हो गए। अग्नि एवं आपदा प्रबंधन एजेंसी ने कहा कि मध्य से लेकर पश्चिमी जापान के नौ प्रान्तों में तूफान आने के कारण कुल 49 लोगों के घायल हो गए हैं। इसमें ह्योगो प्रान्त के 24 लोग भी शामिल हैं। उन्होंने बताया कि तूफान से 141 घर क्षतिग्रस्त हो गए। यह इस साल का सातवां तूफान है। मौसम विभाग ने टोटोरी शहर में उच्च आपातकालीन चेतावनी जारी की। शहर के साजिचो जिले में प्रति घंटा 97.5 मिलीमीटर बारिश हुई, जो 1982 में आंकड़ों की शुरुआत के बाद से सबसे अधिक है। टोटोरी में तूफान के कारण आई बाढ़ से दो पुल ढह गए और एक सड़क बह गई। एनएचके की रिपोर्ट के अनुसार, बुधवार सुबह नौ बजे तक टोटोरी प्रान्त में तूफान के प्रभाव के कारण 844 घरों में 1,800 से अधिक लोग फंसे हुए हैं। देश के दक्षिण-पश्चिम में टोक्यो और हाकाटा के बीच सीधी बुलेट ट्रेन सेवाएं रोक दी गईं। दिन के दौरान मौसम सुधरने के बाद, ट्रेन सेवाएं धीरे-धीरे बहाल कर दी गईं। वाकायामा, ओसाका, मी, आइची, तोकुशिमा और शिज़ुओका सहित कई तूफान प्रभावित प्रान्तों में मंगलवार से बुधवार तक बिजली कटौती से लगभग 50 हजार घर प्रभावित हुए।

इकोवास के अध्यक्ष अहमद टीनुबू बोले

नाइजर के खिलाफ प्रतिबंध को बरकरार रखेगा इकोवास

नियामे, 16 अगस्त (एजेंसियां)। नाइजीरिया के राष्ट्रपति एवं पश्चिम अफ्रीकी राज्यों के आर्थिक समुदाय (इकोवास) के अध्यक्ष बोला अहमद टीनुबू ने गैबोनीज़ के विदेश मंत्री हरमन इम्मॉन्गॉल्ट से मुलाकात की और नाइजर में तख्तापलट के मद्देनजर इकोवास के प्रतिबंधों को बनाए रखने के महत्व पर जोर दिया। नाइजीरिया के अखबार वनगार्ड ने श्री टिनुबू के हवाले से अपनी रिपोर्ट में यह जानकारी दी है। श्री टिनुबू ने मंगलवार को अंबुजा में बैठक के दौरान कहा, मैं नाइजर की स्थिति पर गैबोनीज के राष्ट्रपति अली बोंगो की एकजुटता और समर्थन की सराहना करता हूं। हम समस्या को बढ़ाने के लिए काम नहीं कर रहे हैं। हमारे पास नेक इरादे वाले लोग हैं जिन्होंने हस्तक्षेप किया है। मैं किसी भी मुद्दे पर हमारे लोगों के सैन्य कार्रवाई का रूप डर को समझता हूं कार्रवाई का रूप। हम प्रतिबंधों को लागू रखने के लिए काम कर रहे हैं और हम इसका अक्षरशः पालन कर रहे हैं। उन्होंने मध्य अफ्रीकी राज्यों के आर्थिक समुदाय (ईसीसीएएस) का इस मुद्दे

पर समर्थन के लिए प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि लोकतांत्रिक सरकार में हस्तक्षेप इकोवास को स्वीकार नहीं है। इस बीच पद से बेदखल किए गए नाइजर के राष्ट्रपति मोहम्मद बजौम के नेतृत्ववाली पार्टी फॉर डेमोक्रेस एंड सोशलिज्म (पीडीएसएन-तराया) ने लोकतंत्र समर्थकों से देश के लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित नेता पर मुकदमा चलाने की तख्तापलट करने वाले नेताओं की योजनाओं के खिलाफ रैली निकालने का आह्वान किया है। इस बीच नाइजर एस्वाटीनी के कार्यवाहक रक्षा मंत्री प्रिंस सिसलो ड्लामिनी ने रूसी न्यूज एजेंसी स्पूतनिक से कहा कि संघर्ष को हल करने का सबसे उपयुक्त तरीका बातचीत है।

'अमेरिकी सैनिक ट्रैविस किंग अवैध रूप से पहुंचा उत्तर कोरिया'

प्योंगयांग, 16 अगस्त (एजेंसियां)। उत्तर कोरिया ने कहा कि सेना में 'अमानवीय दुर्व्यवहार और नस्लीय भेदभाव' के कारण अमेरिकी सैनिक ट्रैविस किंग पिछले महीने उनके क्षेत्र में अवैध रूप से घुस आया था। समाचार एजेंसी केसीएनए ने बताया कि एक ट्रैविस किंग (23) उत्तर में शरण चाहता है। अमेरिका संयुक्त राष्ट्र कमान की मदद से किंग की रिहाई के लिए बातचीत करने की कोशिश कर रहा है, जो सीमा क्षेत्र को चलाता है। उत्तर कोरियाई रिपोर्ट पर बुधवार को प्रतिक्रिया देते हुए, पेंटागन के एक अधिकारी ने कहा कि उनकी प्राथमिकता प्राइवेट किंग को सुरक्षित घर वापस लाना है। उत्तर कोरिया को किंग के साथ कैसा व्यवहार करने की योजना बना रहा है। श्री ग्रीन ने लेकिन यह भी कहा कि उत्तर कोरिया अभी ट्रैविस किंग की अमेरिका वापसी के लिए बातचीत करने की जल्दी में नहीं है। उन्होंने सार्वजनिक रूप से बीजिंग और मॉस्को पर अपनी बात रखी है, जैसा कि हाल के सप्ताह में दोनों देशों के उच्च स्तरीय

किंग की रिहाई के लिए बातचीत करने की कोशिश कर रहा अमेरिका

प्रतिनिधिमंडल ने प्योंगयांग का दौरा किया है। उन्होंने कहा कि यह सोचना ग़लत है कि उत्तर कोरिया को इससे निपटने के लिए जल्दी करनी होगी या करने की जरूरत है। केसीएनए के मुताबिक, अवैध रूप से उत्तर कोरिया पहुंचा अमेरिकी ट्रैविस किंग सजा के पात्र है या नहीं। इसके बारे में अभी कुछ कहा नहीं जा सकता है। जांच के दौरान, ट्रैविस किंग ने कबूल किया, उसने डीपीआरके (उत्तर कोरिया) में आने का फैसला किया था क्योंकि उसके मन में अमेरिकी सेना के भीतर अमानवीय दुर्व्यवहार और नस्लीय भेदभाव के खिलाफ बुरी भावना थी।

लीबिया में सशस्त्र संघर्ष में मृतकों की संख्या बढ़कर 27 हुई

काहिरा, 16 अगस्त (एजेंसियां)। लीबिया की राजधानी त्रिपोली में सशस्त्र संघर्ष में मृतकों की संख्या बढ़कर 27 हो गई और 106 लोग घायल हुए हैं। लीबिया की राष्ट्रीय एकता सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय के आपातकालीन चिकित्सा और सहायता केंद्र ने मंगलवार को यह जानकारी दी। केंद्र ने सोशल मीडिया पर कहा, त्रिपोली में सशस्त्र संघर्ष के कारण सत्ताईस लोग मारे गए और 106 घायल हुए हैं। केंद्र ने कहा कि झड़पों के कारण 134 परिवारों को निकाला गया है। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार सोमवार को, लीबियाई रक्षा मंत्रालय से संबद्ध 444वीं ब्रिगेड के कमांडर महमूद हमजा को कथित तौर पर विशेष निरोध बल द्वारा हिरासत में लिया गया था। इस घटना के कारण दोनों गुटों के बीच सशस्त्र झड़पें हुईं। लीबिया की राष्ट्रीय एकता सरकार ने उन क्षेत्रों में आपातकाल घोषित कर दिया जहां झड़पें हुईं, साथ ही मिटिगा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आंशिक रूप से आगमन और प्रस्थान निलंबित कर दिया गया। उल्लेखनीय है कि लीबिया में वर्तमान में दो प्रतिस्पर्धी सरकारों का शासन है। लीबिया का पश्चिमी भाग त्रिपोली संयुक्त राष्ट्र समर्थित राष्ट्रीय समझौते की सरकार द्वारा नियंत्रित है, जबकि पूर्वी भाग राष्ट्रीय स्थिरता सरकार के अधीन है।

आज का इतिहास

1836-ब्रिटेन की संसद में जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित पंजीकरण स्वीकार किये गये।
1858-हवाई द्वीप में पहला बैंक खोला गया।
1909-मदन लाल ढींगरा को वायली और लालकाका की हत्या मामले में पेंटोनविली कैदखाने में फाँसी दी गयी।
1914-लिथुवानिया ने जर्मनी के समक्ष आत्मसमर्पण किया।
1915-चक्रवाती तूफान से गेलवेस्टोन और टेक्सास में 275 लोगों की मौत।
1917-इटली ने तुर्की के खिलाफ युद्ध की घोषणा की।
1924-फ्रांस और जर्मनी के बीच व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किये गये।
1932-भारतीय मूल के प्रसिद्ध अंग्रेज़ी साहित्यकार वी.एस. नायपॉल का जन्म।
1945-सुकर्णो और मोहम्मद हट्टा ने इंडोनेशिया में नीदरलैंड से अपनी आजादी की घोषणा की।
1947-भारत की आज़ादी के बाद पहली ब्रिटिश सैन्य टुकडी स्वदेश रवाना
1959-सोवियत संघ और इराक ने इराक में परमाणु संयंत्र के निर्माण के लिये संधि पर हस्ताक्षर किये।
1961-हिंदी भाषा की जानीमानी कवयित्री अनामिका का जन्म।
1982-जर्मनी में पहली सीडी (कंपेक्ट डिस्क) लोगों के लिये उपलब्ध की गई।
1988-पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिया-उल-हक और अमेरिका के राजदूत अर्नाल्ड राफेल की एक हवाई दुर्घटना में मौत।
1994-अमेरिका और जापान ने वाशिंगटन में पेटेंट समझौते पर हस्ताक्षर किये।

तैयारी *जापान के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में दी जानकारी*

विदेश मंत्रियों ने त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन को लेकर की बातचीत

टोक्यो, 16 अगस्त (एजेंसियां)। जापान, अमेरिका और दक्षिण कोरिया के शीर्ष राजनयिकों ने शुक्रवार को होने वाले त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन को लेकर को बातचीत की है। जापान के विदेश मंत्रालय ने एक बयान में यह जानकारी दी। मंत्रालय ने बयान में कहा, जापान के विदेश मंत्री योशिमासा हयाशी, अमेरिकी के विदेश मंत्री एंटनी ब्लिकंन और दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्री पार्क जिन ने फिर कहा है कि तीनों देशों के आसपास स्थिति लगातार तनावपूर्ण होती जा रही है,

इसलिए जापान, अमेरिका और दक्षिण कोरिया के बीच त्रिपक्षीय सहयोग न केवल उत्तर कोरिया के संबंध में, बल्कि शांति और स्थिरता बनाये रखना क्षेत्र के लिए भी महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही तीनों देशों के सहयोग के माध्यम से हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्वतंत्र और खुली अवधारणा का एहसास भी कराना है। बयान में बताया गया कि

जापान, अमेरिका, दक्षिण कोरिया के विदेश मंत्रियों ने की बातचीत

तीनों मंत्री इस विचार से सहमत हैं कि 18 अगस्त को होने वाला त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन त्रिपक्षीय सहयोग के लिए एक ऐतिहासिक अवसर होगा। जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा 18 अगस्त को अमेरिका और दक्षिण कोरिया के नेताओं के साथ त्रिपक्षीय शिखर सम्मेलन में शामिल होने के लिए गुरुवार को अमेरिका जायेंगे।

अमेरिका का फोकस नीजर समस्या के कूटनीतिक समाधान पर

वाशिंगटन। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी ब्लिंकन ने कहा है कि नीजर में जुंटा द्वारा तख्तापलट की कोशिश के परिणामस्वरूप चल रहे राजनीतिक संकट को हल करने के लिए अमेरिका अभी भी कूटनीति पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है। ब्लिंकन ने विदेश विभाग में एक प्रेस ब्रीफिंग के दौरान संवाददाताओं से कहा, हम जो परिणाम चाहते हैं, यानी संवैधानिक व्यवस्था में वापसी, उसे प्राप्त करने के लिए कूटनीति पर बहुत ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि वह परिणाम हासिल करने में कूटनीति की गुंजाइश बनी हुई है। ब्लिंकन की टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब पश्चिम अफ्रीकी देश और उसके आसपास तनाव बना हुआ है। समाचार एजेंसी शिन्हुआ के अनुसार, एक क्षेत्रीय गुट ने नीजर में संवैधानिक व्यवस्था बहाल करने के लिए अतिरिक्त बल की सक्रियता और तैनाती की घोषणा की थी।

सुडोकू 6288

		9						6
		8				7	3	
1			7	8			4	
			3		6		5	
3				7				9
	1		9		2			
	9			2	8			1
	8	5				6		
2						5		

: नियम :
1. कुल 81 (9×9) वर्ग हैं, जिसमें 9 (3×3) वर्गों का एक खंड (ब्लॉक) बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1 से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते हैं।
3. बाएं से दाएं और ऊपर से नीचे के प्रत्येक कॉलम,कतार और खंड में 1 से 9 अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते हैं।

हल आज ही के अंक में

वर्ग पहेली 6288

१		२		३	■	४		५	
	■		■	६			■		■
७			■		■	८			९
	■		■	१०			■	■	
■	११		१२		■	■	१३		
■		■		■	१४			■	
१५		१६		■		■	१७	१८	
	■		■	१९		२०	■		■
२१			■		■	२२			२३
	■	२४					■	■	

बायें से दायें:-
१. समय सारिणी (टाइम टेबल)
४. तकलीफदेह
६. किसी वस्तु का टूटा हुआ भाग
७. राजा, हुकूमत करने वाला
८. परखने वाला, जांचने वाला
१०. रवैया, रीति-रिवाज
११. शाश्वत, सत्य, नित्य अनादि, प्राचीन
१३. सुबह, भोर
१४. सशक्त, तीव्र
१५. दोष, ऐब, बुराई
१७. टिकना, ठहरना, स्थायी रूप से निवास करना
१९. समूह, संघ, दल, सभा, समिति, विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लि संघठित संस्था,
२१. पानी में पैदा होने वाला
२२. नकल उतारने वाला (उर्दू)
२४. नकार देने या इंकार करने योग्य

ऊपर से नीचे:-
१. वह स्थान जहां से यंत्रोंआदि की सहायता से ग्रहों आदि का पर्यवेक्षण किया जाता है
२. अशक्त, विवश होना (मुहावरा)
३. कड़वी और अप्रिय बात
४. कठोरता
५. आंखों के सामने
९. कतराना, बचकर किनारे से निकल जाना (मुहावरा)
११. प्राणवान, जानदार
१२. युवक, जवान
१३. मांग, इच्छा, चाह (उर्दू)
१४. मूर्ति
१५. जिसका निवारण न किया जा सके, अटल, अत्यावश्यक
१७. पूज्य पुरुष, बड़ा, बुजुर्ग
१८. कामयाब
१९. विहान, भोर
२०. जन्मदाता
२३. चित्कार (उर्दू)

वर्ग पहेली-6287

ति	जा	२ र	त	■	■	३ क	र्ण	४ क	टु
थि	■	ह	■	५ प्र	वि	ष्ट	■	र्क	■
६					■	७			८
त्र	■	दि	■	९ र	फ्ता	र	■	■	भ
■	१० वि	ल	११ क्ष	ण	■	■	१२ झ	ट	का
■	क्रे	■	मि	■	१३ ब	ग	ल	■	र
१४ ह	ता	१५ ह	त	■	वा	■	१६ क	१७ न	क
थ	■	म	■	१८ ति	ल	१९ स्म	■	र्त	■
२० कं	गा	ल	■	ल	■	२१ र	वि	क	२२ र
डा	■	■	२३ आ	क	र्ष	क	■	■	ब

युसूफ कुरैशी, मो. 8109948408

दुनिया को जानें

नासा ने आर्कटिक वार्मिंग प्रयोग के लिए लॉन्च सेवा की घोषणा की

लॉस एंजिल्स, 16 अगस्त (एजेंसियां)। अमेरिका की नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा) ने एजेंसी के पोलर रेडियंट एनर्जी फार-इन्फ्रारेड एक्सपेरिमेंट (प्रीफायर) मिशन के लिए लॉन्च सेवा प्रदान करने के लिए कैलिफोर्निया स्थित एक एयरोस्पेस निर्माता और लॉन्च सेवा प्रदाता रॉकेट लैब यूएसए इंक का चयन किया है। नासा ने सोमवार को एक विज्ञप्ति में कहा कि मिशन का उद्देश्य शोधकर्ताओं को पृथ्वी में प्रवेश करने और छोड़ने वाली ऊर्जा की अधिक सटीक तस्वीर देना है। प्रीफायर मिशन आर्कटिक और अंटार्कटिका से यह समझने में अंतर को कम करने में मदद करेगा कि पृथ्वी की कितनी गर्मी अंतरिक्ष में खो जाती है। नासा के अनुसार, प्रीफायर माप का विश्लेषण जलवायु और बर्फ मॉडल को सूचित करेगा, जिससे बेहतर अनुमान मिलेगा कि गर्म होती दुनिया समुद्री बर्फ के नुकसान, बर्फ की चादर के पिघलने और समुद्र के स्तर में वृद्धि को कैसे प्रभावित करेगी।

प्रादेशिकी

हरियाणा रोडवेज सांझा मोर्चा गुरुवार को करेगा विरोध प्रदर्शन

सिरसा, 16 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा रोडवेज सांझा मोर्चा गुरुवार को सिरसा में करेगा विरोध प्रदर्शन। इस संबंध में बुधवार को सिरसा डिपो सांझा मोर्चा ने गेट मीटिंग का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता हरियाणा रोडवेज कर्मचारी सांझा मोर्चा सिरसा डिपो के नेता पृथ्वी सिंह चाहर, आत्माराम बरासरी, मोहनलाल सहारण व सीता सिंह ने की। कर्मचारी नेता पृथ्वी चाहर ने बताया कि सांझा मोर्चा द्वारा 23 जून 2023 को परिवहन मंत्री प्रधान सचिव परिवहन विभाग के साथ बैठक हुई थी, जिसमें बहुत से मांगों पर सहमति हुई थी। जिनमें से एक दो मांगों को छोड़कर बाकी सभी मांगें पेंडिंग पड़ी है, जिन पर सरकार गंभीर नहीं है।

कांगड़ा जिले के बाढ़ प्रभावितों को विशेष राहत पैकेज देगी सरकार : सुक्खू

शिमला, 16 अगस्त (देशबन्धु) मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने आज हवाई सर्वेक्षण के माध्यम से जिला कांगड़ा के फतेहपुर और इंदौरा विधानसभा के क्षेत्रों में बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों का जायजा लिया। उन्होंने पौंग जलाश्य से आगे की तरफ बाढ़ के कारण फंसे लोगों को निकालने के लिए चलाए गए राहत अभियान का जायजा भी लिया। इसके पश्चात वह डमटाल और शेखपुरा पहुंचे जहां जिला प्रशासन द्वारा बाढ़ प्रभावितों के लिए राहत शिविर स्थापित किए गए हैं। मुख्यमंत्री ने राहत शिविरों का निरीक्षण किया और लोगों से बातचीत की। उन्होंने खाद्य पदार्थों, चिकित्सा सुविधा, अन्य आवश्यक दवाओं सहित एंटी-वेनम दवाई पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करवाने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने राधा स्वामी सत्संग भवन शेखपुरा में स्थापित राहत शिविर में प्रभावितों के साथ भोजन किया।

मुख्यमंत्री ने मीडिया से अनौपचारिक बातचीत करते हुए कहा कि पौंग जलाशय के बहाव क्षेत्र में बाढ़ के कारण इंदौरा और फतेहपुर क्षेत्र की 27 पंचायतें प्रभावित हुई हैं, जिनमें से 22 पंचायतें

अधिक प्रभावित हैं। इन क्षेत्रों से अब तक लगभग 1150 लोगों को सुरक्षित निकाला जा चुका है। उन्होंने कहा कि भारतीय वायुसेना, सेना, राष्ट्रीय एवं राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल, पुलिस और होमगार्ड को बचाव अभियान में लगाया गया है। स्वास्थ्य विभाग द्वारा इन प्रभावित लोगों के लिए मुफ्त आवास और भोजन के अलावा चिकित्सा सहायता की भी व्यवस्था की गई है।

उन्होंने कहा कि पिछले 50 वर्षों में यह राज्य की सबसे विनाशकारी प्राकृतिक आपदा है और इससे घरों और फसलों को बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राहत और मुआवजे

- मुख्यमंत्री ने हवाई सर्वेक्षण के माध्यम से बाढ़ प्रभावित क्षेत्र का जायजा लिया

के तौर पर इन क्षेत्रों के लिए एक विशेष पैकेज प्रदान किया जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने इस आपदा के समय प्रभावितों के लिए मुआवजा राशि बढ़ाने का निर्णय लिया है और इसके तहत इस क्षेत्र के बाढ़ प्रभावितों को भी बढ़ा हुआ मुआवजा प्रदान किया जाएगा। आंशिक रूप से क्षतिग्रस्त मकानों के लिए एक लाख रुपये की सहायता राशि प्रदान की जाएगी और मकानों के पुनर्निर्माण के लिए भी हरसंभव सहायता दी जाएगी।

उन्होंने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि जिन छात्रों की पढ़ाई प्राकृतिक आपदा के कारण प्रभावित हुई है उनके लिए अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था की जाए। मुख्यमंत्री स्थानीय हेलीपैड पर भी गए और आपदा से सुरक्षित निकाले गए प्रवासी मज़दूरों से भेंट कर उन्हें विश्वास दिलाया कि प्रदेश सरकार उनकी सहायता के लिए सभी व्यवस्थाएं करेगी और यदि वे अपने राज्य वापस जाना चाहते हैं तो उसके अनुरूप व्यवस्था सुनिश्चित की जाएगी। उन्होंने प्रशासन को इन सभी प्रवासी मज़दूरों को रोज़मर्रा का सामान उपलब्ध करवाने के भी निर्देश दिए।

विधानसभा मानसून सत्र के मुद्दे पर विपक्ष पर निशाना साधते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे प्रदेश भर में इस आपदा के समय सरकार की प्राथमिकता बचाव और राहत उपाय कर स्थिति को सामान्य करना है। उन्होंने कहा कि यदि इस समय सत्र बुलाया जाता है तो बचाव और राहत अभियान में लगे सुरक्षाकर्मियों को विधानसभा से संबंधित कर्त्तव्यों के लिए तैनात करना होगा, जिससे राहत प्रक्रिया में बाधा आएगी। काठगढ़ शिव मंदिर समिति के अध्यक्ष ओपी कटोच ने इस अवसर पर मुख्यमंत्री राहत कोष के लिए एक लाख रुपये का चेक भेंट किया। इस अवसर पर कृषि मंत्री चंद्र कुमार, विधायक भवानी सिंह पठानिया और मलेंदर राजन, राज्य औद्योगिक विकास निगम के उपाध्यक्ष एवं पूर्व विधायक अजय महाजन, उपायुक्त डॉ. निपुण जिंदल, पुलिस जिला नूरपुर के पुलिस अधीक्षक अशोक रतन सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे

राजनीति के घटिया स्तर पर उतरे मंत्री : कश्यप

- न केंद्र की मदद और न ही नेता प्रतिपक्ष की मेहनत का कर पाए सम्मान
- जहां सीएम हेलीकॉप्टर से नहीं पहुंच रहे हैं, वहां नेता प्रतिपक्ष सड़क मार्ग से पहुंच जा रहे हैं

शिमला, 16 अगस्त (देशबन्धु)। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं सांसद सुरेश कश्यप ने कृष्ण नगर में घटनाल स्थल का दौरा किया और अंबेडकर भवन, सामुदायिक भवन में शरणार्थियों का हाल भी जाना। इस दौरान कश्यप ने कांग्रेस नेता मुकेश अग्निहोत्री पर पलटवार किया। मुकेश अग्निहोत्री राजनीति के सबसे घटिया स्तर पर उतर आये हैं। अपने मंत्रालय में अपनी न चला पाने की हताशा में वह अनाप-शनाप कुछ भी बोल रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष और बीजेपी पर उनके द्वारा लगाये गये आरोप घटिया और स्तरहीन हैं। वह हताशा में इस तरह के बयान दे रहे हैं। कश्यप ने कहा कि सरकार हर मोर्चे पर फेल है इसलिए वह विपक्ष पर बेतुके आरोप लगाकर लोगों का ध्यान भटकाना चाहती है। हिमाचल के लोग कांग्रेस के इन चालों में आने वाले नहीं हैं। सांसद ने कहा कि कि इस आपदा में बीजेपी और नेता प्रतिपक्ष राज्य सरकार के साथ खड़े हैं। सभी आपदा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर रहे हैं। सड़कें बंद होने और रास्ते ख़तरनाक होने के बावजूद भी नेता प्रतिपक्ष सड़क मार्गों से प्रदेश के हर आपदा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर चुके हैं। जबकि हेलीकॉप्टर उपलब्ध होने के बाद भी मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री उन जगहों पर नहीं पहुंच पा रहे हैं। नेता प्रतिपक्ष मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री से पहले आपदा प्रभावित क्षेत्रों में पहुंच रहे हैं।

कश्यप ने कहा आपदा के जिस समय सरकार के लोग एक दूसरे की टांग खिंचाई में व्यस्त थे उस समय नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर आपदा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा कर दिल्ली जा चुके थे और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह से मिलकर आपदाग्रस्त प्रदेश के लिए अग्रिम राहत जारी करने की पैरवी कर रहे थे। उसके अगले दिन वह राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के साथ आपदा प्रभावितों से मिल रहे थे। उनके प्रयास के कारण केंद्र सरकार ने आपदा के तीसरे दिन प्रदेश को 364 करोड़ की सहायता राशि जारी कर दी। नेता प्रतिपक्ष यहीं नहीं रुके वह फिर दिल्ली गये, वित्त मंत्री, रक्षा मंत्री और सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री से मिले। नितिन गड़करी से मिलकर उन्हें हिमाचल चल कर आपदाग्रस्त इलाक़ों का दौरा करके नुक़सान को अपने आँखों से देखने का आग्रह किया। नितिन गड़करी आये और हिमाचल में आपदा से क्षतिग्रस्त हुए नेशनल हाईवे और फ़ोर लेन पर खर्च होने वाले हज़ारों करोड़ के खर्च के अलावा नेशनल हाईवे से एक किलोमीटर के रेडियस में नुक़सान हुई सड़कों और पुलों को दुरुस्त करने या नई बनाने का की घोषणा की, जिस पर काम चल रहा है। इसके अलावा नितिन गड़करी ने सीआरएफ़ के तरह सड़कों को बहाल करने के लिए राज्य सरकार को चार सौ करोड़ रुपये अलग से दिए। गृहमंत्री ने पिछले हफ़्ते 190 करोड़ अलग जारी किए। केंद्रीय बलों द्वारा दुनिया के सबसे साहसिक रेस्क्यू मिशन चलाकर लोगों के जीवन की रक्षा की जा रही है।

कश्यप ने कहा इतना प्रयास करने के बाद भी से मुकेश अग्निहोत्री द्वारा विपक्ष और नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर के ख़िलाफ़ इस तरह की टिप्पणी न सिर्फ़ दुर्भाग्यपूर्ण हैं अपितु राजनैतिक घटियापन भी है। उन्हें इस तरह की हरकतों से बाज आना चाहिए और आपदा राहत के लिए ख़ुद क्या किया यह बताना चाहिए।

सार संक्षेप

हिमाचल लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष ने राज्यपाल को वार्षिक रिपोर्ट की प्रस्तुत

शिमला। हिमाचल प्रदेश लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष कैप्टन रामेश्वर सिंह ठाकुर ने बुधवार को राजभवन में राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल को वर्ष 2022-23 के लिए आयोग की 52वीं वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर आयोग के सदस्य डॉ. रचना गुप्ता, राकेश शर्मा, कर्नल राजेश कुमार शर्मा और डॉ. नैन सिंह तथा आयोग के सचिव डी.के. रतन भी उपस्थित थे। राज्यपाल ने आयोग द्वारा इस वर्ष के दौरान विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने में सभी सदस्यों, अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रयासों की सराहना की। कैप्टन रामेश्वर सिंह ठाकुर ने राज्यपाल को अवगत करवाया कि राष्ट्रीय सूचना केन्द्र (एनआईसी) की सहायता से वन टाइम रजिस्ट्रेशन (ओटीआर) और ऑनलाइन भर्ती आवेदन (ओआरए) सहित ऑनलाइन भर्ती प्रणाली (ओआरएस) को बेहतर बनाने और इसे उपयोगकर्ताओं के अधिक अनुकूल और त्रुटि रहित बनाने के लिए बेहतर प्रयास किए गए हैं। उन्होंने कहा कि लिखित परीक्षाओं का आयोजन केवल सीसीटीवी युक्त संस्थानों में ही सुनिश्चित किया गया है। उन्होंने कहा कि भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए प्रणाली को सुदृढ़ किया गया है। अभ्यर्थियों की मांग और बदलते परिदृश्य के दृष्टिगत व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी बनाने के लिए नए नियम तैयार किए गए हैं। उन्होंने कहा कि एचपीपीएससी-आईसीटी परियोजना के सफल कार्यान्वयन के लिए कंप्यूटर सोसायटी ऑफ इंडिया द्वारा आयोग को परियोजना श्रेणी में 'राज्य सरकार 20वें एसआईजी ई-गवर्नेंस पुरस्कार-2022' से भी सम्मानित किया गया है।

कांग्रेस विधायक दल की बैठक, वीरेंद्र सिवाच पार्टी में शामिल

चंडीगढ़। हरियाणा विधानसभा में विपक्ष के नेता और राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा की अध्यक्षता में बुधवार को यहां कांग्रेस विधायक दल की बैठक हुई जिसमें आगामी विधानसभा के मानसून सत्र में पार्टी की रणनीति को लेकर चर्चा हुई। बैठक में सत्र के दौरान उठाए जाने वाले मुद्दों को लेकर भी विचार-विमर्श हुआ। बैठक से पूर्व 2019 विधानसभा चुनाव में जननायक जनता पार्टी (जजपा) के फतेहाबाद से उम्मीदवार रहे डॉ. विरेंद्र सिवाच कांग्रेस में शामिल हुये। श्री हुड्डा और प्रदेशाध्यक्ष उदयभान ने श्री सिवाच का पार्टी में स्वागत किया तथा उन्हें पूरा मान सम्मान देने का आश्वासन दिया। श्री सिवाच को गत विधानसभा चुनाव में 74000 से ज्यादा वोट मिले थे। इस मौके पर श्री सिवाच ने श्री हुड्डा और उदयभान के नेतृत्व और कांग्रेस की नीतियों के प्रति विश्वास वक्त करते हुए कहा कि वह कांग्रेस पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का काम करेंगे।

सुडोकू 6288 का हल

5	7	9	2	4	3	1	8	6
4	2	8	6	9	1	7	3	5
1	6	3	7	8	5	9	4	2
9	4	2	3	1	6	8	5	7
3	5	6	8	7	4	2	1	9
8	1	7	9	5	2	4	6	3
6	9	4	5	2	8	3	7	1
7	8	5	1	3	9	6	2	4
2	3	1	4	6	7	5	9	8

ब्रह्मनाद कल्चरल ने किया ब्रह्मनाद लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड का आयोजन

गुरुग्राम, 16 अगस्त (देशबन्धु) ब्रह्मनाद कल्चरल सेंटर ने सेक्टर 44 स्थित अपैरल हाउस में तबले पर आधारित शास्त्रीय संगीत का एक रंगारंग कार्यक्रम व ब्रह्मनाद लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड का आयोजन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता संजय चतरथ ने की। इस शास्त्रीय संगीत कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध मोहन वीणा के जनक एवं पद्मभूषण पं. विश्वमोहन भट्ट, बांसुरी वादक पं. चेतन जोशी एवं सितार वादक डॉ. रेणुका गंभीर रहे। ब्रह्मनाद संस्था के संस्थापक सार्थक कुमार ने 75 से अधिक शिष्यों ने तबले पर अपनी प्रस्तुति दी। तबले पर अपनी प्रस्तुति देने वालों में चार वर्ष से लेकर सत्तर वर्ष की उम्र तक के तबला वादक कलाकार थे। तबले की थाप से कलाकारों ने सभी दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इस अवसर पर पं. विश्व मोहन भट्ट ने सभी कलाकारों की भूरी भूरी प्रशंसा की। उन्होंने सार्थक कुमार के प्रयासों को भी दिल से सराहना की। पंडित विश्व मोहन ने कहा कि सार्थक कुमार पं. श्रीनिवास परिड़ा के शिष्य हैं, जो कि अजराड़ा घराने से ताल्लुक रखते हैं। सार्थक पिछले 20 वर्षों से तबले के प्रचार और प्रसार में अनवरत लगे हुए हैं। अभी तक 500 से अधिक बच्चे इनके सानिध्य में तबला सीख चुके हैं और इनमें से 80 से ज्यादा ग्रेजुएट हो चुके हैं। इनके शिष्य श्रीलंका, बैंकॉक, दुबई, रूस, स्पेन, थाईलैंड, एवं सिंगापुर आदि में भारतीय संगीत कला का प्रदर्शन करके सम्मानित हो चुके हैं।

कार्यक्रम में पं. विश्व मोहन भट्ट, पं चेतन जोशी एवं डॉ. रेणुका गंभीर को ब्रह्मनाद लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया गया।

उत्तराखंड वार्ता महोत्सव के लिए तैयार, हिमालयी संस्कृति व साहित्य को एक श्रद्धांजलि

देहरादून, 16 अगस्त (देशबन्धु)। 18 अगस्त से 20 अगस्त, 2023 तक उद्घाटन वार्ता महोत्सव के रूप में मंच एक रोमांचक सांस्कृतिक और साहित्यिक अनुभव के लिए तैयार है। यह अभूतपूर्व कार्यक्रम उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और केंद्र शासित प्रदेशों जम्मू, कश्मीर और लद्दाख की समृद्ध सांस्कृतिक टेपेस्ट्री को प्रदर्शित करने का वादा करता है। एक वार्षिक परंपरा के रूप में परिकल्पित यह उत्सव सांस्कृतिक वार्तालापों को सभी के लिए सुलभ बनाते हुए निःशुल्क प्रवेश प्रदान करता है। महोत्सव का उद्घाटन उत्तराखंड के माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी करेंगे। सम्मानित अतिथियों में श्री सतपाल जी महाराज, माननीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, और डॉ. धन सिंह रावत, माननीय शिक्षा मंत्री शामिल होंगे। उत्सव का कार्यक्रम विविध प्रकार की मनोरम गतिविधियों से परिपूर्ण है। मुख्य आकर्षण में शामिल हैं।

प्रतियोगिताएं : कार्यक्रमों में पेंटिंग, लोक गीत, फ्लैश फिक्शन, लोक नृत्य, पोस्टर डिजाइन, स्किट प्रदर्शन आदि जैसी विभिन्न श्रेणियों में अंतर-स्कूल और अंतर-कॉलेज प्रतियोगिताएं शामिल हैं। वार्तालाप और सेमिनार- वक्ता कहानी कहने के विभिन्न आयामों का पता

लगाएंगे, जिनमें लोक कथाओं और प्रामाणिक कहानी कहने के महत्व से लेकर अंतर-पीढ़ीगत संवाद और स्वदेशी भाषाओं के संरक्षण की अनिवार्यता शामिल है।

साहित्यिक कार्यक्रम: दिलचस्प बातचीत में लेखक सकारात्मक बदलाव लाने और समावेशिता को बढ़ावा देने के लिए कहानियों की परिवर्तनकारी शक्ति पर चर्चा करेंगे।

पुरस्कार और सम्मान : महोत्सव के दौरान लगभग 50 गौरव सम्मान पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे। महोत्सव में बच्चों के लिए दो नई पुस्तकों के लॉन्च के साथ-साथ पिछले वर्ष की छह असाधारण पुस्तकों का सम्मान भी किया जाएगा, जो युवा मन में पढ़ने के प्रति प्रेम को बढ़ावा देगा।

धंस रहा है कोटखाई का बागी गांव, दर्जनों घरों में दरारों से दहशत

शिमला, 16 अगस्त (एजेंसियां)। हिमाचल प्रदेश में कुदरत नहीं मान रही, खौफ व डर का माहौल बरकरार है। ताजा जानकारी में जनपद की कोटखाई तहसील की देवगढ़ तहसील के बागी गांव में जमीन लगातार धंसती जा रही है।

कामाक्षा व नाग देवता के प्राचीन मंदिरों में भी दरारें आ चुकी हैं। गांव के प्रेम चंद शर्मा का मकान तो करीब-करीब क्षतिग्रस्त ही हो चुका है। अभीतक 25 लाख तक के नुकसान का अनुमान है। नाराजगी इस बात को लेकर है कि प्रशासन की तरफ से केवल पटवारी ही मौके पर पहुंचा है। पटवारी को भेज कर खानापूर्ति करने का भी आरोप है।

ग्रामीणों का कहना है कि बड़ी विपदा से बचाव के लिए समीपवर्ती नाले में क्रेट लगाकर सुरक्षा दीवार बनाने की आवश्यकता है। फिलहाल प्रशासन से बात नहीं हो पाई है, लेकिन स्थानीय लोगों द्वारा उपलब्ध करवाए गए वीडियो को अगर आधार माना जाए तो वास्तव में भी गांव खतरे में है। घरों में दरारें हैं, प्राचीन मंदिरों को भी खतरा बना हुआ है।

गौरतलब है कि इस इलाके में पहले भी भूस्खलन की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। हालांकि, मौसम साथ देने लगा है, लेकिन भूस्खलन की घटनाओं में कमी नहीं आ रही। राजधानी शिमला ने ही पिछले 72 घंटों में तीन भयंकर भूस्खलन की घटनाओं का सामना किया है। इसमें दो दर्जन के करीब लोगों की मौत हो चुकी है।

जल निकासी प्रणाली की मजबूती के लिए व्यापक योजना विकसित की जाएगी : मुख्यमंत्री

शिमला, 16 अगस्त (देशबन्धु) प्रदेश में शहरी जल निकासी प्रणालियों को मजबूत करने और पहाड़ी अस्थिरता को रोकने के लिए उचित जल प्रबंधन की आवश्यकता है। राज्य सरकार जल निकासी प्रणालियों को मजबूत करने और निर्माण के लिए ठोस संरचनात्मक डिजाइन सिद्धांतों को एकीकृत करने के लिए एक व्यापक योजना विकसित की जाएगी। यह बात मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंदर सिंह सुक्खू ने मंगलवार देर शाम भूस्खलन प्रभावित शिमला के लालपानी क्षेत्र का दौरा करने के पश्चात कही। उन्होंने आपदा प्रभावित क्षेत्र में नुकसान का जायजा लिया और जिला प्रशासन को राहत एवं बचाव कार्य में तेजी लाने के निर्देश दिये। मीडिया से अनौपचारिक बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि जिला प्रशासन की समय पर प्रतिक्रिया से नुकसान काफी कम हो गया है क्योंकि इन घरों में रहने वाले लोगों को

- मुख्यमंत्री ने शिमला में आपदा प्रभावित लालपानी क्षेत्र का दौरा किया

आसन्न खतरे के कारण पहले ही खाली करा लिया गया था। उन्होंने कहा कि इन उपायों के अलावा राज्य सरकार एक व्यापक, दीर्घकालिक आपदा योजना तैयार कर रही है। इसके कार्यान्वयन के लिए लगभग 800 करोड़ रुपये का प्रावधान किया जाएगा, जिसका उद्देश्य भविष्य की आपदाओं के प्रभाव को कम करना है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि भारी बारिश के कारण सोमवार को 60 से अधिक लोगों की जान चली गई और यह संख्या बढ़ने की संभावना है। इसका प्रभाव शिमला में सबसे गंभीर रहा, जबकि कांगड़ा जिला के फतेहपुर में किसानों को फसल का नुकसान हुआ। पौंग बांध से पानी छोड़े जाने के कारण लगभग 300 लोगों के फंस जाने के बाद बचाव अभियान चलाया गया और सभी व्यक्तियों को सफलतापूर्वक बचा लिया गया। उन्होंने कहा कि लगातार भारी बारिश के कारण मंडी जिले में भी काफी नुकसान हुआ है। मुख्यमंत्री ने आपदा के समय में नेता प्रतिपक्ष जय राम ठाकुर द्वारा केवल राजनीति करने पर निराशा व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार राहत और बचाव कार्यों पर दृढ़ता से ध्यान केंद्रित कर रही है। उन्होंने विपक्ष द्वारा इस संकट की स्थिति में विधानसभा के विशेष सत्र की मांग की उपयुक्तता पर सवाल उठाया। उन्होंने आश्वासन दिया कि राज्य सरकार दस दिवसीय विधानसभा सत्र आयोजित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

बीमा क्लेम को लेकर किसानों ने सिरसा में रोका नेशनल हाईवे

सिरसा, 16 अगस्त (एजेंसियां)। हरियाणा में सिरसा जिला के 272 गावों के वर्ष 2022 के खरीफ फसल खराबी के 641 करोड़ रुपए बकाया बीमा क्लेम की अदायगी को लेकर भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) के बैनर तले आदोंलन पर उतारू किसानों ने बुधवार को सिरसा-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 9 को गांव बहावदीन के पास टोल प्लाजा पर अनिश्चितकालीन धरना देकर वाहनों के आवागमन को रोक दिया। टोल प्लाजा पर तैनात कर्मियों से उनके कम्प्यूटर व अन्य सामान उठवा दिया ओर वहां जमावड़ा लगाकर बैठ गए।

गौरतलब है कि किसानों ने तीन रोज पहले राष्ट्रीय राजमार्ग रोकने का ऐलान किया था बावजूद इसके स्थानीय प्रशासन की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाए गए जिनसे किसानों को टोल प्लाजा पर पहुंचने से रोका जा सके। इस मार्ग को रोक देने से सिरसा के साथ-साथ पड़ोसी प्रांत राजस्थान के श्री गंगानगर,हनुमानगढ़,पंजाब के फजिल्का, मुक्तसर, अबोहर, बठिंडा आदि जिलों के यहां से दिल्ली का सफर करने वाले लोगों को दुविधा झेलनी पड़ी। यातायात पुलिस ने सघंरसाधा मोड़ से विभिन्न गावों से ट्रेफि क को डायवर्ट कर फ तेहाबाद की ओर भेजा। बड़े ट्राले व अन्य भारी वाहन गावों में कमजोर मार्ग पर धंसने के डर से वहीं सड़क किनारे खड़े हो गए हैं। आदोंलनकारी किसानों द्वारा टोल प्लाजा पर कब्जा कर राष्ट्रीय राजमार्ग रोकने के बाद जिलाधीश ने धारा 144 लगाने का ऐलान किया जो बेअसर रही।

जिलाभर के विभिन्न गावों से किसान सुबह नौ बजे ही यहां आने आरम्भ हो गए थे। वहीं धरनास्थल गांव नारायाण खेड़ा से सैंकड़ों किसानों का काफि ला ट्रैक्टर,जेसीबी व कम्बाइन पर सवार होकर विभिन्न गावों से होते हुए यहां पहुंचे। किसानों ने सिरसा-दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग पर अपने वाहन खड़े करते हुए वाहनों के आवागमन को रोक दिया। किसान राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी कर रहे थे। आदोंलनकारी किसानों के लिए गांव बहावदीन के लोगों ने जलपान का प्रंबध पूर्व में ही किया हुआ था।

उधर गावं नारायण खेड़ा जल घर में चल रहे बीमा क्लेम की मांग को लेकर धरना स्थल पर चार किसान भरत सिंह झाझड़ा, नरेंद्र पाल सहारण, दीवान सहारण और जयप्रकाश कासनियां पिछले 15 दिन से जल घर की टंकी पर चढ़े हुए हैं। यहां आंदोलनरत्त किसान भावदीन टोल प्लाजा के लिए कूच कर गए पीछे से नारायण खेड़ा धरने की कमान किसान महिलाओं ने संभाली। सरपंच रीटा कासनियां, मनावती माखोसरानी, उर्मिला कैंरावाली, उन्नति बैनीवाल, अमन सहारण, सुनीता नारायण खेड़ा, उजाला, गुड्डी रायपुर सहित सैंकड़ों महिलाओं ने सरकार के खिलाफ रोष प्रदर्शन किया। महिलाओं ने क्यू बीज बिगन के बोवै र खट्टर देखे सै राम...मोदी रे हम तेरी बना देंगे रेल किस भूल में ना रहिए..... कर लो कदर किसान की....आदि गानों पर सरकार को कोसा।

टंकी पर चढ़े किसान नरेंद्र पाल की माता हंसकर सहारण दीवान सहारण की माता पावज्ञी, भारत सिंह झांझड़ा की माता भगवानी देवी और जयप्रकाश कासनियां की पत्नी सरोज भी पूरे दिन धरना स्थल पर डटी रहीं। इन्होंने क्षेत्र से आई हुई हजारों महिलाओं का हौसला बढ़ाया। उन्होंने कहा कि जब तक किसानों की जीत नहीं होगी तब तक आंदोलन जारी रहेगा। इन्होंने कहा कि खेतों में काम का समय तो चल रहा है लेकिन किसानी को बचाने के लिए उनके घर से संघर्ष कर रहे पुरुषों पर उन्हें गर्व है। बहावदीन टोल प्लाजा पर एकत्रित किसानों को संबोधित करते हुए भारतीय किसान यूनियन टिकेत के युवा विंग प्रदेशाध्यक्ष रवि आजाद,सुरेश ढाका,संदीप सिवंर,प्रकाश ममेंरा,मैक्स साहुवाला सहित अन्य वक्ताओं ने कहा कि किसान खराब हुई फ सल का पूर्व में जमा किए गए प्रीमियम के बदले फ सल खराबे का क्लेम मांग रहें हैं कोई खैरात नहीं ? फि र भी सरकार किसानों की बजाय बीमा कंपनी के साथ खड़ी है।

जान की बाजी लगाकर बचाई 1731 लोगों की जान

धर्मशाला, 16 अगस्त (वार्ता) हिमाचल के जिला कांगड़ा के इंदोरा और फतेहपुर उपमंडल में पोंग के बहाव क्षेत्र के साथ लगते गावों से अभी तक 1731 लोगों को सुरक्षित निकाला जा चुका है जिन्हें सकुशल बचाने में सेना समेत विभिन्न एजेंसियों के जवानों ने अहम भूमिका निभायी।

जिलाधीश कांगड़ा डॉ. निपुण जिंदल ने यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मंगलवार दोपहर से जारी इस रेस्क्यू ऑपरेशन में भारतीय सेना, वायु सेना, राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) और राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के जवानों ने अपनी जान की बाजी लगाकर बड़ी संख्या में लोगों की जान बचायी है।

उन्होंने बताया कि अभी तक हेलीकॉप्टर के मदद से कुल 739, बोट के द्वारा 780 और अन्य माध्यमों से 212 लोग सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाए गए हैं। उन्होंने बताया कि रेस्क्यू ऑपरेशन अभी जारी है और वे इसे स्वयं मौके पर रहकर मॉनिटर कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री श्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने भी आज यहां पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्यों का जायजा लिया और प्रशासन को बेहतर आपसी समन्वय से कार्य करने के निर्देश दिए।

दो एमआई-17 हेलिकॉप्टर के साथ सेना के 60 और एनडीआरएफ के 182 जवानों ने किया रेस्क्यू।

डॉ. निपुण जिंदल ने बताया कि पोंग बांध से अत्याधिक जल छोड़े जाने के कारण साथ लगते फतेहपुर और इंदौरा क्षेत्र में कई लोगों के फंसे होने की जानकारी प्रशासन को मिली थी।

प्रादेशिकी

धूमधाम के साथ मनाई गई वीरांगना अवंती बाई लोधी की जयंती

फर्रुखाबाद,16 अगस्त (देशबन्धु)। लोधी महासभा ने बुधवार को नगर के अनंत होटल में वीरांगना अवंती बाई लोधी की 192 वीं जयंती धूमधाम से मनाई। इस दौरान वक्ताओं ने संगठित होकर शिक्षा ग्रहण करने पर जोर दिया। समारोह की शुरुआत रानी वीरांगना अवंतीबाई लोधी के चित्र पर पुष्प अर्पित करके की गई। भाजपा सांसद मुकेश राजपूत ने समाज के लोगों से हर हालत में शिक्षा ग्रहण करने पर जोर देते हुए कहा कि जब हम सब मिलकर अपने बच्चों को शिक्षा में आगे बढ़ाएंगे तभी हमारा देश विकासशील से विकसित राष्ट्र की ओर अग्रसित होगा। एक दिन भारत विकसित देश की सूची में भी शामिल हो जाएगा। राजपूत ने महारानी वीरांगना अवंती बाई लोधी, गुलाब सिंह लोधी, महाराज ब्रह्मानंद स्वामी जी के चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उनके बताए हुए रास्ते पर चलने का आह्वान किया।

दुनिया भर में उत्तर प्रदेश फॉरेंसिक इंस्टीट्यूट की होगी पहचान : योगी

लखनऊ, 16 अगस्त (देशबन्धु)। कहीं कोई अपराध होता है तो उसकी जांच और रिपोर्ट पूरी होने में महीनों लग जाते हैं। बहुत बार पीड़ित न्याय पाने से वंचित हो जाता है या न्याय की आस में पूरा जीवन ही खत्म हो जाता है। आवश्यक है कि हम लोग आज अपराध की प्रकृति क्या है और समाज की डिमांड क्या है, उसके लिए खुद को तैयार करें। टेक्नोलॉजी के लिहाज से अगर हम खुद को तैयार नहीं करेंगे तो पिछड़ जाएंगे। हम आम लोगों के साथ न्याय नहीं कर पाएंगे। इसीलिए प्रदेश सरकार ने तय किया है कि हम लोग उत्तर प्रदेश राज्य फॉरेंसिक विज्ञान संस्थान की स्थापना करेंगे। प्रसन्नता है कि आज इसका पहला बैच 5 कोर्सेज के साथ शुरू हो रहा है। गृह विभाग के साथ ही संस्थान से जुड़े लोगों को इसे वर्ल्ड क्लास इंस्टीट्यूट के रूप में स्थापित करना है। हम नए कोर्सेज लेकर आएंगे। फॉरेंसिक से जुड़े टॉप संस्थानों के साथ एमओयू हो रहे हैं। नॉलेज शेयरिंग की जा रही है। अच्छी से अच्छी फैकल्टी का चयन किया जा रहा है। यह बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बुधवार को अपने सरकारी आवास पर उत्तर प्रदेश राज्य फॉरेंसिक विज्ञान संस्थान के प्रथम शैक्षणिक सत्र 2023-2024 के छात्रों से संवाद करते हुए कहीं। इस अवसर मुख्यमंत्री ने संस्थान के समस्त शिक्षकों एवं छात्र व छात्राओं का परिचय भी प्राप्त किया। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि समाज में हम गुड गवर्नेंस, डेमोक्रेसी जैसे शब्दों को सुनते हैं।

- मुख्यमंत्री ने उप्र राज्य फॉरेंसिक विज्ञान संस्थान के प्रथम शैक्षणिक सत्र के छात्रों से किया संवाद
- संस्थान की फैकल्टी व छात्रों के साथ ही गृह विभाग व उप्र पुलिस को दी
- इंस्टीट्यूट को वर्ल्ड क्लास बनाने की जिम्मेदारी

तकनीक के लिहाज से अगर हम खुद को तैयार नहीं करेंगे तो पिछड़ जाएंगे : योगी आदित्यनाथ

हर जनपद, थाने में साइबर हेल्प डेस्क होनी चाहिए

मुख्यमंत्री ने फॉरेंसिक जैसी तकनीक की वकालत करते हुए कहा कि 2017 में जब हमारी सरकार आई थी, तब साइबर क्राइम का रेट बढ़ता दिखाई दे रहा था। उस समय ही हमने कहा था कि इसे गंभीरता से लेना चाहिए। आज भी उसके एक्सपर्ट्स की कमी महसूस की जाती है। आज हम मानते हैं कि रेंज नहीं, बल्कि हर जनपद में और हर थाने में साइबर हेल्प डेस्क होनी चाहिए। साथ ही इसके एक्सपर्ट्स भी होने चाहिए। यही हाल एफएसएल लैब्स का भी है। इनके लिए साइंटिस्ट और टेक्नीशियंस की कमी है। ये सिर्फ यूपी नहीं पूरे देश में स्थिति है। आप इस आवश्यकता की पूर्ति का माध्यम बनेंगे। इसके लिए आपको खुद को तैयार करना होगा। साइबर अपराध से जुड़े लोगों से दो कदम आगे सोचने की आदत डालनी होगी। अपनी दृष्टि को विस्तार देना होगा। अगर आप किसी भी एंटी सोशल, एंटी नेशनल या लॉ एंड ऑर्डर को चुनौती देने वाले किसी भी तत्व से दो कदम आगे सोचने की सामर्थ्य रखते हैं तो आप उसको नियंत्रित कर पाएंगे। यदि दो कदम पीछे हैं तो वह आपको नियंत्रित कर लेगे।

कांग्रेसियों ने स्वतंत्रता दिवस पर निकाली बाइक रैली

मेरठ,16 अगस्त (देशबन्धु)। स्वतंत्रता दिवस के मौके पर मेरठ जिला व महानगर युवा कांग्रेस द्वारा बाइक रैली नकाली गई। जिसमें युवाओं ने बड़ी संख्या में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। रैली की शुरुआत स्वतंत्रता सेनानी धन सिंह कोतवाल की मूर्ति पर माल्यार्पण कर की गई। जो शहर के मुख्य स्थानों से होकर गुजरते हुए शहीद स्मारक पर जाकर समापत हुई। बाइक रैली के बाद युवा कांग्रेस द्वारा सुपर-शी-शक्ति प्रोग्राम के तहत महिलाओं द्वारा विभिन्न विधानसभाओं में ध्वजारोहण का प्रोग्राम कराया गया। कार्यक्रम में गौरव भाटी, नसीम कुरैशी, युगांश राणा, युवा कांग्रेस जिलाध्यक्ष अश्वनी गुर्जर, युवा कांग्रेस महानगर अध्यक्ष सय्यद आमिर रजा, मोहम्मद इमरान, साकिब, उमरदराज, अब्दुल हक, उवेस अंसारी, राशिद चौहान, मोहित भाटी, जैद इलाही, हर्ष प्रधान, आकिब अंसारी, सदाकत कुरैशी, अदीब फरिश्ता, हाफिज रियाजुद्दीन, उमर अंसारी, समीर कुरैशी, सलमान कुरैशी, फैजान, तानु, सालेहीन, मोनिस, चौधरी उमर फारूक, चौधरी फैजान आदि मौजूद रहे।

जनता को आसानी से मिले नया विद्युत कनेक्शन : आशीष गोयल

लखनऊ, 16 अगस्त (देशबन्धु)। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन के अध्यक्ष डा.आशीष कुमार गोयल नें कहा है कि जनता को विद्युत कनेक्शन आसानी से एक सप्ताह की निश्चित मय सीमा में मिले यह सुनिश्चित किया जाए। हमारी यह नीति है कि हम सबको विद्युत कनेक्शन उपलब्ध कराएं। नए कनेक्शन के लिए अवर अभियन्ता या सहायक अभियन्ता को यदि कोई कमी लगती है तो अधिषाशी अभियन्ता को सूचित करें कि कनेक्शन क्यों नहीं दिया जा सकता। अधिषाशी अभियन्ता आगे की कार्यवाही सुनिश्चित कराएंगे। हमे सभी को कनेक्शन देना है इस उद्देश्य के साथ काम करना है। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता का हर स्तर पर सहयोग करिए उसको विद्युत सम्बन्धी कार्यों में परेशानी न हो। 40 मीटर के अन्दर और 50 किवा तक के कनेक्शन देनें में किसी तरह के इस्टीमेट का प्राविधान नहीं है इस नियम का कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। शक्ति भवन में आयोजित बैठक को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि प्रदेश में उपभोक्ता फ्रेंडली माहौल बनाना है। उपभोक्ता हमारे लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। हमारा कार्य व्यवहार ऐसा होना चाहिए जिससे लोग सहजता पूर्वक विद्युत संबंधी कार्य करा सकें। उन्होंने कहा कि प्रदेष की विद्युत व्यवस्था को और बेहतर बनानें हेतु यह आवश्यक है कि हम ज्यादा से ज्यादा लोगों को विद्युत कनेक्शन समय से उनको सही रीडिंग का बिल उपलब्ध कराएं। अध्यक्ष ने कहा कि हमारा लक्ष्य जितनी बिजली दें उतना राजस्व वसूलना होना चाहिए। हम यह निष्चित करें कि किसी को भी गलत बिल नहीं देंगे और यदि मीटर की खराबी के कारण गलत बिल आया है तो मीटर बदलकर सही बिल भिजवाएं। नए संयोजन मीटर परिसर के बाहर स्थापित किया जाना सुनिश्चित किया जाए। नए संयोजन को आर्मड केबल के माध्यम से निर्गत किए जाने के निर्देष विद्युत कोड में है, इसको सुनिश्चित करते हुए उपभोक्ताओं को आर्मड केबल का प्रयोग अनिवार्य किया जाए। झटपट पोर्टल पर नए संयोजन के क्रम मे दो विकल्प दिए जाए उपभोक्ता से भुगतान प्राप्त करके विभाग द्वारा आर्मड केबल प्रदान करना उपभोक्ता द्वारा स्वयं क्रय किया जाना। संयोजन निर्गत करने वाले कार्मिक द्वारा एक माह में प्रथम सही बिल बनाकर उपभोक्ता को दिया जाना सुनिश्चित किया जाए।

- उप्र पॉवर कॉरपोरेशन के अध्यक्ष ने बैठक कर दिए निर्देश

सार संक्षेप

एस-जे ऑर्गेनिक ने किया ध्वजारोहण

मेरठ। मंगलवार को एस-जे ऑर्गेनिक द्वारा स्वतंत्रता की 77वीं वर्षगांठ मनाते हुए अपने राली चौहान स्थित प्लांट पर उन महिलाओं द्वारा ध्वजारोहण कराया गया। पूर्वी दिनों में कावड़ यात्रा के दौरान अपने परिवार के सदस्यों को खोने वाले परिवारों को पांच हजार की सहायता राशि प्रति परिवार को दी गई। एस-जे ऑर्गेनिक्स के डायरेक्टर्स सना खान, सय्यद अकरम रजा व जुनैद खान द्वारा पीड़ित परिवारजनों को विश्वास भी दिलाया गया कि उनकी इस दुख की घड़ी में एस-जे ऑर्गेनिक्स की पूरी टीम हर समय उनके व उनके परिवार के साथ खड़ी है।

विनायक विद्यापीठ में मना गया आजादी का पर्व

मेरठ। मोदीपुरम स्थित विनायक विद्यापीठ में 77वा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। संस्थान की प्राचार्या डॉ. अनुप्रिता शर्मा एवं निदेशक इंजी. विकास कुमार द्वारा ध्वजारोहण किया गया। इस दौरान संस्थान की डीन एकता सिंधु, टीपीओ प्रवीन शर्मा, मैनेजमेंट विभागाध्यक्ष डॉ.किरण तोमर के अलावा संस्थान के सभी सम्मानित सदस्य उपस्थित रहे। सभी सम्मानित सदस्यों ने तिरंगे के प्रति अपनी भावनाएं तिरंगे को सलाम करके प्रकट की। संस्थान की प्राचार्या डॉ.अनुप्रिता शर्मा ने उपस्थित सभी सदस्यों को स्वतंत्रता दिवस की बधाइयां दीं और इसी तरह निरंतर सकारात्मकता के साथ कठिन परिश्रम से देश को विकास की ओर आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। संस्थान के निदेशक इंजी. विकास कुमार ने स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दीं व कहा कि जिन महापुरुषों की बदोलत आज हम आजादी का जश्न मना रहे है। विनायक विद्यापीठ का प्रांगण भारत माता के जयकारों से गूंज उठा। इसी के साथ सभी सदस्यों ने शपथ ली कि हम अपने भारत की आन बान और शान को बनाएं रखने के लिए हर संभव प्रयासरत रहेंगे।

अखंड भारत निर्माण में योगदान देना भी देश सेवा : डा.सुधीर

मेरठ,16 अगस्त (देशबन्धु)। मंगलवार को राष्ट्रीय राजमार्ग बाईपास स्थित वेंकटेश्वरा संस्थान में देश के 77वे स्वतंत्रता दिवस समारोह 'जश्ने आजादी' को बहुत ही धूमधाम से मनाया गया।

- वीजीआई में धूमधाम से मनाया गया 77वां स्वतंत्रता दिवस
- ध्वजारोहण, मिशन शक्ति, सांस्कृतिक समारोह का आयोजन
- भारत आज हर मोर्चे पर वैश्विक लीडर के रूप में हुआ है स्थापित : डॉ. राजीव
- उच्च स्तर की शिक्षा व बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं दे रहा विवि : वसीम

मुंबई से आए मशहूर अभिनेता एवं एक्शन डायरेक्टर ग्रैंड मास्टर शिफूजी/शौर्य भारद्वाज एवं फिल्म डायरेक्टर वसीम अमरोही ने वेंकटेश्वरा संस्थान प्रबंधन व हजारों छात्र-छात्राओं के साथ ध्वजारोहण कर देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि दी। वेंकटेश्वर संस्थान के तिरंगा मैदान मैं आयोजित में आयोजित 77वें स्वतंत्रता दिवस समारोह 'जश्ने आजादी' का शुभारंभ मुंबई से आए फिल्म अभिनेता ग्रैंड मास्टर शिफूजी, समूह अध्यक्ष डॉ.सुधीर गिरी, प्रतिकुलाधिपति डॉ.राजीव त्यागी, फिल्म डायरेक्टर वसीम अमरोही, सीईओ अजय श्रीवास्तव आदि ने ध्वजारोहण, तिरंगे के गुब्बारे व सफेद कबूतर उड़ाकर एवं भारत मां के चित्र पर पुष्प अर्पित करके किया। डॉ. सुधीर गिरी ने कहा कि देश सेवा का सिर्फ मतलब बॉर्डर पर जाकर दुश्मनों से केवल जंग लड़ना ही नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने-अपने कार्य क्षेत्र में रहते हुए निष्ठा एवं ईमानदारी से भ्रष्टाचार मुक्त भारत, नशा मुक्त भारत, 'स्वस्थ भारत- स्वच्छ भारत' अभियान में अपनी प्रभावी भूमिका निभाकर अखंड भारत निर्माण में अपना योगदान देता है, तो यह भी सच्ची राष्ट्र सेवा है। डॉ.राजीव त्यागी ने कहा कि शानदार विदेश नीति, महिला सशक्तिकरण, सेना के आधुनिकरण, उत्कृष्ट शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं के दम पर भारत आज एक वैश्विक लीडर के रूप में स्थापित हुआ। वसीम अमरोही ने कहा कि हजारों लोगों को सस्ती एवं उच्च कोटि की शिक्षा एवं निशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं देकर वेंकटेश्वरा सच्ची राष्ट्र सेवा कर रहा है। इस अवसर पर समूह चेयरमैन के प्रधान सलाहकार डॉ. वी.पी.एस अरोड़ा, कुलपति डॉ. राकेश यादव, कुलसचिव प्रो पीयूष पांडे, सुरक्षा निदेशक रिटायर्ड एसपी राम यश सिंह, सीओ गुरु दयाल सिंह कटियार, मेरठ परिसर निर्देशक डॉ.प्रताप सिंह, बृजपाल सिंह, दीपक कुमार, एस एस बघेल, वी बी बोरा, राजेश सिंह, एस एन साहू, सीपी कुशवाहा, अरुण, नीतूश्री पाल, बालाजी, सी एफओ विकास भाटिया, डॉ.लक्ष्मण सिंह रावत, एम एस डॉ.आईबी राजू, मीडिया प्रभारी विश्वास राणा आदि लोग उपस्थित रहे।

वेंकटेश्वरा वर्ल्ड स्कूल में मनाया स्वतंत्रता दिवस

मेरठ। सोमवार को वेंकटेश्वरा वर्ल्ड स्कूल की तीनो शाखाओ, दिल्ली रुड़की बाईपास, साकेत और डिफेन्स में 15 अगस्त की पूर्व संध्या के उपलक्ष में किंडर गार्टन के बच्चों ने रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन आराध्या वशिष्ठ ने किया। कार्यक्रम की शुरूआत आराध्या गुप्ता ने एक वेलकम सॉन्ग गाकर की। कार्यक्रम में छात्र नव्या शर्मा और नव्या श्रीशवाल ने अपने विचार सभी के समक्ष प्रस्तुत किए। छोटे-छोटे बच्चों ने अपनी मधुर आवाज में मेरा मुल्क, मेरा देश, मेरा ये वतन गाना गाकर सभी छात्रों में उत्साह एवं उमंग भर दी। छात्रों ने देशभक्ति गीतों पर भी सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर स्कूल की चेयरपर्सन डॉ.अंजुल गिरी ने बच्चों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की सराहना करते हुए उनका मनोबल बढ़ाया एवं स्कूल की प्रधानाचार्या संजया वालिया ने भी बच्चों का उत्साह बढ़ाया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में कोऑर्डिनेटर चारु डूडेजा, प्रीति बंसल, साक्षी सिंघल, टीना यादव, डिंपल चावला व समस्त अध्यापकगण का योगदान रहा।

युवती ने फांसी लगाकर दी जान

फर्रुखाबाद,16 अगस्त (देशबन्धु)। मायके न भेजे जाने से गुस्साई युवती रूबी ने फांसी लगाकर जान दे दी। थाना मऊदरवाजा के मोहल्ला गढी अशरफ अली निवासी आनंद यादव की 28 वर्षीय पत्नी रूबी ने बुधवार सुबह कमरे का दरवाजा बंद कर लिया। रुबी ने चारपाई पर खड़े होकर पंखे में दुपट्टे बांधकर गले में फंदा डालकर लटक गई। कमरे के बाहर रूबी की बेटी अक्षिता एवं बेटा आरब ननद अनुष्का व अनामिका के पास खेल रहे थे। रुबी की सास बबली छत पर मौजूद थी इस दौरान अनुष्का ने कमरे का दरवाजा खटखटाया। दरवाजा न खुलने पर अनुष्का ने पड़ोस में रहने वाले चाचा शिवम को बुलाया। शिवम ने प्रयास करके कमरे का दरवाजा तोड़ा परिजन रूबी को फांसी पर लटकता देखकर रोने चिल्लाने लगे।

किठौर में हर्षोल्लास के साथ मना स्वतंत्रता दिवस

किठौर/मेरठ,16 अगस्त (देशबन्धु)। किठौर क्षेत्र में विभिन्न कॉलेजों सरकारी संस्थाओं, प्राइवेट कार्यालय व आम जन द्वारा स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। इस मौके पर पूरा क्षेत्र तिरंगे से सजा हुआ नजर आया। स्टार अल फलाह इंटर कॉलेज से तिरंगा रैली निकाली गई। जिसे इंस्पेक्टर किठौर ऋषि पाल सिंह व प्रबंधक नुसरत अली द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। विद्यार्थियों ने अपने हाथों में तिरंगा लिए हुए किठौर के एक कोने से शुरू होकर दूसरे सिरे तक आजादी का जश्न मनाया। वहीं उच्च प्राथमिक विद्यालय बहरोरा मैं प्रधानाध्यापक उमेश कुमार, पवन कुमार, संजय कुमार, विरासतअली, संदीप कुमार, नसीम खातून, पूनम त्यागी मौजूद रहे।

शहीद चंद्रभान प्रदर्शनी का पालिका अध्यक्ष ने काटा फीता

मवाना,16 अगस्त (देशबन्धु)। मवाना नगर की वीआईपी तहसील रोड पर प्रतिवर्ष लगने वाली शहीद चंद्रभान प्रदर्शनी का शुभारंभ बुधवार शाम छह बजे नगरपालिका चेयरमैन अखिल कौशिक एवं अधिशासी अधिकारी राजीव जैन ने संयुक्त रूप से फीता काटकर शुभारंभ किया। इस मौके पर नगरपालिका चेयरमैन अखिल कौशिक आदि सभासदों ने शहीदों को नमन कर श्रद्धांजलि अर्पित की। एक माह तक चलने वाली शहीद चंद्रभान प्रदर्शनी का शुभारंभ होने पर पालिका चेयरमैन अखिल कौशिक, ईओ राजीव कुमार जैन ने मेला स्थल पर लगाए जाने वाले झूलों, मौत के कुंआ, सर्कस, काला जादू, डायनासोर आदि बच्चों के लिए लगाए गए मनोरंजन के साधनों का निरीक्षण किया। वहीं मेला स्थल पर बनाए गए पालिका के अस्थाई कैंप कार्यालय पर एक संगोष्ठी का आयोजन कर कार्यक्रम में मौजूद सभी लोगों को संबोधित किया। इस दौरान राजेन्द्र चौहान, अमीर , सुभाष दीक्षित, विनोद, सौरभ, प्रधान आशु त्यागी, योगेंद्र, मनीष, मधुर कौशिक, रामनिवास सैनी, नूर मोहम्मद आदि मौजूद रहे।

- विधिवत रूप से हुआ शहीद प्रदर्शनी का शुभारंभ

तक्षशिला स्कूल में धूमधाम से मनाया गया स्वतंत्रता दिवस

मेरठ,16 अगस्त (देशबन्धु)। तक्षशिला पब्लिक स्कूल कंकरखेड़ा मेरठ में 77 वां स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। स्वतंत्रता के 76 साल पूरे होने का जश्न मनाते हुए कार्यक्रम का शुभारम्भ करते हुए सर्वप्रथम विद्यालय के चेयरमैर डा. ओमपाल सिंह तथा विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. प्रवीन कुमार पथरा ने ससम्मान ध्वाजारोहण किया।

तत्पश्चात राष्ट्रगान, झंडा गान- विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, वन्दे मातरम, भाषण, नारे आदि से विद्यालय का प्रांगण गुंजयामान हो उठा। चेयरमैन ने विद्यार्थियों को हर घर तिरंगा अभियान के विषय में बताते हुए सभी क्रांतिकारियों के विषय में बच्चों को बताया। झंडे का सम्मान करने तथा देश के प्रति कर्त्तव्यों के विषय में ढेर सारी ज्ञान से परिपूर्ण बातें बताई तथा देश के प्रति अपने समर्पण भाव को अभिव्यक्त करते हुए सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को देश पर बलिदान देने के लिए तत्पर रहने को प्रेरित किया और सभी को शुभकामनाएं देते हुए अपना आशीर्वाद दिया। विद्यालय के प्रधानाचार्य डा. प्रवीन कुमार पथरा ने भी सभी को स्वंत्रता दिवस की बधाई दी।

क्रांतिवीर के नाम पर सफेदी पोतवा, लिखवा दिया कुलपति आवास

■ ओम प्रकाश सिंह

अयोध्या, 16 अगस्त (देशबन्धु)। रामनगरी अयोध्या का डॉक्टर राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय कुलपतियों की मनमानी का दंश झेल रहा है। पठन पाठन से इतर अवैध नियुक्तियां, लूट, निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार के रास्ते यह अवध से अवैध के रास्ते चल पड़ा है। अब यहां देश को आजाद कराने वाले क्रांतिकारियों की पहचान मिटाने की भी कवायद हो रही है। शहीद-ए-आजम भगत सिंह के भांजे प्रोफेसर जगमोहन सिंह ने इस कृत्य की निंदा किया है। उनकी तुरबत पर नहीं है एक भी दीया, जिनके खूं से जलते हैं ये चिरागे वतन। जगमगा रहे हैं मकबरे उनके, बेचा करते थे जो शहीदों के कफन। किसी शायर की लिखी यह पंक्तियां अवध विश्वविद्यालय प्रशासन पर चरितार्थ हो रही हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित पूरी भाजपा गांव गांव से क्रांतिकारियों के नाम पर मिट्टी एकत्र कर रही है ताकि दिल्ली में एक कार्यक्रम करके दुनिया को दिखाया जाए की देखो हम अपने देश को आजाद करने वालों की याद में सक्रिय हैं। इसके ठीक उलट अवध विश्वविद्यालय में क्रांतिकारियों के द्रोणाचार्य रहे क्रांतिवीर पंडित गेंदालाल दीक्षित के नाम पर सफेदी पोतकर कुलपति आवास लिख दिया गया है। क्रांतिवीर गेंदालाल दीक्षित क्रांतिकारियों के द्रोणाचार्य थे। देश के पूर्व प्रधानमंत्री, हर दिल अजीज अटल बिहारी वाजपेई भी उन्ही के परिवार से ताल्लुक रखते थे। पूर्व कुलपति आचार्य मनोज दीक्षित के नेतृत्व में रामनगरी के डॉक्टर राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय ने देश पर प्राण निछावर करने वाले इस योद्धा की याद में अपने एक गेस्ट हाउस का नाम गेंदालाल दीक्षित विशिष्ट अतिथि गृह रखा था। गेस्ट हाउस में दीक्षित की एक भव्य प्रतिमा भी स्थापित है, जिस पर अब फूल माला नहीं धूल के कण वंदन करते हैं। जब से कुलपति कॉलोनी बन रहे श्रीराम एयरपोर्ट की भेंट चढ़ी है तब से यह गेस्ट हाउस विश्वविद्यालय के कुलपति का आवास बन चुका है। पूर्व बेईमान कुलपति रविशंकर सिंह पटेल जिसे राजभवन ने समय से पहले पद से हटा दिया था उसने इस गेस्ट हाउस में गाय भैंस का तबेला बना रखा था। वर्तमान कुलपति प्रोफेसर प्रतिभा गोयल भी इसी गेस्ट हाउस में रहती हैं और यहां परिंदा पर भी नहीं मार सकता है। ऐसा नहीं है कि कुलपति या विश्वविद्यालय के अधिकारी शहर में किराए के भवनों में नहीं रह सकते हैं लेकिन जब सब कुछ मलाई के रूप में प्रस्तुत हो तो डायबिटीज का मरीज भी रसमलाई खा ही लेता है। विश्वविद्यालय की कार्यपरिषद अपूर्ण है।

कुलपति अपनी चलाने के लिए कोर्ट में चुनकर आने वाले छात्र प्रतिनिधियों का चुनाव ही नहीं करा रहे। विश्वविद्यालय के दूसरे गेस्ट हाउस, अटल अतिथि गृह में कुलसचिव, डिप्टी रजिस्ट्रार, असिस्टेंट रजिस्ट्रार, वित्त अधिकारी आदि का डेरा है। अतिथि गृह की जो मूल भावना थी वह नष्ट हो चुकी है। अवध विश्वविद्यालय पुरातन छात्र सभा के लिए एक कमरा कार्यालय के रूप में आबंटित था। वह कुलपति और अधिकारियों की आंख की किरकिरी बन गया था आनक फानन में कुलपति ने उसे खाली करा लिया। मामला, कुलपति के गेस्ट हाउस में रहने का नहीं है बल्कि उनके तानाशाही रवैये का है। पूर्व कार्यपरिषद सदस्य ओम प्रकाश सिंह ने कहा है कि कुलपति का यह कृत्य घोर निंदनीय है और विश्वविद्यालय की कार्य परिषद द्वारा लिए गए निर्णय की अवहेलना भी है। शहीद परिजनों में सरदार भगत सिंह के भांजे प्रोफेसर जगमोहन सिंह, क्रांतिकारी भगत सिंह के साथी डॉ. गया प्रसाद कटियार के पुत्र क्रांति कुमार कटियार, महुआ डाबर एक्शन के महानायक पिरई खां के वंशज डॉ. शाह आलम राना, शहीद मेला इन्डिया के संयोजक इ. राज त्रिपाठी, अशफाक उल्ला खां मेमोरियल शहीद शोध संस्थान के प्रबंध निदेशक सूर्यकांत पाण्डेय ने उत्तर प्रदेश राज्यपाल को पत्र भेजकर कारवाई की मांग किया है। इन लोगों ने कहा कि आगामी दिनों में एक प्रतिनिधिमंडल उक्त भवन का निरीक्षण करके उचित कार्यवाही सुनिश्चित करेगा।

- राज्यपाल को पत्र भेज सेनानियों के परिजनों ने की कारवाई की मांग
- कार्यपरिषद है अपूर्ण, कुलपतियों की मनमानी का दंश झेल रहा अवध विश्वविद्यालय

एसआर इंटरनेशनल स्कूल में किया गया ध्वजारोहण

मेरठ,16 अगस्त (देशबन्धु)। किला रोड स्थित एस आर इंटरनेशनल स्कूल के प्रांगण में 77 वाँ स्वतंत्रता दिवस समारोह धूमधाम से मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शाहिद मंजूर,एडवोकेट मोहम्मद फारुख, स्कूल के चेयरमैन गंभीर सिंह चौहान, निदेशक महोदय डॉक्टर स्वतंत्र चौहान एवं प्रधानाचार्या श्वेता तोमर ने मिलकर ध्वजारोहण किया। सभी ने तिरंगे झंडे को सलामी दी और राष्ट्रगान गाया। शाहिद मंजूर एवं मोहम्मद फारुख को स्कूल के निदेशक व प्रधानाचार्या ने पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। कार्यक्रम में विद्यालय के सभी विद्यार्थी तथा शिक्षक सम्मिलित हुए। विद्यार्थियों के द्वारा देश भक्ति पूर्ण कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। शाहिद मंजूर ने छात्रों को स्वतंत्रता दिवस की बधाई दी।

'देवरा' से सैफ अली खान का लुक जारी, एनटीआर जूनियर ने पोस्टर शेयर करते हुए किया बर्थडे विश

मुंबई, 16 अगस्त (एजेंसियां)। 'आरआरआर' के लिए मशहूर एक्टर एनटीआर जूनियर ने बुधवार को अपने सोशल मीडिया के जरिए अभिनेता सैफ अली खान को जन्मदिन की शुभकामनाएं दीं। एक्टर को शुभकामनाएं देते हुए, एनटीआर जूनियर ने अपनी अपकमिंग फिल्म 'देवरा' से सैफ का एक पोस्टर शेयर किया। 'देवरा' सैफ की पहली तेलुगु फिल्म है। पोस्टर में सैफ लंबे घुंघराले और घने बालों के साथ ब्लैक शर्ट पहने हुए इंटेंस लुक में नजर आ रहे हैं। इसमें सैफ के किरदार का नाम भैरा भी बताया गया है। पोस्टर में सैफ के बैकग्राउंड में जलाशय और पहाड़ियां नजर आ रही हैं। एनटीआर जूनियर ने कैप्शन में लिखा, 'हैप्पी बर्थडे सैफ सर।'

कश्मीर की नई पहचान बना श्रीनगर का घंटाघर चौक लाल चौक

■ सुरेश एस डुग्गर

जम्मू, 16 अगस्त (देशबन्धु)। डल झील और ट्यूलिप गार्डन के बाद अब एक नए रंग रूप में निखरकर सामने आया घंटाघर चौक अर्थात लाल चौक कश्मीर की नई पहचान बन गया है। यही कारण है कि अगर कल स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान यहां तिरंगा फहराने के साथ ही सेल्फी लेने वलों की भीड़ उमड़ी थी वहीं अब टूर आप्रेटरों ने कश्मीर आने वाले टूरिस्टों के लिए इसे अपनी दर्शनीय स्थलों की सूची में भी शामिल कर लिया है। कभी आतंकवाद की निशानी रहा घंटाघर, जिसे लाल चौक पर क्लाक टावर के रूप में भी जाना जाता है, कश्मीर में एक समृद्ध इतिहास रखता है। इतिहासकार जरीफ अहमद जरीफ के अनुसार, घंटाघर के निर्माण से पहले, लाल चौक पर एक 'लाल चौक' भी था, जिसे ईसाइयों द्वारा विकसित किया गया था। बाद में, जम्मू कश्मीर के तत्कालीन मुख्यमंत्री शेख मुहम्मद अब्दुल्ला के अनुरोध पर बजाज समूह द्वारा क्लाक टावर का निर्माण किया गया था।

1975 में इंद्रा गांधी-अब्दुल्ला समझौते के बाद, बजाज समूह कश्मीर पहुंचा और क्लाक टावर विकसित करने के लिए स्थान के रूप में लाल चौक को चुना। बजाज इलेक्ट्रिकल्स ने 1979 में कंपनी के विज्ञापन के रूप में टावर का निर्माण किया था।

1989 के बाद से, क्लाक टावर ने राजनीतिक महत्व प्राप्त कर लिया है, राजनेता और कार्यकर्ता अपनी राजनीतिक संबद्धता के आधार पर, क्लाक टावर के ऊपर तिरंगा या हरा झंडा फहराने के लिए लाल चौक जाते हैं। यह ऐतिहासिक रूप से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने 1948 में इसी चौक में भारतीय राष्ट्रीय ध्वज (तिरंगा) फहराया था।

अब स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत, अधिकारियों ने मौजूदा संरचना को ध्वस्त कर एक नया घंटाघर बना दिया गया है। इसे रिकार्ड समय में पूरा किया गया है। अब यही कश्मीर की शान के तौर पर खड़ा है। यह बात अलग है कि आतंकवाद के दिनों में यह घंटाघर पाकिस्तानी झंडों को अपने आप में समेटे रहता ही था, कई आतंकी हमलों का भी गवाह बना था। यही नहीं अनुच्छेद 370 की वापसी से पहले लाल चौक अर्थात घंटाघर चौक में तिरंगा फहराना खाला जी का घर नहीं था। लाल चौक पर एक दुकान के मालिक बशीर अहमद

ने घंटाघर के पुनर्निर्माण पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इसके ऐतिहासिक महत्व के बावजूद, प्रशासन ने लंबे समय तक इस स्थान और टावर की उपेक्षा की थी। अहमद का मानना है कि टावर का पूरा होना आकर्षक है और स्थानीय समुदाय इसका स्वागत करता है।

प्रेस एन्क्लेव, राजनीतिक दल कार्यालयों, मिशनरी स्कूलों, कालेजों और प्रसिद्ध बाजारों के पास स्थित, लाल चौक का घंटा घर एक जीवंत स्थान रखता है। इस साल की शुरुआत में, एक समूह ने घंटाघर पर फिरन फैशन प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिसने व्यस्त स्थान के बावजूद काफी ध्यान आकर्षित किया था। कुल मिलाकर, लाल चौक पर घंटा घर कश्मीर में एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और राजनीतिक स्थल के रूप में कार्य करता है, जो अपने जीवंत स्थान के कारण जीवन के सभी क्षेत्रों से आगंतुकों को आकर्षित करने लगा है।

बिहार में केले के तने से तैयार जैविक खाद बना किसानों की कमाई का जरिया

पटना, 16 अगस्त (एजेंसियां)। केले की खेती करने वाले किसान इसके फल के साथ तना से जैविक खाद बनाकर इसका उपयोग खेती के लिए तो कर ही रहे हैं, इस खाद की बिक्री कर अतिरिक्त आय भी प्राप्त कर रहे हैं। खाद के प्रयोग में अच्छी सफलता मिलने के बाद बिहार के समस्तीपुर स्थित डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा इसके प्रति किसानों को जागरूक कर प्रशिक्षण भी दे रहा है। इसके लिए मशीन भी लगाई गई है। करीब 250 किसानों को प्रशिक्षण दिया जा चुका है। वर्ष 2020 - 2021 के आकड़े के अनुसार, बिहार में केला कुल 35.32 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में उगाया जाता है, जिससे कुल 1612.56 हजार टन उत्पादन प्राप्त होता है। बिहार की उत्पादकता 45.66 टन प्रति हेक्टेयर है।

भारत में उत्पादित 90 प्रतिशत से अधिक केले का घरेलू स्तर पर ताजे फल के रूप में सेवन किया जाता है। एक अनुमान के मुताबिक केले में प्रसंस्करण केवल 2.50 प्रतिशत ही होता है।

विश्वविद्यालय के मुताबिक, बिहार में लगभग चार लाख लोग केले की खेती, कटाई, हैंडलिंग और परिवहन पर अपना जीवन-यापन कर रहे हैं। लगभग 70-80 मीट्रिक टन प्रति हेक्टेयर केले के घौद (बंच) की कटाई के बाद केले के आभासी तने को खेत के बाहर फेंक दिया जाता था। केला उत्पादक किसानों के सामने सबसे बड़ी चुनौती केले के आभासी तने के इस विशाल बायोमास को मूल्य वर्धित उत्पादों में बदलना है।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्विद्यालय ने वित्त पोषित परियोजना के अंतर्गत एक कार्यदल बना कर पिछले साल कार्य करना प्रारंभ किया और इसके सफल परिणाम सामने आए। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. पीएस पांडेय बताते हैं कि इसके बहुत लाभ हुए हैं। केले के तने का प्रसंस्करण कर उससे

विभिन्न तरह के मूल्यवर्धित उत्पाद बनाने के भी अनुसंधान कार्य से लोगों को लाभ हुआ। फेंके हुए तने से रेशा निकालकर उससे मैट, हैट, बैग, टोकरी, कैलेंडर आदि उपयोगी सामान बनाए जा रहे हैं।

केले के बेकार फेंके जाने वाले तने को कुछ दिन बाद प्राय: किसान जला देते हैं। केला उत्पादक किसान केले की कटाई के बाद तने से वर्मी कंपोस्ट खाद, रेशा निकालकर तथा उससे उपयोगी सामान बनाकर केले के तने से सैप यानी पेय पदार्थ बनाकर अच्छी कमाई कर रहे हैं। इस परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. एसके सिंह बताते हैं कि अनुसंधान के तहत केले के थंब से लगभग 50 टन वर्मी कंपोस्ट तैयार की गई। किसानों को लगातार प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

किसानों का कहना है कि पहले केला के फल के अलावा कुछ प्राप्त नहीं होता था। कुछ धार्मिक कार्यों में तने की मांग होती थी, लेकिन आज तने की बराबर मांग हो रही है।

अनुबंध का उल्लंघन करने को लेकर फिल्म फाइनेंस कंपनी टीएसजी ने डिज्नी पर किया मुकदमा

न्यूयॉर्क, 16 अगस्त (एजेंसियां)। अनुबंध का उल्लंघन करने पर फिल्म फाइनेंसर टीएसजी एंटरटेनमेंट ने डिज्नी पर मुकदमा दायर किया है। कंपनी ने दावा किया है कि डिज्नी ने 'अवतार : द वे ऑफ वॉटर' में उसे ज्यादा निवेश करने से रोका है, जिसके कराण टीएसजी एंटरटेनमेंट को लाखों डॉलर घाटा हुआ। वॉल स्ट्रीट जर्नल के अनुसार ट्वेंटिएथ सेंचुरी फॉक्स के लिए 'डेडपूल' फ्रेंचाइजी में फाइनेंस करने वाली टीएसजी एंटरटेनमेंट ने अनुबंध के कथित उल्लंघन की ओर इशारा करते हुए स्टूडियो और उसकी मूल कंपनी डिज्नी पर मुकदमा किया है। मुकदमे में आरोप लगाया गया कि हॉलीवुड की दिग्गज कंपनी ने अपने स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म और स्टॉक की कीमत को बढ़ावा देने के लिए उसका मुनाफा रोक दिया और सौदों में कटौती की। टीएसजी ने 20वीं सेंचुरी में फॉक्स द्वारा निर्मित लगभग 140 फिल्मों में फाइनेंस किया है, जिसे डिज्नी ने 2019 में अधिग्रहण किया था, जिसमें 'अवतार : द वे ऑफ वॉटर' भी शामिल है। कंपनी ने कहा कि उसने 2012 से स्टूडियो में लगभग 3.3 बिलियन डॉलर का निवेश किया है। मुकदमे में कहा गया कि कैसे हॉलीवुड अकाउंटिंग के लंबे इतिहास वाले दो हॉलीवुड दिग्गजों फॉक्स और डिज्नी ने टीएसजी फाइनेंसर को वंचित करने के लिए हॉलीवुड अकाउंटिंग प्लेबुक में लगभग हर चाल चलने की कोशिश की है। कंपनी ने कहा कि उसने विश्वास के साथ 3.3 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया था। वहीं, डिज्नी ने अभी तक मुकदमे पर कोई टिप्पणी नहीं की है। टीएसजी ने आरोप लगाया कि जब उसने अन्य फिल्मों में अपनी हिस्सेदारी बेचने के अपने अधिकार का प्रयोग करने का प्रयास किया तो डिज्नी ने इसे अस्वीकार कर दिया।

भूल तो नहीं गये, बच्चे का टीकाकरण करा लिया न!

नोएडा, 17 अगस्त (देशबन्धु)। विशेष टीकाकरण अभियान मिशन इंद्र धनुष-5.0 का पहला चरण 14 अगस्त को पूरा हो गया है। अभियान का दूसरा चरण 11 सितम्बर से 16 सितम्बर तक चलेगा। क्या आपने अपने बच्चे का नियमित टीकाकरण करा लिया है? भूल तो नहीं गये।,अगर नहीं कराया है तो देर न करें, टीका अवश्य लगवाएं। बच्चों का नियमित टीकाकरण बहुत जरूरी है। यह टीबी, हेपेटाइटिस बी, खसरा, रूबेला सहित 12 जानलेवा बीमारियों से बच्चे को सुरक्षा प्रदान करता है। यह बात उप जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डा. उबैद कुरैशी ने कही।

डा. उबैद ने बताया कि जनपद में सभी स्वास्थ्य केन्द्रों पर टीकाकरण की व्यवस्था है। अब शहरी क्षेत्रों में शून्य से पांच साल तक के सभी बच्चों के लिए प्रतिदिन टीकाकरण की व्यवस्था की गयी है। रविवार समेत सभी सातों दिन जिला संयुक्त अस्पताल में टीकाकरण किया जा रहा है । मंगलवार से रविवार

■ पहले चरण में 9383 बच्चों व 3365 गर्भवती को लगाए गए टीके, 11 से 16 सितंबर तक दूसरा चरण

तक शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर टीकाकरण की सुविधा उपलब्ध है। कहीं भी बच्चे को टीका लगवा सकते हैं। इसके अलावा टीकाकरण से छूटे बच्चों को प्रतिरक्षित करने के लिए समय- समय पर विशेष अभियान चलाए जाते हैं।

अभियान का पहला चरण सात अगस्त से शुरू हुआ और सोमवार (14 अगस्त) तक चला। इस दौरान करीब 9383 बच्चों और 3365 गर्भवती का टीकाकरण किया गया। यह सभी वह बच्चे हैं जो नियमित टीकाकरण से वंचित रह गये थे। अभियान का दूसरा चरण 11 से 16 सितम्बर तक और तृतीय चरण नौ से 14 अक्टूबर तक चलेगा।

डॉ. उबैद ने बताया कि तपेदिक (टीबी), हेपेटाइटिस बी, पोलियो, गलघोंटू (डिप्थीरिया) काली खांसी (पर्टुसिस), टिटनेस, हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा टाइप बी संबंधी रोग (जीवाणु मेनिनजाइटिस, निमोनिया), रोटावायरस जनित डायरिया, न्यूमोकोकल रोग, खसरा (मीजल्स) रूबेला, जापानी इंसेफेलाइटिस जैसी 12 जानलेवा बीमारियों से नियमित टीकाकरण रक्षा करता है। उन्होंने बताया कि जापानी इंसेफेलाइटिस पश्चिमी उत्तर प्रदेश में नहीं है। यह बीमारी पूर्वी उत्तर प्रदेश के चयनित 38 जनपदों में है। इसलिये यहां इसका टीका नहीं लगाया जाता है।

कब और कौन सा टीका लगेगा

जन्म के समय पहला टीका बीसीजी, बी-ओपीवी(जीरो डोज) हेपेटाइटिस बी (बर्थ डोज)

>>> छह हफ्ते (डेढ़ माह) दूसरा टीका- बी- ओपीबी1, पेंटावैलेंट1, एफ-आईपीवी1, आरवीवी1 और पीसीवी1

दस हफ्ते (ढाई माह) तीसरा टीका- ओपीबी2, पेंटावैलेंट2 और आरवीवी2

>>> 14 हफ्ते (साढ़े तीन माह) चौथा टीका- बी- ओपीबी1, पेंटावैलेंट1, एफ-आईपीवी3, आरवीवी3 और पीसीवी3

>>> नौ से बारह माह पांचवां टीका- एमआर1 पीसीवी बूस्टर और विटामिन ए की डोज1

>>> 16 से 24 माह (दो वर्ष) छठवां टीका-एमआर 2, टीपीटी बूस्टर1और बी- ओपीवी बूस्टर

>>> पांच से छह वर्ष ङ्कसातवां टीका- डीपीटी बूस्टर।

इसके अलावा दस व 16 साल की उम्र में टीडी का टीका लगाया जाता है। गर्भवती को टीडी (एक व दो और बूस्टर) डोज जरूर लगवानी चाहिये। जेई वैक्सीन सिर्फ चुने हुए क्षेत्रों में दी जाती है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में यह बीमारी नहीं है।

53 वर्ष की हुई मनीषा कोइराला

मुंबई, 16 अगस्त (एजेंसियां)। बॉलीवुड की जानीमानी अभिनेत्री मनीषा कोईराला आज 53 वर्ष की हो गयी। नेपाल के काठमांडू में 16 अगस्त 1970 को जन्मी मनीषा कोइराला के दादा विशेश्वर प्रसाद कोइराला के दादा नेपाल के प्रधानमंत्री रह चुके है। मनीषा कोईराला ने अपने सिने करियर की शुरूआत वर्ष 1989 में प्रदर्शित नेपाली फिल्म फेरी भेटुला से की ।इस फिल्म में मनीषा ने छोटी सी भूमिका निभायी थी। वर्ष 1991 में प्रदर्शित फिल्म सुभाष घई की फिल्म सौदागर से मनीषा कोइराला ने बतौर अभिनेत्री बॉलीवुड में पर्दापण किया।इस फिल्म में मनीषा और विवेक मुसरान पर इलू इलू गीत फिल्माया गया था। इसके बाद मनीषा इंडस्ट्री में इलू इलू गर्ल के रूप में मशहूर हो गयी।

वर्ष 1994 में मनीषा कोईराला को विदु विनोद चोपड़ा की फिल्म 1942 ए लव स्टोरी में काम करने का अवसर मिला। इस फिल्म के लिये वह सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्म फेयर पुरस्कार से नामांकित की गयी । वर्ष 1995 में प्रदर्शित फिल्म बांबे मनीषा कोइराला के करियर की महत्वपूर्ण फिल्मों में शुमार की जाती है। मणिरत्नम के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अपने दमदार अभिनय के लिये मनीषा सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री के फिल्म फेयर क्रिटिक्स पुरस्कार से सम्मानित की गयी। वर्ष 1996 में प्रदर्शित फिल्म खामोशी मनीषा के करियर की एक और उल्लेखनीय फिल्म साबित हुयी।संजय लीला भंसाली के निर्देशन में बनी इस फिल्म के लिये मनीषा कोइराला को एक बार फिर से सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का फिल्म फेयर क्रिटिक्स पुरस्कार दिया गया।

वर्ष 1998 में मनीषा कोईराला को एक बार फिर से मणिरत्नम के साथ फिल्म दिल से में काम करने का अवसर मिला। वर्ष 2010 में मनीषा कोइराला की शादी बिजनेसमैन सम्राट दहाल से हुई थी। लेकिन यह शादी ज्यादा दिन नहीं टिक सकी, और 2012 में इस जोड़ी ने तलाक ले लिया। वर्ष 2012 में मनीषा कोइराला को गर्भाशय का कैंसर होने का पता लगा लेकिन मनीषा ने कैंसर को मात दे दी। मनीषा कोईराला के करियर की उल्लेखनीय फिल्मों में य़लगार, मिलन, दुश्मनी, अकेले हम अकेले तुम, अग्निसाक्षी, गुस,लाल बादशाह, कारतूस, मन, छुपा रूसतम, मार्केट, कंपनी, जानी दुश्मन, लज्जा, चैम्पियन, खौफ़, बाग़ी, भूत रिर्टन्स, डियर माया प्रमुख है।

चीन मूंगा चट्टानों की पारिस्थितिक व्यवस्था के संरक्षण में दे रहा है जोर

बीजिंग, 16 अगस्त (एजेंसियां)। मूंगा चट्टानें समुद्र तल के दो हजारवें हिस्से से भी कम को कवर करती हैं, लेकिन करीब तीस प्रतिशत समुद्री प्रजातियों को आवास प्रदान करती हैं। मूंगा चट्टानें समुद्री पारिस्थितिक स्थिति के बैरोमीटर के रूप में जानी जाती है। जलवायु परिवर्तन और मानव गतिविधि के कारण कुछ क्षेत्रों में मूंगा चट्टानों की पारिस्थितिक व्यवस्था को नुकसान पहुंचा। हाल के वर्षों में चीन ने कई तटीय क्षेत्रों में प्राकृतिक बहाली और कृत्रिम पुनर्स्थापना के सहारे मूंगा चट्टानों की पारिस्थितिक व्यवस्था का संरक्षण बढ़ाया। दक्षिण चीन के हाईनान प्रांत के सानया शहर स्थित वुचीचो द्वीप में चीन का पहला उष्णकटिबंधीय समुद्री खेत मौजूद है। स्थानीय कर्मचारियों ने समुद्र में मूंगा का प्रत्यारोपण और मछली चट्टान में समायोजन किया।

[अर्थ जगत]

सर्वाधिक बढ़ने वाले शेयर

एनटीपीसी	4.02 प्रतिशत
पावर ग्रिड	3.00 प्रतिशत
टेक महिंद्रा	2.28 प्रतिशत
टाटा स्टील	2.16 प्रतिशत
टीसीएस	1.96 प्रतिशत

सर्वाधिक घटने वाले शेयर

बजाज फाइनेंस	1.12 प्रतिशत
कोटक बैंक	1.09 प्रतिशत
हिंदुस्तान यूनीलीवर	0.91 प्रतिशत
आईटीसी	0.63 प्रतिशत
भारती एयरटेल	0.46 प्रतिशत

सर्राफा

सोना (प्रति दस ग्राम)स्टैंडर्ड	47,310
बिटुर	47,320
गिन्नी (प्रति आठ ग्राम)	31,400
चांदी (प्रति किलो) टंच हाजिर	70,096
वायदा	70,183
चांदी सिक्का लिवाली	870
बिकवाली	880

मुद्रा विनिमय

मुद्रा	क्रय	विक्रय
अमेरिकी डॉलर	67.77	78.57
पौंड स्टर्लिंग	90.94	105.45
यूरो	76.54	88.78
चीन युआन	08.24	13.38

अनाज

देसी गेहूँ एमपी	2500-3000
गेहूं दड़ा	2150-2160
आटा	2800-2290
मैदा	945-950
चोकर	620-630

मोटा आनाज

बाजरा	1300-1305
मक्का	1350-1500
ज्वार	3100-3200
जौ	1430-1440
काबुली चना	3500-4000

चावल

बासमती औसत किस्म	4500-4600
परमल	1750-1775
चावल सेला	2250-2350
आरआर (आठ)	1650-1670

दाल-दलहन

चना	4,850-4,950
दाल चना	4,850-4,950
मसूर काली	7,800-7,900
उड़द दाल	10300-10400
मूंग दाल	7,900-8,000
अरहर दाल	9700-9800

पेट्रोल और डीजल की कीमतें अपरिवर्तित

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। वैश्विक स्तर पर कच्चे तेल की कीमतों में लगातार जारी गिरावट के बीच घरेलू स्तर पर पेट्रोल और डीजल के दाम आज भी अपरिवर्तित रहे, जिससे दिल्ली में पेट्रोल 96.72 रुपये प्रति लीटर तथा डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर पड़े रहे। तेल विपणन करने वाली प्रमुख कंपनी हिन्दुस्तान पेट्रोलियम कार्पोरेशन की वेबसाइट पर जारी दरों के अनुसार, देश में आज पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। दिल्ली में इनकी कीमतों के यथावत रहने के साथ ही मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये प्रति लीटर पर और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर पर रहा।

कैबिनेट ने मौजूदा नेटवर्क में 2,339 किमी जोड़ने के लिए 7 रेलवे परियोजनाओं को मंजूरी दी

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बुधवार को 32,500 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत वाली सात रेलवे परियोजनाओं को मंजूरी दे दी, जिससे उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, तेलंगाना, ओडिशा और गुजरात जैसे राज्यों को कवर करने वाले मौजूदा नेटवर्क में 2,339 किलोमीटर की दूरी जुड़ जाएगी।

रेलमंत्री अश्विनी वैष्णव ने कैबिनेट की बैठक के बाद संवाददाताओं से कहा कि परियोजनाएं, जिसमें मौजूदा रेलवे लाइनों का चौगुना और दोहरीकरण सहित उन्नयन शामिल है, 120 मिलियन टन अतिरिक्त माल की आवाजाही के लिए क्षमता निर्माण की सुविधा प्रदान करेगी और प्रवासी श्रमिकों और छात्रों की यात्रा में भी मदद करेगी।

परियोजनाओं को केंद्र सरकार से 100 प्रतिशत वित्त पोषण प्राप्त होगा और यह देश के प्रमुख औद्योगिक

और वाणिज्यिक केंद्रों को जोड़ेगी।

मंत्री ने कहा कि वे मौजूदा लाइन क्षमता को बढ़ाने, ट्रेन परिचालन को सुचारु बनाने, भीड़भाड़ को कम करने और यात्रा और परिवहन को आसान बनाने में मदद करेंगे।

ये परियोजनाएं हैं : उत्तर प्रदेश में मौजूदा गोरखपुर छावनी (वाल्मीकि नगर सिंगल लाइन सेक्शन) का 89.264 किमी और बिहार (पश्चिम चंपारण) का 6.676 किमी का दोहरीकरण।

आंध्र प्रदेश (गुंटूर) में मौजूदा गुंटूर-बीबीनगर सिंगल-लाइन खंड को 1 किमी और तेलंगाना (नलगोंडा, यदाद्री भुवनगिरि) को 139 किमी तक दोहरीकरण।

उत्तर प्रदेश (मिर्जापुर, सोनभद्र) में मौजूदा चोपन-चुनार सिंगल-लाइन खंड का 101.58 किमी तक दोहरीकरण।

महाराष्ट्र (नांदेड़) में मुदखेड-मेडचल और महबूबनगर-धोन खंड के बीच 49.15 किमी, तेलंगाना (निजामाबाद, कामारेड्डी, मेडक, वानापर्थी, जोगुलांबा, मेडचल-मलकजगिरी) के बीच 294.82 किमी और आंध्र प्रदेश (महबूबनगर, कुरनूल और धोने) के बीच 73.91 कि.मी तक दोहरीकरण।

गुजरात (कच्छ) में सामाखियाली और गांधीधाम के बीच 53 किमी तक चौगुनी दूरी।

तीसरी लाइन ओडिशा में नेरगुंडी-बारंग और खुदरा रोड-विजयनगरम (भद्रक, जयपुर, खोरधा, कटक और गंजम) के बीच 184 किमी और आंध्र प्रदेश (श्रीकाकुलम, विजयनगरम, विशाखापत्तनम) के बीच 201 किमी है।

बिहार (गया, औरंगाबाद) में 132.57 किमी, झारखंड (धनबाद, गिरिडीह, हज़ारीबाग़, कोडरमा) में 201.608 किमी और पश्चिम बंगाल (पश्चिम बर्धमान) में 40.35 किमी के लिए सोन नगर-अंडाल मल्टी-ट्रैकिंग परियोजना।

डिजिटल इंडिया का 14903 करोड़ रुपए की लागत से विस्तार को मंजूरी

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। सरकार ने डिजिटल इंडिया कार्यक्रम का 14903 करोड़ रुपये की लागत से विस्तार करते हुये 5.25 लाख सूचना प्रौद्योगिकी पेशेवरों के उन्नयन करने के साथ ही 2.65 लाख लोगों को आईटी में प्रशिक्षित करने का लक्ष्य तय किया है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में बुधवार को हुयी मंत्रिमंडल की बैठक में इस आशय के प्रस्ताव को मंजूरी दी गयी। संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बैठक में लिये गये निर्णयों की जानकारी देते हुये यहां संवाददाताओं से कहा कि विस्तारित डिजिटल इंडिया परियोजना इस कार्यक्रम के पिछले संस्करण के तहत किए गए कार्यों को आगे बढ़ाएगी। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री ने कैबिनेट बैठक में 14,903 करोड़ रुपये के व्यय के साथ विस्तारित डिजिटल इंडिया कार्यक्रम को मंजूरी दी है।

उन्होंने कहा कि परियोजना के तहत 5.25 लाख आईटी पेशेवरों को फिर से कुशल और उन्नत बनाया जायेगा। इसके साथ ही 2.65 लाख लोगों को आईटी में प्रशिक्षित किया जाएगा। छोटे कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 1200 स्टार्टअप को सपोर्ट किया जायेगा। इसके साथ ही 12 करोड़ लोगों को साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक किया जायेगा।

उन्होंने कहा कि विस्तारित डिजिटल इंडिया परियोजना के तहत, राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग मिशन (एनसीएम) में नौ और सुपर कंप्यूटर जोड़े जाएंगे। मंत्री ने कहा कि एनसीएम के तहत पहले ही 18 सुपर कंप्यूटर लगाये जा चुके हैं। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य एवं कृषि के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के उपयोग को बढ़ाने के लिए तीन उन्नत उत्कृष्टता केन्द्र बनाये जायेंगे। इसके अतिरिक्त उमंग ऐप पर मिल रही सरकारी विभाग की 1700 सेवाओं का विस्तार करके 540 और सेवाएं उपलब्ध करायी जायेंगी।

'विंध्यगिरि' के निर्माण के लिए सेल ने की 4000 टन स्पेशल स्टील की आपूर्ति

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। सार्वजनिक क्षेत्र की इस्पात कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने भारत के छठे स्वदेशी युद्दपोत 'विंध्यगिरि' के ज़रूरी लिए पूरे 4000 टन विशेष स्टील की आपूर्ति की है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि यह युद्दपोत भारतीय नौसेना द्वारा शुरू की गई परियोजना पी17ए पहल का हिस्सा है और इसका निर्माण गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड द्वारा किया जा रहा है। इस युद्धपोत को कल राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु द्वारा राष्ट्र को समर्पित किये जाने का कार्यक्रम है। कंपनी ने कहा कि सेल द्वारा 'विंध्यगिरि' युद्धपोत के लिए आपूर्ति किए गए स्टील में डीएमआर 249 ए ग्रेड की एचआर शीट्स और प्लेट्स शामिल हैं। इस प्रोजेक्ट पी17ए की महत्वपूर्ण परियोजना के तहत सात युद्दपोतों का लांच होना है,'विंध्यगिरि' का यह लांच, इस तरह के छठे युद्दपोत के सफल निर्माण का उदाहरण है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना में सेल की भागीदारी, भारत के रक्षा क्षेत्र में स्वदेशी विकास और इनोवेशन को बढ़ावा देने की दिशा में, कंपनी के दृढ़ समर्पण का उदाहरण है। सेल इससे पहले विमान वाहक पोत आईएनएस विक्राम के निर्माण के लिए पूरे 30,000 टन स्पेशल स्टील की आपूर्ति कर चुका है।

मेक इन इंडिया के तहत फॉक्सकॉन आईफोन 15 की प्रोडक्शन को लेकर तैयार

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। मेक इन इंडिया की पहल के तहत एप्पल निर्माता फॉक्सकॉन तमिलनाडु के पास श्रीपेरंबुदूर में आईफोन 15 की प्रोडक्शन को लेकर पूरी तरह से तैयार है। कंपनी का पूरा ध्यान मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ाकर भारत में तेजी से अपनी जगह बनाना है। वहीं कंपनी का लक्ष्य वैश्विक बाजार में भी अपने पैर जमाना है। करीबी सूत्रों ने आईएएनएस को बताया कि एप्पल का लक्ष्य अगले महीने के मध्य में वैश्विक स्तर पर आईफोन 15 को बाजार में वितरित करना है, ताकि लॉन्च के बाद बाजार में इसकी उपलब्धता कम न हो। सूत्रों के अनुसार, मेक इन इंडिया के तहत

आईफोन 15 के निर्माण के बाद कंपनी का लक्ष्य इसे कम समय में अन्य देशों में निर्यात करने का है। उन्होंने कहा कि भारत में अन्य एप्पल आपूर्तिकर्ता जैसे पेगाट्रॉन और विस्ट्रॉन (टाटा समूह द्वारा अधिग्रहित) भी जल्द से जल्द आईफोन 15 को असेंबल करेंगे। पिछले साल सितंबर में एप्पल ने भारत में आईफोन 14 को असेंबल करना शुरू किया था, यह पहली बार था जब देश में वैश्विक लॉन्च के कुछ हफ्तों के भीतर एक नया आईफोन असेंबल किया गया। इस बार समय डेडलाइन को लगभग एक महीने पहले कर दिया गया है, ताकि स्थानीय रूप से असेंबल किया गया आईफोन 15 त्योहारी सीजन से ठीक पहले वैश्विक स्तर पर देश में बिक्री के लिए उपलब्ध हो सके, साथ ही तेजी से निर्यात भी किया जा सके। इस महीने की शुरुआत में एप्पल के सीईओ टिम कुक ने घोषणा की थी कि कंपनी ने आईफोन की मजबूत बिक्री के कारण भारत में जून तिमाही में रिकॉर्ड बनाया है। वित्तीय वर्ष 2023 की तीसरी तिमाही के नतीजों के दौरान कुक ने कहा कि भारत में हमारे नए स्टोर का प्रदर्शन हमारी उम्मीदों से अधिक रहा।

सार संक्षेप

जेनरोबोटिक्स ने बैंडिकूट मिनी का लोगो किया लांच

नई दिल्ली। जेनरोबोटिक्स ने मैनुअल स्कैवेंजिंग को बदलने के लिए एक अभिनव समाधान के रूप में डिजाइन किए गए बैंडिकूट का लोगो लॉंच किया है। कंपनी ने आज यहां जारी बयान में कहा कि बैंडिकूट मिनी मैनहोल रखरखाव तकनीक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण पड़ाव है। हाइब्रिड, स्टैंडर्ड और इलेक्ट्रिक वेरिएंट में उपलब्ध, बैंडिकूट मिनी दक्षता और सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए कई जरूरतों को पूरा करता है। 4 लाख रुपये की शुरुआती कीमत के साथ, यह सौर-संचालित समाधान एक चिकना और सहज उपयोगकर्ता इंटरफ़ेस, उन्नत दृश्यता के लिए आईपी 68 कैमरे और एक ऑटो क्लीनिंग सुविधा का दावा करता है, जो शहरी स्थानीय निकायों (यूएलबी) के लिए उपयोगी है। जेनरोबोटिक्स के सीईओ विमल गोविंद एम.के. ने बैंडिकूट मिनी का उल्लेख करते हुये कहा कि बैंडिकूट मिनी की शुरूआत मैनहोल सफाई प्रथाओं में क्रांति लाने में एक महत्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है। हमारा प्राथमिक मिशन प्रत्येक नगर निगम में बैंडिकूट मिनी को तैनात करना है, जिससे इस समस्या को दूर किया जा सके। यह प्रयास नवप्रवर्तन और सामाजिक प्रगति के प्रति जेनरोबोटिक्स के अटूट समर्पण को रेखांकित करता है। जेनरोबोटिक्स का प्रमुख उत्पाद, बैंडिकूट, जिसे दुनिया का पहला रोबोटिक्स स्कैवेंजर माना जाता है, ने भारत के स्वच्छता परिदृश्य को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है। 19 राज्यों और 4 केंद्र शासित प्रदेशों में अपनी पहुंच बढ़ाते हुए, बैंडिकूट ने न केवल स्वच्छता मानकों को बढ़ाया है बल्कि हाथ से मैला उठाने की प्रथा को भी खत्म कर दिया है। अपने तकनीकी प्रभाव से परे, समाधान ने तकनीकी प्रशिक्षण, सामाजिक एकीकरण और सशक्तिकरण कार्यक्रमों के माध्यम से 2400 से अधिक मैनुअल स्कैवेंजरों को सशक्त बनाया है।

एयरोफ्लेक्स का आईपीओ 22 अगस्त को खुलेगा

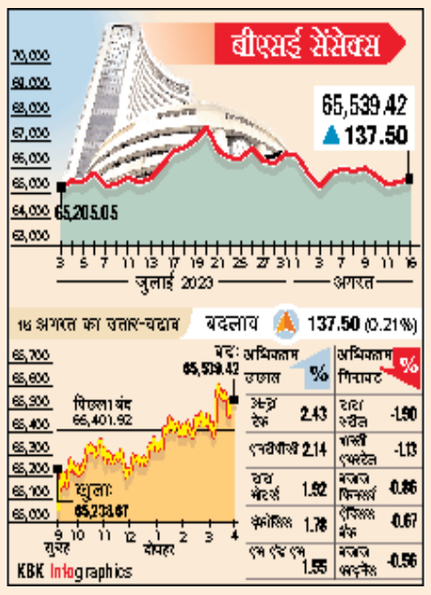

नई दिल्ली। पर्यावरण अनुकूज मैटेलिक प्लो सॉल्यूशन प्रदान करने वाली कंपनी एयरोफ्लेक्स इंडस्ट्रीज लिमिटेड का पूंजी बाजार से 350 करोड़ रुपये जुटाने के उद्देश्य से लाये जा रहे प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) 22 अगस्त को खुलेगा। कंपनी ने दो रुपये अंकित मूल्य के शेयर का मूल्य दायरा 102 रुपये से 108 रुपये प्रति शेयर तय किया है। कंपनी के प्रबंध निदेशक अशद दाउद ने आज एक वुर्चअल संवाददाता सम्मेलन में यह घोषणा करते हुये कहा कि यह आईपीओ 24 अगस्त को बंद होगा। इस आईपीओ में 130 शेयर के लिए न्यूनतम बोली लगानी पड़ेगी और आगे फिर इसी गुणांक में शेयर के लिए बोली लगानी होगी। उन्होंने कहा कि इसके तहत कंपनी 162 करोड़ रुपये के शेयर जारी करेगी और 1.75 करोड़ शेयर जारी किये जायेंगे। इसके माध्यम से कंपनी 340.5 करोड़ रुपये से लेकर 351 करोड़ रुपये तक की राशि जुटा सकती है। यह कंपनी अमेरिका और यूरोप सहित दुनिया के 80 देशों में अपने उत्पाद निर्यात करती है। इसका 80 प्रतिशत राजस्व निर्यात से आता है।

सेंसेक्स और निफ्टी में तेजी बरकरार

मुंबई 16 अगस्त (एजेंसियां)। चीन के कमजोर आर्थिक आंकड़ों से विश्व बाजार में गिरावट आने के बावजूद स्थानीय स्तर पर आईटी, यूटिलटीज़, पावर और रियल्टी समेत तेरह समूहों में हुई लिवाली की बदौलत सेंसेक्स और निफ़्टी में आज तेजी बरकरार रही।

बीएसई का संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 137.50 अंक की तेजी लेकर 65,539.42 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ़्टी 30.45 अंक बढ़कर 19,465.00 अंक पर पहुंच गया। दिग्गज कंपनियों की तरह मझौली और छोटी कंपनियों में भी लिवाली हुई। इससे बीएसई का मिडकैप 0.25 प्रतिशत चढ़कर 30,372.99 अंक और स्मॉलकैप 0.52 प्रतिशत उछलकर 35,297.14 अंक पर रहा।

इस दौरान बीएसई में कुल 3757 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 1850 में तेजी जबकि 1780 में गिरावट रही वहीं 127 में कोई बदलाव नहीं हुआ। इसी तरह निफ़्टी की 24 कंपनियां हरे जबकि 26 लाल निशान पर रही वहीं एक के भाव स्थिर रहे।

बीएसई के तेरह समूहों के लिवाली हुई। इस दौरान सीडी 0.38, ऊर्जा 0.09, एफएमसीजी 0.43, हेल्थ केयर 0.80, इंडस्ट्रीयल्स 0.82, आईटी 0.82, यूटिलटीज़ 1.14, ऑटो 0.63, कैपिटल गुड्स 0.63, तेल एवं गैस 0.35, पावर 1.03, रियल्टी 1.08 और टेक समूह के शेयर 0.50 प्रतिशत चढ़ गए।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गिरावट का रुख रहा। इस

दौरान ब्रिटेन का एफटीएसई 0.27, जापान का निक्केई 1.46, हांगकांग का हैंगसेंग 1.36 और चीन का शंघाई कंपोज़िट 0.82 प्रतिशत लुढ़क गया। वहीं, जर्मनी के डैक्स में 0.02 प्रतिशत की तेजी रही।

कारोबार की शुरुआत में सेंसेक्स 163.25 अंक की गिरावट लेकर 65,238.67 अंक पर खुला और बिकवाली के दबाव में थोड़ी देर बाद ही 65,032.89 अंक के निचले स्तर तक लुढ़क गया। लिवाली होने से कारोबार के अंतिम चरण में यह 65,605.74 अंक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। अंत में पिछले दिवस के 65,401.92 अंक के मुकाबले 0.21 प्रतिशत की बढ़त लेकर 65,539.42 अंक पर पहुंच गया।

निफ़्टी भी 65.55 अंक उतरकर 19,369.00 अंक पर खुला और सत्र के दौरान 19,317.20 अंक के निचले जबकि 19,482.75 अंक के उच्चतम स्तर पर भी रहा। अंत में पिछले सत्र के 19,434.55 अंक की तुलना में 0.16 प्रतिशत बढ़कर 19,465.00 अंक पर रहा।

इस दौरान सेंसेक्स की 18 कंपनियों में लिवाली हुई। अल्ट्रासिम्को ने सबसे अधिक 2.43 प्रतिशत का मुनाफा कमाया। साथ ही एनटीपीसी 2.14, टाटा मोटर्स 1.92, इंफोसिस 1.78, महिंद्रा एंड महिंद्रा 1.55, पावर ग्रिड 1.37, मारुति 1.13, एलटी 1.10, विप्रो 0.88, एसबीआई 0.86, रिलायंस 0.71, टेक महिंद्रा 0.56, टीसीएस 0.22 और टाइटन के शेयरों में 0.01 प्रतिशत की बढ़त रही।

वहीं, टाटा स्टील 1.90, भारती एयरटेल 1.13, बजाज फिनसर्व 0.86, ऐक्सिस बैंक 0.67, बजाज फाइनेंस 0.56, इंडसइंड बैंक 0.56, जेएसडब्ल्यूएस स्टील 0.54, कोटक बैंक 0.46, आईसीआईसीआई बैंक 0.35, एचडीएफसी बैंक 0.29, एशियन पेंट 0.19 और नेस्ले इंडिया ने 0.03 प्रतिशत का नुकसान उठाया।

सूरजमुखी तेल और सोया रिफाइंड के भाव चढ़े, दाल-दलहन में तेजी

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। विदेशी बाजारों में जारी तेजी के प्रभाव से आज दिल्ली थोक जिंस बाजार में सूरजमुखी तेल और सोया रिफ़ाइंड के भाव चढ़ गए वहीं आवक कमजोर पड़ने से दालों में 600 रुपये तक की तेजी रही।

तेल-तिलहन : वैश्विक स्तर पर मलेशिया के बुरसा मलेशिया डेरिवेटिव एक्सचेंज में सितंबर का पाम ऑयल वायदा 60 रिंगिट उबलकर 3819 रिंगिट प्रति टन पर पहुंच गया गया। इसी तरह सितंबर का अमेरिकी सोया तेल वायदा भी 0.77 सेंट की तेजी लेकर 62.65 सेंट प्रति पौंड बोला गया। इस दौरान घरेलू बाजार में खाद्य तेलों में मिलाजुला रुख रहा। सूरजमुखी तेल 220 रुपये और सोया रिफाइंड 146 रुपये प्रति क्विंटल महंगा हो गया। वहीं, सरसों तेल, मूंगफली तेल, पाम ऑयल और वनस्पति तेल के भाव में कोई बदलाव नहीं हुआ।

गुड़-चीनी : मीठे के बाजार में भाव स्थिर रहे। इस दौरान गुड़ और चीनी के भाव पुराने स्तर पर पड़े रहे।

दाल-दलहन : दाल-दलहन बाजार में तेजी रही। इस दौरान चना 600 रुपये, दाल चना 600 रुपये, मसूर दाल 300 रुपये और उड़द दाल 100 रुपये प्रति क्विंटल चढ़ गई। वहीं, मूंग दाल और अरहर दाल के दाम स्थिर रहे।

अनाज : अनाज मंडी में टिकाव रहा। इस दौरान चावल और गेहूं के भाव पुराने स्तर पर पड़े रहे।

दाल-दलहन : चना 6000-6100, दाल चना 7000-7100, मसूर काली 7800-7900, मूंग दाल 9100-9200, उड़द दाल 11000-11100, अरहर दाल 10500-10600 रुपये प्रति क्विंटल रहे।

फिच ने भारतीय बैंकिंग सेक्टर की रेटिंग घटाई

चेन्नई, 16 अगस्त (एजेंसियां)। फिच रेटिंग्स ने बुधवार को एक रिपोर्ट में भारतीय बैंकिंग सेक्टर की रेटिंग घटा दिया है, हालांकि उसने कहा कि कोविड-19 महामारी से जुड़े आर्थिक जोखिम कम होने के साथ भारतीय बैंकों के लिए परिचालन माहौल (ओई) मजबूत हुआ है, लेकिन संरचनात्मक मुद्दों का रेटिंग पर प्रभाव दिख रहा है। फिच ने यह भी कहा कि अन्य संरचनात्मक मुद्दे जैसे लंबी कानूनी प्रक्रिया और बैड बैंक का सार्थक भूमिका नहीं निभाना इसमें में बाधा डालता है।

क्रेडिट रेटिंग एजेंसी ने कहा कि महामारी से पहले के स्तर की तुलना में इस क्षेत्र के लिए विवेकपूर्ण संकेतकों की संख्या में भी सुधार हुआ है, हालांकि अपेक्षाकृत सौम्य ओई में जोखिम की बढ़ती भूख संभावित तनावपूर्ण खातों के लिए उचित बफर के महत्व पर प्रकाश डालती है। फिच ने मार्च 2020 में भारतीय बैंकों के लिए अपने ओई मिड-पॉइंट स्कोर को बीबी प्लस से संशोधित कर बीबी कर दिया। रेटिंग में यह गिरावट इस आकलन आधार पर की गई है कि महामारी के कारण सेक्टर के सामने ओई से जुड़े मौजूदा तनाव बढ़ने की संभावना है। फिच के मुताबिक, भारत इस महामारी से बुरी तरह प्रभावित हुआ था, लेकिन इससे जुड़े खतरे अब कम हो गए हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है, फिच ने मई में सरकार की रेटिंग बीबीबी-/स्थिर की पुष्टि की थी और हम वर्तमान में मार्च 2026 (वित्तीय वर्ष 2023 से 2025) तक तीन वर्षों में वास्तविक औसत जीडीपी वृद्धि दर 6.4 प्रतिशत सालाना होने का अनुमान लगाते हैं, जो भारत को सबसे तेजी से बढ़ने वाले देशों में रखता है। महामारी संबंधी जोखिमों में कमी के साथ-साथ पूंजी बफर भी मजबूत हुआ है। बैंकिंग सेक्टर का औसत सामान्य इक्विटी टियर 1 (सीईटी1) पूंजी अनुपात वित्त वर्ष 2023 तक बढ़कर 13.4 प्रतिशत हो गया, जो वित्त वर्ष 2018 में 10.4 प्रतिशत था।

फिच रेटिंग्स ने कहा कि यह आंशिक रूप से 2015 के बाद से सरकारी बैंकों को सरकार द्वारा प्रदान की गई लगभग 50 अरब डॉलर की संचयी ताज़ा इक्विटी को दर्शाता है। फिच के अनुमान के अनुसार, वित्त वर्ष 2022-23 में परिचालन लाभ जोखिम में फंसी पूंजी का लगभग 2.8 प्रतिशत रहा। इस प्रकार कमाई के मोर्चे पर भी पर्याप्त बफ़र है।

वित्त वर्ष 2019-20 में परिचालन लाभ जोखिम में फंसी पूंजी के 0.6 प्रतिशत से ज्यादा रहा।

भारत का ओई स्कोर अर्थव्यवस्था में मौजूद संरचनात्मक विविधता से लाभान्वित हो रहा है, जो विशिष्ट क्षेत्र-केंद्रित झटकों के प्रति बैंकों के जोखिम को कम करने में मदद करता है। अर्थव्यवस्था के बड़े आकार और भारत की अनुकूल जनसांख्यिकी से बैंकों को लाभदायक व्यवसाय उत्पन्न करने और जोखिम तथा राजस्व में विविधता लाने के अवसर मिलने चाहिए।

फिच ने कहा, हम आगे उम्मीद करते हैं कि वस्तु एवं सेवा कर और तेजी से डिजिटलीकरण (भुगतान प्रणालियों सहित) जैसी पहलों के माध्यम से बैंकों को एसएमई क्षेत्र के क्रमिक औपचारिकीकरण से लाभ होगा, जिससे बाजार के बड़े हिस्से में जोखिम के स्वीकार्य स्तर पर सेवाएं प्रदान करने की संभावनाओं में सुधार होगा। रेटिंग एजेंसी के अनुसार, भारतीय अधिकारियों ने दुनिया भर के कई अन्य लोगों की तरह महामारी के दौरान व्यापक सहनशीलता का परिचय दिया, जिससे बैंकों की संपत्ति की गुणवत्ता अस्पष्ट हो गई। इस बीच, अन्य संरचनात्मक मुद्दे बैंकिंग ओई में बाधा बने हुए हैं। फिच ने कहा कि भारत की लंबी कानूनी प्रक्रियाएं दिवालियापन और समाधान के लिए एक प्रभावी ढांचे के कार्यान्वयन में बड़ी बाधा बनी हुई हैं, और जुलाई 2021 में शुरू किए गए बैड बैंक ने अब तक कोई सार्थक भूमिका नहीं निभाई है। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी ने कहा कि भारतीय बैंक का ऋण पोर्टफोलियो वित्त वर्ष 2013 की तुलना में 15.4 प्रतिशत बढ़ गया है। विकास की क्षमता में सुधार, विशेष रूप से निजी क्षेत्र के बैंकों में, और मजबूत नॉमिनल जीडीपी बढ़त के बीच यह आंशिक रूप से महामारी के बाद रुकी हुई क्रेडिट मांग के कारण है।

खेल जगत

मैंने धोनी से बहुत कुछ सीखा : पथिराना

कोलंबो, 16 अगस्त (एजेंसियां)। श्रीलंका के युवा तेज़ गेंदबाज़ मथीशा पथिराना ने एक गेंदबाज के रूप में उनके विकास में भूमिका के लिये चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी की प्रशंसा की है। पथिराना ने इस साल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में चेन्नई के लिये पदार्पण किया और अपने पहले ही सीज़न में वह टीम के डेथ ओवर विशेषज्ञ गेंदबाज रहे। पथिराना ने चेन्नई में अपने अनुभव पर कहा, एक युवा खिलाड़ी के रूप में अगर कोई आपको इस तरह का आत्मविश्वास देता है तो यह आपके करियर को आगे बढ़ाता है। जब उस स्तर के खिलाड़ी ने मुझ पर विश्वास दिखाया तो मुझे विश्वास हुआ कि मैं उस पल में कुछ भी कर सकता हूं। पथिराना ने धोनी के साथ आईपीएल में बिताये गये समय पर कहा, मैंने धोनी से बहुत कुछ सीखा है। पहली चीज़ विनम्रता है और इसीलिए वह बहुत सफल हैं।

मेजबान ऑस्ट्रेलिया को हराकर फाइनल में इंग्लैंड

सिडनी, 16 अगस्त (एजेंसियां) इंग्लैंड ने फीफा महिला विश्व कप 2023 के सेमीफाइनल में बुधवार को मेज़बान ऑस्ट्रेलिया को 3-1 से हराकर पहली बार फाइनल का टिकट कटा लिया। स्टेडियम ऑस्ट्रेलिया पर इंग्लैंड का पहला गोल एला टून ने 36वें मिनट में किया। सैम कर ने 63वें मिनट में ऑस्ट्रेलिया के लिये बराबरी का गोल किया, लेकिन लौरेन हेम्प (71वां मिनट) और एलिसा रूसो (86वां मिनट) ने इंग्लैंड का दूसरा और तीसरा गोल जमाकर मेज़बान टीम का चैंपियन बनने का सपना तोड़ दिया। इंग्लैंड अब रविवार को होने वाले फाइनल में स्पेन का सामना करेगा, जबकि तीसरे स्थान के लिये ऑस्ट्रेलिया का मुकाबला स्वीडन से होगा।

पहली बार विश्व कप फाइनल में पहुंचने का सपना लेकर उतरीं दोनों टीमों ने मैच की आक्रामक शुरुआत की, हालांकि कुछ देर बाद ही इंग्लैंड ने अपने खिलाड़ियों के मज़बूत समन्वय से मैच पर दबदबा बना लिया। इंग्लैंड ने कई मौकों पर गोल करने का अंदेशा दिया, हालांकि ऑस्ट्रेलिया के डिफेंस ने विपक्षी टीम को खाता खोलने का मौका नहीं दिया। रूसो ने टून की सहायता से 19वें मिनट में गोलपोस्ट पर एक निशाना भी लगाया लेकिन उनका कोण सही न होने के कारण वह ऑस्ट्रेलियाई गोलकीपर को परेशान नहीं कर सकीं।

इंग्लैंड ने अंततः 36वें मिनट में बढ़त बनायी जब रूसो ने पेनल्टी बॉक्स में चौकसी दिखाते हुए टून को गेंद पास की। टून ने गेंद को गोलपोस्ट के शीर्ष कोने में खेला और ऑस्ट्रेलियाई गोलकीपर की पकड़ से बचकर इंग्लैंड को शुरुआती बढ़त दिला दी।

इंग्लैंड ने पहले हाफ में गेंद पर 67 प्रतिशत कब्ज़ा रखने के अलावा ऑस्ट्रेलिया की प्रतिभाशाली फॉरवर्ड सैम कर को भी खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया था। दूसरे हाफ में हालांकि कर ने एली कार्पेंटर और हेली रासो के साथ मिलकर मौके बनाना शुरू किये। ऑस्ट्रेलिया के लगातार प्रयासों का नतीजा उसे 63वें मिनट में मिला जब कर ने 30 गज़ की दूरी से सटीक निशाना लगाकर अपनी टीम के लिये स्कोर 1-1 से बराबर कर दिया।

कर के पास चार मिनट बाद एक और गोल जमाने का मौका था, हालांकि इस मौके पर वह इंग्लैंड के डिफेंस को नहीं भेद सकीं। दूसरी ओर, हेम्प ने मिली ब्राइट की लॉन्ग बॉल की सहायता से इंग्लैड का दूसरा गोल जमाकर ऑस्ट्रेलिया को फिर संकट में डाल दिया।

मेज़बान टीम ने मुकाबले में वापसी का प्रयास किया लेकिन रूसो ने निर्धारित समय समाप्त होने से सिर्फ चार मिनट पहले इंग्लैंड का तीसरा गोल जमाकर ताबूत में आखिरी कील ठोक दी। ऑस्ट्रेलिया ने अंतिम क्षणों में स्थानापन्न खिलाड़ी मैदान पर उतारकर स्कोर बराबर करने का हर संभव प्रयास किया लेकिन इंग्लैंड ने अपने सुसंगठित डिफेंस की बदौलत खामोश पड़े स्टेडियम ऑस्ट्रेलिया में मेज़बान टीम को हराकर फाइनल में प्रवेश किया।

इंग्लैंड की लूसी ब्रॉन्ज़ ने जीत के बाद कहा, यही एक चीज़ है जो मैं हमेशा से चाहती थी, विश्व कप के फ़ाइनल में होना। मुझे विश्वास नहीं हो रहा। हम सभी ने फाइनल में पहुंचने का सपना देखा है, परिवार और दोस्त फाइनल तक हमारे साथ रहे, उन सभी ने हम पर विश्वास किया और हमारा समर्थन करने के लिये यहां सभी का होना अविश्वसनीय है।

शीर्ष सात में तीन बाएं हाथ के बल्लेबाज होने चाहिए : शास्त्री

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। भारत के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने सुझाव दिया है कि भारत अपने लाइन-अप में विविधता लाने के लिए आगामी एशिया कप और एकदिवसीय विश्व कप के लिए अपने शीर्ष सात बल्लेबाजी स्थानों में तीन बाएं हाथ के बल्लेबाजों को शामिल करने पर विचार करे।

शास्त्री ने स्टार स्पोर्ट्स से बात करते हुए इशान किशन को विकेटकीपर के रूप में सुझाया, जो काफी समय से भारतीय वनडे टीम में शामिल हैं। इसके अलावा, प्रबंधन तिलक वर्मा या यशस्वी जायसवाल में से किसी एक युवा को शामिल करने पर भी विचार कर सकता है।

उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि आपके द्वारा बताए गए शीर्ष चार के अलावा, तीन अन्य क्रम हैं जहां दो बाएं हाथ के खिलाड़ियों को आना होगा। अब यह वह जगह है जहां चयनकर्ताओं की भूमिका आती है क्योंकि वे देख रहे हैं। वे जानते हैं कि कौन सा लड़का फॉर्म में है। शास्त्री ने कहा, तिलक वर्मा आकर्षक हैं, उन्हें अंदर लाएँ। अगर आपको लगता है कि जायसवाल आकर्षक हैं तो उन्हें लाएँ।

शास्त्री ने कहा, तो अगर आप पिछले छह से आठ महीनों से इशान किशन के साथ बने हुए हैं और वह विकेटकीपिंग करने जा रहा है, तो वह किसी भी स्थिति में आता है। लेकिन दो बाएं हाथ के खिलाड़ी लें। जड्डू सहित, शीर्ष सात में तीन बाएं हाथ के खिलाड़ी होने चाहिए। इशान किशन पिछले 15 महीने से कीपिंग कर रहे हैं, तो कहीं और क्यों जाएं? शास्त्री ने तिलक वर्मा की सराहना करते हुए कहा कि भारत आगामी मेगा आयोजनों के लिए मध्य क्रम में एक स्थान के लिए इस युवा खिलाड़ी पर विचार कर सकता है।

हालाँकि तिलक ने अभी तक एकदिवसीय क्रिकेट में भाग नहीं लिया है, लेकिन उनकी पहली टी20 श्रृंखला उल्लेखनीय थी, और उन्होंने अपने सधे हुए शॉट चयन और प्रभावशाली संयम के लिए शास्त्री और अन्य लोगों से प्रशंसा प्राप्त की। शास्त्री ने कहा, तिलक वर्मा से बहुत प्रभावित हूं। और मुझे बाएं हाथ का खिलाड़ी चाहिए। अगर मैं बाएं हाथ के खिलाड़ी की तलाश में हूं, तो मैं वास्तव में उसी दिशा में देखूंगा।

अगर विराट को चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करनी है, तो वह करेंगे

चौथे नंबर पर कोहली के प्रदर्शन का जिक्र करते हुए, जहां स्टार बल्लेबाज ने 55.2 की प्रभावशाली औसत से 1767 रन बनाए, शास्त्री ने बताया कि उनका इरादा शीर्ष चार स्थानों पर अनुकूलनशीलता सुनिश्चित करना था। अगर विराट को चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करनी है, तो वह टीम के हित में चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करेंगे। आप जानते हैं, कई बार मैंने इसके बारे में सोचा था। यहां तक कि पिछले दो विश्व कप में भी, जब मैं 2019 में कोच था, तो मैंने सोचा था कि मुझे एमएसके प्रसाद के साथ भी उस शीर्ष भारी क्रम को तोड़ने के लिए चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने के बारे में चर्चा करनी होगी। उन्होंने कहा, आप जानते हैं, क्योंकि अगर हम शीर्ष पर दो या तीन विकेट गंवा बैठे, तो हम चले गए और यह साबित हो गया। सिर्फ उस अनुभव के लिए... और अगर आप विराट कोहली के रिकॉर्ड को देखें, तो वह चौथे नंबर पर काफी अच्छे हैं। नंबर 4 की स्थिति की दुविधा भारतीय क्रिकेट में बार-बार आने वाली समस्या है, 2019 वनडे विश्व कप के दौरान भी उन्हें इसी चुनौती का सामना करना पड़ा था। भारत ने 2019 विश्व कप के अंत के बाद से वनडे में नंबर 4 स्थान पर 11 खिलाड़ियों को खिलाया है।

क्लब मैच में बल्लेबाजी करते दिखे पंत

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां)। इंडियन प्रीमियर लीग फ्रेंचाइजी दिल्ली कैपिटल्स की ओर से सोशल मीडिया पर एक दिल छू लेने वाले वीडियो साझा किया गया है, जिसमें विकेटकीपर ऋषभ पंत बेंगलुरु में एक क्लब मैच में बल्लेबाजी करते दिखाई दे रहे हैं। पिछले साल दिसंबर में एक भयानक दुर्घटना का शिकार होने के बाद राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी (एनसीए) में रिहैब प्रक्रिया से गुज़र रहे पंत दिल्ली कैपिटल्स के सह-मालिक जेएसडब्ल्यू फाउंडेशन द्वारा आयोजित स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने के लिये बेंगलुरु के पास एक मैदान में पहुंचे थे।

समारोह के दौरान पंत ने लोगों से खेलों का आनंद लेते रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा, एक बार जब आप बड़े हो जाते हैं, तो आप खेल से प्यार करना बंद कर देते हैं। इसका एक कारण यह है कि आपके ऊपर बहुत दबाव होता है, आप जीवन में सफल होना चाहते हैं और कुछ न कुछ करना चाहते हैं, लेकिन जीवन का आनंद लेना कभी नहीं छोड़ना चाहिये।

गौरतलब है कि गत दिसंबर में पंत की कार दिल्ली-देहरादून राजमार्ग पर एक सड़क डिवाइडर से टकरा गयी थी। इस दौरान कार डिवाइडर से टकराने के बाद आग की लपटों में घिर गई थी, लेकिन पंत ऐन वक्त पर अपनी मर्सिडीज से बाहर निकल गए थे।

इस साल फरवरी में डॉ. दिनशॉ पारदीवाला की देखरेख में पंत की मुंबई में सर्जरी हुई। डॉ. पारदीवाला ने पंत के दाहिने घुटने के तीन लिगामेंट का इलाज किया। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, पंत इंग्लैंड के विरुद्ध जनवरी 2024 में शुरू होने वाली टेस्ट श्रृंखला के ज़रिये अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में वापसी कर सकते हैं।

इमरान के समर्थन में उतरे वसीम, पीसीबी से वीडियो डिलीट करने को कहा

नई दिल्ली, 16 अगस्त (एजेंसियां) दिग्गज तेज़ गेंदबाज और कमेंटेटर वसीम अकरम ने पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) की पाकिस्तानी क्रिकेट के इतिहास से जुड़ी वीडियो में इमरान खान के नहीं होने पर अचंभा ज़ाहिर करते हुए कहा है कि पीसीबी को वीडियो डिलीट कर माफी मांगनी चाहिये। उल्लेखनीय है कि पीसीबी ने 14 अगस्त को पाकिस्तान के स्वतंत्रता दिवस पर एक वीडियो जारी किया था, जिसमें 1952 से लेकर 2022 टी20 विश्व कप तक पाकिस्तान क्रिकेट के इतिहास की झलकियां दिखाई गयी थीं। इस वीडियो में पाकिस्तान की 1992 विश्व कप की जीत की तस्वीरों को भी शामिल किया गया, हालांकि टीम के तत्कालीन कप्तान इमरान खान उनमें नज़र नहीं आये।

वसीम ने अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए बुधवार को एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, लंबी उड़ानों और घंटों की यात्रा के बाद श्रीलंका पहुंचकर मुझे अपने जीवन का सबसे

बड़ा झटका तब लगा जब मैंने पाकिस्तान क्रिकेट के इतिहास पर पीसीबी की छोटी क्लिप में महान इमरान खान को नहीं देखा। गौरतलब है कि पाकिस्तान के पूर्व कप्तान और प्रधानमंत्री इमरान को तोशखाना मामले में तीन साल की सज़ा हुई है और पांच साल के लिये चुनाव लड़ने से प्रतिबंधित कर दिया गया है। पीसीबी की कमान इस समय ज़का अशरफ़ के हाथों में है, जिन्हें इमरान के बाद प्रधानमंत्री बने शहबाज़ शरीफ़ ने नियुक्त किया है और वह पाकिस्तान पीपल्स पार्टी (पीपीपी) के सह-अध्यक्ष आसिफ़ ज़रदारी के खास भी हैं।

वसीम ने कहा, राजनीतिक मतभेद एक तरफ, लेकिन इमरान खान विश्व क्रिकेट के प्रतीक हैं और उन्होंने अपने समय में पाकिस्तानी क्रिकेट को एक मजबूत टीम के रूप में विकसित किया और हमें एक रास्ता दिया। पीसीबी को वीडियो हटा देना चाहिए और माफी मांगनी चाहिए। वसीम इमरान की अगुवाई में 1992 विश्व कप जीतने वाली पाकिस्तानी टीम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहे और उन्होंने टूर्नामेंट के 10 मैचों में 18.78 की औसत से 18 विकेट चटकाये थे। इंग्लैंड के खिलाफ खेले गये फाइनल में वसीम ने तीन विकेट लेने के अलावा 33 रन भी बनाये थे, जिसके लिये उन्हें मैन ऑफ द मैच चुना गया था।

सार संक्षेप

वहाब रियाज ने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा

लाहौर। पाकिस्तान के अनुभवी वामहस्त गेंदबाज़ वहाब रियाज़ ने बुधवार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने की घोषणा की। वहाब ने अपने 15 साल लंबे अंतरराष्ट्रीय करियर को विराम देते हुए एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर लिखा, एक अद्भुत सफर के बाद मैंने अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट से संन्यास लेने का फैसला किया है। पीसीबी, मेरे परिवार, कोच, मेंटर, टीम के साथियों, प्रशंसकों और मेरा समर्थन करने वाले सभी लोगों का बेहद धन्यवाद। वहाब ने न्यूज़ीलैंड के खिलाफ दो दिसंबर 2020 को खेले गये एक टी20 मैच में आखिरी बार पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व किया था। उन्होंने कहा कि संन्यास लेने का निर्णय पाकिस्तानी क्रिकेट की युवा प्रतिभाओं पर उनके अटूट विश्वास का प्रमाण है और अब वह दुनियाभर की फ्रेंचाइजी लीगों पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे। वहाब ने कहा, मैं अपने संन्यास के बारे में बीते दो वर्षों से बात कर रहा हूं कि 2023 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में मेरे संन्यास का समय होगा। मैं इस समय इस बात से पूरी तरह संतुष्ट हूं कि मैंने अपनी पूरी क्षमता के अनुसार अपने देश और राष्ट्रीय टीम की सेवा की। उन्होंने कहा, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पाकिस्तान का प्रतिनिधित्व करना सम्मान और विशेषाधिकार की बात रही है। इस अध्याय को ख़त्म करते हुए मैं फ्रेंचाइजी क्रिकेट के नये सफर की शुरुआत करने के लिये रोमांचित हूं। मुझे उम्मीद है कि मैं दुनिया की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं से मुकाबला करते हुए दर्शकों का मनोरंजन और उन्हें प्रेरित कर पाऊंगा। वहाब ने पाकिस्तान के लिये 27 टेस्ट खेलकर 34.50 की औसत से 83 विकेट लिये। इसके अलावा उन्होंने पाकिस्तान के लिये 91 एकदिवसीय मैच (120 विकेट) और 36 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच (34 विकेट) भी खेले।

अल्काराज़ ने दर्ज की साल की 50वीं जीत

मेसन। स्पेन के कार्लोस अल्काराज़ ने बुधवार को सिनसिनाटी ओपन 2023 के दूसरे चरण में ऑस्ट्रेलिया के जॉर्डन थॉम्पसन को हराकर इस साल की अपनी 50वीं जीत दर्ज की। अल्काराज़ ने मंगलवार को शुरू हुए वर्षाबाधित मैच में अपने ऑस्ट्रेलियाई प्रतिद्वंदी को 7-5, 4-6, 6-3 से हराया, हालांकि उनकी अर्द्धशतकीय जीत की खुशी उनके औसत दर्जे के प्रदर्शन के नीचे छुप गयी। शीर्ष वरीयता प्राप्त अल्काराज़ विश्व के नंबर 55 खिलाड़ी थॉम्पसन के खिलाफ लयविहीन नज़र आये। ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी 5-2 की बढ़त बनाने के बाद पहला सेट हार गये, लेकिन अल्काराज़ की अप्रत्याशित गलतियों की सहायता से दूसरा सेट 6-4 से जीतने में कामयाब रहे। वर्षाबाधित मैच में अल्काराज़ ने अंततः तीसरा सेट शुरू होने से पहले अपनी लय हासिल की और सिर्फ आधे घंटे में सेट जीतकर जीत अपने नाम की।

एशियन हॉकी 5 वर्ल्ड कप क्वालीफायर में मनदीप मोर भारत की पुरुष टीम के कप्तान

■ सत्येन्द्र पाल सिंह

नई दिल्ली, 16 अगस्त (देशबन्धु)। ड्रैग फ्लिकर मनदीप मोर आगामी एशियन हॉकी 5 वर्ल्ड कप क्वालीफायर 2023 में भारतीय पुरुष हॉकी टीम तथा मिडफील्डर नवजोत कौर में भारतीय महिला हॉकी टीम की कप्तान होंगे। एशियन हॉकी 5 वर्ल्ड कप क्वालीफायर 2023 29 अगस्त से 3 सितंबर तक तथा महिला क्वालीफायर में 25 से 28 अगस्त तक ओमान में होगा। भारत की पुरुष और महिला हॉकी टीमों की घोषणा हॉकी इंडिया ने यहां की। एशियन हॉकी 5 वर्ल्ड कप क्वालीफायर 2023 के लिए भारतीय पुरुष टीम के कोच जनार्दन सीबी ने कहा कि हमारी टीम एकदम संतुलित है। हमारी टीम में बहुत प्रतिभा है। हमारी टीम हर मैच में अपना सर्वश्रेष्ठ देने को बेताब है। हमारी टीम एशियन हॉकी 5 में बढ़िया प्रदर्शन कर हॉकी 5 विश्व कप के लिए क्वॉलिफाई करने को प्रतिबद्ध है। वहीं एशियन हॉकी 5 वर्ल्ड कप क्वॉलिफायर 2023 के लिए भारतीय महिला टीम की कोच सौंदर्या येंडला ने कहा कि मुझे इस टूर्नामेंट में रोमांचक मुकाबले की उम्मीद है। हमारी खिलाड़ी इस टूर्नामेंट के लिए पूरी तरह तैयार हैं। हमारी खिलाड़ी विश्वास से भरी हैं। हमारी टीम में खासी अनुभवी खिलाड़ियों के साथ कई नौजवान खिलाड़ी भी हैं। मुझे पूरी उम्मीद है कि हमारी टीम इस टूर्नामेंट में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में कामयाब रहेंगी।

एशियन हॉकी 5 वर्ल्ड कप क्वालीफायर 2023 के लिए भारतीय पुरुष टीम

गोलरक्षक : सूरज करकेरा। **रक्षापंक्ति :** मनदीप मोर (कप्तान), जुगराज सिंह, डिप्सन टिर्की, मंजीत। **मध्य पंक्ति :** मनिंदर सिंह, मोहम्मद रहील मुदीन (उपकप्तान)। **अग्रिम पंक्ति :** पवन राजभर, गुरजोत सिंह। स्टैंड बाय: प्रशांत चौहान, सुखविंदर, आदित्य सिंह, अरुण साहनी। **कोच :** जनार्दन सीबी।

एशियन हॉकी 5 वर्ल्ड कप क्वालीफायर 2023 के लिए भारतीय महिला टीम

गोलरक्षक : बांसुरी सोलंकी। **रक्षापंक्ति :** अक्षता अबासो ढेकले, महिमा चौधरी। सोनिया देवी क्षेत्रीमायुम। **मध्य पंक्ति :** नवजोत कौर(कप्तान), अजमीना कुजूर। **अग्रिम पंक्ति :** मरियाना कुजूर, ज्योति (उपकप्तान), दीपि मोनिका टोपो। **स्टैंडबाय :** कु रमापू राम्या, निशी यादव, प्रियंका यादव, रितिन्या साहू।

घुटने की चोट के कारण वनडे कप से बाहर हुए शॉ

नॉर्थम्पटन, 16 अगस्त (एजेंसियां)। युवा भारतीय बल्लेबाज पृथ्वी शॉ घुटने की चोट के कारण इंग्लैंड में जारी रॉयल लंदन वनडे कप के बाकी बचे मैचों से बाहर हो गये हैं। नॉर्थम्पटनशर के मुख्य कोच जॉन सैडलर ने एक बयान में कहा, अपने छोटे से कार्यकाल में पृथ्वी ने इस क्लब पर बहुत गहरा प्रभाव डाला है। यह बहुत शर्म की बात है कि वह इस प्रतियोगिता के शेष भाग के लिये हमारे साथ नहीं रहेंगे। वह एक अत्यंत विनम्र युवक है, वह बहुत सम्मानित है और नॉर्थम्पटनशर का प्रतिनिधित्व करने के अवसर के लिये बहुत आभारी रहा है। उन्होंने कहा, मैदान पर उनके प्रदर्शन के साथ-साथ हमारे ड्रेसिंग रूम में भी उनका बहुत बड़ा प्रभाव था। कोई भी उनसे ज्यादा मैच जीतने की ललक नहीं रखता था और उन्होंने ऐसा करने में योगदान दिया है। हम उनके स्वस्थ होने की कामना करते हैं और उम्मीद करते हैं कि हम उन्हें जल्द ही फिर से रन बनाते हुए देखेंगे।

शॉ ने पिछले हफ्ते नॉर्थम्पटनशर के लिये खेले गये तीसरे मैच में 153 गेंदों में रिकॉर्डतोड़ 244 रन बनाकर अपनी टीम को समरसेट पर 87 रन से जीत दिलाई थी। इसके बाद उन्होंने डरहम के खिलाफ शानदार शतक जड़ा था। वेस्टइंडीज और आयरलैंड के खिलाफ सफेद गेंद की श्रृंखला के अलावा चयनकर्ताओं ने एशियाई खेलों के लिये चुनी गयी टीम में भी शॉ की अनदेखी की थी।

इंग्लैंड वनडे टीम में हुई बेन स्टोक्स की वापसी

लंदन, 16 अगस्त (एजेंसियां)। इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) ने न्यूज़ीलैंड के विरुद्ध होने वाली चार मैचों की एकदिवसीय श्रृंखला और भारत में अक्टूबर-नवंबर में होने वाले एकदिवसीय विश्व कप के लिये चयनित टीम में बेन स्टोक्स को शामिल किया है। इंग्लैंड के मुख्य चयनकर्ता ल्यूक राइट ने बुधवार को इसकी घोषणा करते हुए कहा, बेन स्टोक्स की मैच-जिताऊ क्षमता और उनकी नेतृत्व की खूबियों के साथ उनकी वापसी सिर्फ हमारी मज़बूत टीम में सुधार ही करती है। मुझे यकीन है कि सभी प्रशंसक उन्हें दोबारा इंग्लैंड की एकदिवसीय शर्ट पहने देख खुश होंगे।

उन्होंने कहा, अगर बड़े मौकों के लिये कोई खिलाड़ी है, तो वह बेन स्टोक्स है। इंग्लैंड के लिये उनकी वापसी से ज़्यादा बेहतर क्या होगा। वह बड़े मौकों को पसंद करते हैं। उनका लौटना हमारे खिलाड़ियों को संबल देगा। उल्लेखनीय है कि स्टोक्स ने जुलाई 2022 में कार्यभार प्रबंधन का हवाला देते हुए एकदिवसीय क्रिकेट से संन्यास ले लिया था, हालांकि इंग्लैंड के टीम प्रबंधन ने हाल ही में उन्हें विश्व कप के लिये भारत ले जाने की मंशा ज़ाहिर की थी। द टेलिग्राफ की ओर से सोमवार को प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया था कि अगर गत विश्व चैंपियन इंग्लैंड के सीमित ओवर कप्तान जॉस बटलर पूछते हैं तो स्टोक्स वनडे विश्व कप 2023 के लिये संन्यास वापस लेने के लिये तैयार हैं।

अगर बड़े मौकों के लिये कोई खिलाड़ी है, तो वह बेन स्टोक्स है। इंग्लैंड के लिये उनकी वापसी से ज़्यादा बेहतर क्या होगा। वह बड़े मौकों को पसंद करते हैं। उनका लौटना हमारे खिलाड़ियों को संबल देगा : ल्यूक राइट, मुख्य चयनकर्ता ईसीबी

स्टोक्स की वापसी के साथ युवा बल्लेबाज हैरी ब्रूक इंग्लैंड की एकदिवसीय टीम से बाहर हो गये हैं। ईसीबी ने कहा कि सब कुछ सही रहने पर न्यूज़ीलैंड सीरीज के लिये चुनी गयी टीम ही विश्व कप खेलने भारत आयेगी। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के नियमों के अनुसार, क्रिकेट बोर्ड पांच सितंबर तक विश्व कप के लिये अपनी टीमों की घोषणा कर सकते हैं, जबकि 28 सितंबर तक उन टीमों में बदलाव किया जा सकता है।

एकदिवसीय विश्व कप 2023 की शुरुआत पांच अक्टूबर को अहमदाबाद के नरेन्द्र मोदी स्टेडियम पर इंग्लैंड और न्यूज़ीलैंड के बीच मुकाबले के साथ होगी। विश्व कप 2019 का फाइनल भी इन्हीं दो टीमों के बीच खेला गया था जहां स्टोक्स ने 84 रन की मैच-जिताऊ नाबाद पारी खेलकर अपनी टीम को विश्व चैंपियन बनाया था।

इस बीच, इंग्लैंड ने न्यूजीलैंड के विरुद्ध चार मैचों की टी20 सीरीज के लिये भी टीम की घोषणा की। ईसीबी ने टीम में जॉश टंग, गस एट्किंसन और जॉन टर्नर को शामिल किया है, जो इस श्रृंखला में इंग्लैंड के लिये टी20 पदार्पण कर सकते हैं। इंग्लैंड और न्यूजीलैंड के बीच टी20 सीरीज 30 अगस्त को, जबकि वनडे सीरीज आठ सितंबर को शुरू होगी।

इंग्लैंड वनडे टीम : जॉस बटलर (कप्तान), मोईन अली, गस एटकिंसन, जॉनी बेयरस्टो, सैम करन, लायम लिविंगस्टोन, डेविड मलान, आदिल राशिद, जो रूट, जेसन रॉय, बेन स्टोक्स, रीस टोपली, डेविड विली, मार्क वुड, क्रिस वोक्स।

इंग्लैंड टी20 टीम : जॉस बटलर (कप्तान) रेहान अहमद, मोईन अली, गस एटकिंसन, जॉनी बेयरस्टो, हैरी ब्रूक, सैम करन, बेन डकेट, विल जैक्स, लायम लिविंगस्टोन, डेविड मालन, आदिल राशिद, जॉश टोंग, जॉन टर्नर, ल्यूक वुड।